



न्यूज डायरी

गांडेय उपचुनाव : भाजपा ने दिलीप वर्मा को उतरा रांची। भाजपा के राष्ट्रीय चुनाव समिति ने झारखंड एवं राजस्थान में होने वाले आगामी विधानसभा उप-चुनाव 2024 के लिए अपने प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। पार्टी ने गांडेय से दिलीप कुमार वर्मा को अपना उम्मीदवार बनाया है। घोषणा होने के बाद दिलीप कुमार वर्मा ने अपनी जीत का दावा किया है। झामुमो नेता सरफराज अहमद के इस्तीफा से खाली गांडेय सीट पर उपचुनाव हो रहा है। इस सीट से पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन झामुमो की तरफ से उम्मीदवार तय मानी जा रही है।

कार से 22 लाख बरामद आइटी को दी गयी सूचना लातेहार। पुलिस ने अंतर जिला चेक नाका पर वाहन चेकिंग अभियान में एक कार से लगभग 21 लाख 95 हजार रुपए नगद बरामद किया है। इनकम टैक्स विभाग को भी इसकी सूचना दी गयी है। एसपी अंजनी अंजन के निर्देश पर वाहनों की जांच की जा रही है। शुक्रवार को बरियातू थाना के पास लातेहार-चतरा बॉर्डर पर चेकिंग में काले रंग की एक कार से यह राशि जप्त की गयी।

शिवराज पाटिल की पुत्रवधू भाजपा में नयी दिल्ली। लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष और कांग्रेस के कद्दावर नेता शिवराज पाटिल की पुत्रवधू अर्चना पाटिल चाकरकर शनिवार को भाजपा में शामिल होगी। पार्टी के पदाधिकारियों के अनुसार डॉ. अर्चना ने शुक्रवार को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेद्र फडणवीस से मुलाकात की। शिवराज पाटिल यूपीए सरकार में वर्ष 2004 से 2008 के बीच केंद्रीय गृह मंत्री थे।



गिरिडीह से चंद्रप्रकाश चौधरी के नाम पर मुहर



आजसू संसदीय बोर्ड की घोषणा, सभी सीटें जीतेंगे

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। 2024 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह संसदीय सीट से आजसू ने एक बार फिर चंद्रप्रकाश चौधरी को मैदान में उतारा है। शुक्रवार को संसदीय बोर्ड की बैठक में उनके नाम पर सहमति प्रदान की गयी। भाजपा ने गठबंधन के तहत गिरिडीह की सीट आजसू के लिए छोड़ी है। इससे पहले 2019 के चुनाव में चंद्रप्रकाश चौधरी ने गिरिडीह में चुनाव जीता था। महागठबंधन की ओर से अभी तक इस सीट के प्रत्याशी का चयन नहीं कर सका है।

एनडीए सभी 14 सीटें जीतेगा : सुदेश महतो

संसदीय बोर्ड की बैठक के बाद आजसू सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो ने कहा कि चंद्र प्रकाश चौधरी ने जनता की सेवा के साथ गिरिडीह संसदीय क्षेत्र का विकास किया है। विकास का एजेंडा लेकर हम फिर जनता के बीच जायेंगे और निःसंदेह जनता फिर एक बार हमें मौका देगी। उन्होंने दावा किया झारखंड में एनडीए सभी 14 सीटें जीतकर इस बार 400 पार का

मोदी का लक्ष्य पूरा करेंगे : चौधरी

प्रत्याशी घोषित किये जाने के बाद चंद्र प्रकाश चौधरी ने पार्टी के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा पीएम मोदी के नेतृत्व में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए हमने काम किया है। मोदी जी के विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए विकसित गिरिडीह अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। गिरिडीह के मतदाता चुनाव में एनडीए को भारी मतों से जितकर 400+ के लक्ष्य को मजबूती देने का काम करेंगे। बैठक में चन्द्रप्रकाश चौधरी, रामचंद्र सहिस, लम्बोदर महतो, डोमन सिंह मुण्डा, उमाकांत रजक, कुशावाहा शिवपूजन मेहता, डा. देवशरण भगत, हसन अंसारी, राजेंद्र मेहता, स्वप्न सिंहदेव, डॉ. मुकुंद चंद्र मेहता, राधेश्याम गोस्वामी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

लक्ष्य पूरा करेंगे। उन्होंने कहा कि एनडीए का उद्देश्य राष्ट्र एवं राज्य के व्यापक हित में काम करना है, जबकि इंडी गठबंधन नेतृत्व विहीन है। इंडी के पास देशहित में कोई एजेंडा नहीं है। चुनावों में जनता उन्हें सिरे से नकारने वाली है।

बिहार में राजद - 26 कांग्रेस - 9 लेफ्ट - 5 सीटों पर लड़ेगा चुनाव

खबर मन्त्र व्यूरो

पटना, नयी दिल्ली। लोकसभा चुनाव को लेकर महागठबंधन में सीट शेयरिंग पर सहमति बन गयी। राजद को 26 कांग्रेस को 9 और वाम दल को 5 सीटें दी गयी हैं। राजद नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी ने इसका औपचारिक ऐलान कर दिया। समझौते के मुताबिक राजद को झारखंड की दो सीटें, पलामू और चतरा दी गयी है। तय फार्मूले अनुसार कांग्रेस के खाते में 9 सीटें कटिहार, किशनगंज, पटना साहिब, सासाराम, भागलपुर, बेतिया, मुजफ्फरपुर, महाराजगंज और समस्तीपुर सीट गयी है। कांग्रेस के हाथ से पूर्णिया की सीट निकल गयी है। इसी सीट को ले कर पप्पू यादव ने अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय किया था।

राजद के खाते में गयी सीटें

औरंगाबाद, गया, जमुई, नवादा, सारण, पाटलिपुत्र, बक्सर, उजियारपुर, जहानाबाद, दरभंगा, बांका, अररिया, मुंगेर, सीतामढ़ी, झंझारपुर, मधुबनी, सिवान, शिवहर, वैशाली, हाजीपुर, सुपौल, वाल्मिकीनगर, पूर्वी चंपारण, पूर्णिया, मधेपुरा और गोपालगंज। इसके साथ ही झारखंड की पलामू और चतरा सीट भी राजद के खाते में गयी है।

वाम दलों को पांच सीटें

भाकपा माले- आरा, नालंदा,

राजद को झारखंड की पलामू और चतरा सीटें

झारखंड में लालू का एमवाई गेम प्लान

वहीं राजद सुप्रीमो लालू यादव ने लोकसभा चुनाव में झारखंड में खाता खोलने के लिए खास प्लान तैयार किया है। प्लान के मुताबिक अपने परंपरागत वोटर मुस्लिम-यादव के साथ-साथ एक खास वर्ग को साधने की कोशिश कर रहे हैं। इसी के तहत उन्होंने पलामू सीट से भाजपा के दो बार के सांसद रहे पूर्व डीजीपी वीडी राम के खिलाफ महिला प्रत्याशी ममता भुइयां को खड़ा किया है। राजद पलामू लोकसभा को परंपरागत मानता है और 2005 से लगातार चुनाव लड़ रहा है। लालू ने सीट शेयरिंग की घोषणा से पहले ही प्रत्याशी की घोषणा कर दी थी। ममता भुइयां मूल रूप से पलामू के सदर थाना क्षेत्र के सिंगरा की रहने वाली हैं। ममता के बड़े भाई भी पलामू के पाटन छतरपुर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ चुके हैं। ममता पहले भाजपा से चुनाव लड़ना चाहती थी लेकिन टिकट नहीं मिलने पर उन्होंने राजद का दामन थाम लिया। पलामू सीट अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व है। इस इलाके में एमवाई समीकरण के साथ-साथ एक खास जाति वर्ग का वोट पांच लाख के करीब है। यादवों की जनसंख्या तकरीबन 13 कही जाती है, वहीं मुस्लिम वर्ग के 21 प्रतिशत से अधिक वोटर हैं।

4 को पूर्णिया से पर्चा भरेंगे पप्पू यादव, कहा जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहा...

खबर मन्त्र व्यूरो

पटना। भले ही महागठबंधन में पूर्णिया लोकसभा सीट कांग्रेस के खाते में नयी गयी, पर पप्पू यादव ने पूर्णिया सीट पर अपना दावा नहीं छोड़ा है। शुक्रवार को पप्पू यादव ने ऐलान कर दिया कि वह चार को पूर्णिया सीट से ही नामांकन करेंगे। वह भी कांग्रेस के संबल पर। इसके साथ ही उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने पोस्ट में कहा- जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहा। बता दें कि मधेपुरा और सुपौल सीट से राजद ने सीट शेयरिंग से पहले ही प्रत्याशियों पार्टी संबल दे दिया है। कांग्रेस के पाले में 9 सीटें लगी हैं जिसपर पप्पू यादव को कांग्रेस उम्मीदवार बना सकती है, लेकिन जिस तरह से पप्पू यादव पोस्ट कर रहे हैं उससे लगता है कि वो पूर्णिया से कम में मानने वाले नहीं हैं।

कांग्रेस का झंडा लहरावेंगे

पप्पू यादव ने कहा "हमारा संकल्प राहुल गांधी को पीएम बनाने का है। वो अंतिम सांस तक

पप्पू की घोषणा पर बोले तेजस्वी यादव

पूर्णिया लोकसभा सीट को लेकर महागठबंधन में घमासान मचा हुआ है। वहीं, इस सीट को लेकर कांग्रेस नेता पप्पू यादव के ऐलान पर शुक्रवार को तेजस्वी यादव ने प्रतिक्रिया दी। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने शुक्रवार को इस मुद्दे पर कहा कि यह हमलों का विषय नहीं है। हमलों की पार्टी का गठबंधन किसी व्यक्ति के साथ नहीं, बल्कि दल के साथ हुआ है। कांग्रेस से तो बहुत पहले से गठबंधन है। इस मुद्दे पर ज्यादा कुछ टीका टिप्पणी नहीं करना है। उन्होंने कहा, हम लोग मजबूती के साथ चुनाव लड़ेंगे। बिहार चौकाने वाले परिणाम देगा।



मुख्तार की मौत मामले की न्यायिक जांच होगी

बांदा। यूपी के मऊ सदर विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक रहे माफिया डान मुख्तार अंसारी की मौत मामले की न्यायिक जांच होगी। बांदा में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने शुक्रवार को माफिया सरगना मुख्तार अंसारी की मृत्यु के न्यायिक जांच के आदेश दिये हैं। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट भगवान दास गुप्ता ने अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (एमपी/ एमएलए कोर्ट) गरिमा सिंह को जांच अधिकारी नामित करते हुए जांच रिपोर्ट एक माह के अंदर प्रेषित करने का आदेश दिया। बांदा जेल में बंद मुख्तार अंसारी की मौत के बाद शव के पोस्टमार्टम की प्रक्रिया शुक्रवार शाम तक पूरी हो गयी। इसके बाद बेटा उमर अंसारी और बहू निकहत शव लेकर गाजीपुर के लिए चले गये। शनिवार सुबह नमाज के बाद उनके पैतृक गांव यूसूपपुर मोहम्मदाबाद में स्थित पुस्तैनी कब्रिस्तान काली बाग में 'सुपुदे' खाक किया गयेगा। इसकी तैयारियां कर ली गयी है। न्यायिक जांच के आदेश की प्रतिलिपि जिला न्यायाधीश, जिला मजिस्ट्रेट को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई के लिये भेजी गयी। साथ ही जिला कारागार अधीक्षक को 63 वर्षीय मुख्तार अंसारी की मृत्यु/ इलाज से संबंधित सभी प्रपत्र और अन्य जो भी प्रलेख जांच से संबंधित तो हो जांच अधिकारी को तीन दिन के अंदर उपलब्ध कराने के भी आदेश दिये गये। पोस्टमार्टम के बाद शुक्रवार शाम मुख्तार अंसारी का शव ले कर बेटा उमर अंसारी और बहू निकहत एंबुलेंस से शव लेकर गाजीपुर निकले। बांदा से गाजीपुर की दूरी 389 किमी है। (शेष पेज 11 पर)

झारखंड का पारा 40 डिग्री पार, आज-कल बारिश संभव

रांची। मार्च के अंतिम सप्ताह में झारखंड का पारा 40 डिग्री पार कर चुका है। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार, शुक्रवार को डाल्टनगंज और जमशेदपुर में अधिकतम तापमान 40 डिग्री पहुंच गया। वहीं राजधानी रांची में अधिकतम तापमान 35.5 डिग्री सेल्सियस रहा। चिलचिलाती गर्मी का एहसास हुआ। धूप के साथ उमस ने भी लोगों को परेशान किया। धनबाद का तापमान भी 38 डिग्री को पार कर गया है। मार्च में ही लोगों को गर्मी का सितम झेलना पड़ रहा है। हालांकि दोपहर में गर्म हवाएं थोड़ी राहत दे रही हैं। मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार और रविवार को रांची समेत झारखंड के 21 जिलों में बारिश की संभावना है। पश्चिमी, दक्षिणी और मध्य भागों में कहीं-कहीं गर्जन के साथ वज्रपात और हल्की वर्षा होने की संभावना है। राज्य में अगले दो दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में 2 से 3 डिग्री की वृद्धि संभव है। वहीं पिछले 24 घंटे में राज्य में एक-दो स्थानों पर हल्की वर्षा हुई। सबसे अधिक वर्षा 2.5 एमएम बरही में दर्ज की गयी। वहीं सबसे कम तापमान 18.3 डिग्री सेल्सियस लोहरदगा का दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार, एक अप्रैल से बादल पूरी तरह छंट जायेंगे और मौसम शुष्क और साफ रहेगा। इससे तीखी धूप की गर्मी तापमान को बढ़ायेगी। **समुद्र के ऊपर बना चक्रवात**
मौसम विभाग ने बताया है कि दक्षिण-पश्चिम एमपी और उससे सटे इलाकों में चक्रवातीय क्षेत्र बना हुआ है। इसके अलावा ओड़िशा और उससे सटे इलाकों में भी समुद्र के ऊपर एक साइक्लोनिक सकुलेंशन का क्षेत्र बना हुआ है, जिसका असर झारखंड में भी देखा जायेगा। इसके असर से कम से कम दो दिन तक कई जगहों पर वर्षा होने के आसार हैं।

कांग्रेस को मिला 1800 करोड़ का आयकर नोटिस यह कर आतंकवाद, भाजपा इसी बल पर जीतना चाहती है : खड़गे

एजेंसी
नयी दिल्ली। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले आयकर विभाग ने पांच अलग-अलग विधायकों के टैक्स रिटर्न में कथित विसंगतियों के लिए कांग्रेस को 1823.08 करोड़ रुपये के भुगतान का नोटिस जारी किया है। विभाग ने कांग्रेस पार्टी को वित्त वर्ष 2017-18 से लेकर 2020-21 के लिए लिये नया नोटिस भेजा है। वहीं इस पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कांग्रेस ने कहा कि भाजपा कर आतंकवाद से चुनाव जीतना चाहती है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि चुनाव के

नोटिस ने लोकसभा चुनाव के बीच कांग्रेस की परेशानी और बढ़ा दी है। कांग्रेस ने दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर जुर्माने की दोबारा जांच की मांग की थी, लेकिन अदालत ने कांग्रेस की याचिका खारिज कर दी। इसके बाद पार्टी को नोटिस भेजा गया है। अब कांग्रेस तीन अन्य वर्षों की आय की जांच पूरी होने का इंतजार कर रही है। यह जांच रविवार तक पूरी होगी। कांग्रेस के वकील और राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने कहा कि आयकर विभाग की कार्रवाई गैर जरूरी और लोकतंत्र के खिलाफ है। आयकर विभाग

पहले ही कांग्रेस पार्टी के दिल्ली में स्थित बैंक खातों से 135 करोड़ रुपए वसूल चुका है। **कांग्रेस ने केंद्र पर साधा निशाना**
कांग्रेस ने भाजपा पर कर आतंकवाद से लोकसभा चुनाव जीतने का प्रयास करने का आरोप लगाते हुए शुक्रवार को कहा कि इसके विरुद्ध न्यायपालिका में अपील की जायेगी और सड़क पर संघर्ष होगा। कांग्रेस ने कहा कि आयकर विभाग ने भाजपा भाजपा को लेकर आंखें बंद कर ली हैं। उस पर 4600 करोड़ रुपये का जुर्माना बनता है। (शेष पेज 11 पर)

आरबीआई रिटेल डायरेक्ट स्कीम

<https://rbiretaildirect.org.in> पर जाएं

सरकारी प्रतिभूतियों में सीधे निवेश करें

जिसमें शामिल हैं

- खजाना बिल
- सॉवरेन स्वर्ण बॉण्ड
- अस्थिर दर बचत बॉण्ड, 2020

- शून्य ब्रोकरेज और अन्य कोई शुल्क नहीं
- भुगतान का आसान और सुविधाजनक तरीका

आरबीआई कहता है...

जानकर बनिए, सतर्क रहिए!

अधिक जानकारी के लिए 1800-267-7955 या +91-22-61546335 पर कॉल करें: सुबह 10 बजे - शाम 6 बजे (सोमवार-शनिवार)

हमें यहां लिखें: support@rbiretaildirect.org.in



वीसी के जरिये राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स का रिक्रेशर प्रशिक्षण सम्पन्न

ऐप और पोर्टल के उपयोग से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव प्रबंधन हुआ आसान व सरल: नेहा अरोड़ा

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर झारखंड में आईटी से संबंधित स्टेट लेवल मास्टर ट्रेनर को शुरूवार को रिक्रेशर प्रशिक्षण दिया गया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के कार्यालय स्थित सभागार से ट्रेनर्स को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी ऐप एवं पोर्टल से संबंधित ऑनलाइन प्रशिक्षण वीडियो कांन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिया गया। मौके पर अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नेहा अरोड़ा ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी ऐप तथा पोर्टल से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन में सुविधा होगी।

मतदाता एवं अभ्यर्थी दोनों को फायदा होगा

उन्होंने कहा कि तकनीक के माध्यम से मतदाता को लक्षित करने एवं शहरी मतदाताओं को इसकी जानकारी देते हुए उनतक पहुंच बनाते हुए मतदान के लिए जागरूक किया जा सकता है। ऐप के माध्यम से घर बैठे निर्वाचक सूची में अपना नाम शामिल किए

जाने से लेकर अपने मतदान केंद्र को जानने, चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने जैसी सुविधाएं प्राप्त की जा सकती है। चैटबोर्ड के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर भी प्राप्त हो जाता है।

नेशनल लेवल मास्टर ट्रेनर्स सैयद नासीर जमील द्वारा सभी को ऐप एवं पोर्टल की जानकारी देते हुए उसके महत्व एवं संचालन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने वोटर सर्विस पोर्टल, एनजीएसपी पोर्टल, एनकोर, सी-विजिल ऐप, ईआरओ नेट, सुविधा ऐप एवं पोर्टल, परमिशन, कैडिडेट एफिडेवित मैनेजमेंट, वोटर टर्न आउट आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। आज के प्रशिक्षण के उपरांत प्रशिक्षित स्टेट लेवल मास्टर ट्रेनर्स अपने लोकसभा क्षेत्र के संबंधित कर्मियों को भारत निर्वाचन आयोग के एप्लीकेशन एवं पोर्टल का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

उक्त प्रशिक्षण सत्र में धनबाद, गिरिडीह, रांची, पलामू, साहेबगंज, हजारीबाग, सरायकेला, गुमला, बोकारो, पूर्वी सिंहभूम के स्टेट लेवल मास्टर ट्रेनर उपस्थित थे।

मतदान केंद्रों में सुविधाएं बढ़ायें : नेहा अरोड़ा

अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नेहा अरोड़ा ने रांची के शिवपुरी क्षेत्र स्थित विभिन्न मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी नेहा अरोड़ा ने रांची के शिवपुरी क्षेत्र स्थित विभिन्न मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर शुद्ध पेयजल, बिजली, शौचालय, सैप सहित दिव्यांग एवं वरिष्ठ मतदाताओं के लिये उपलब्ध न्यूनतम सुविधाओं का आकलन किया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर मतदाताओं के लिए चुनावी प्रक्रिया को सुगम बनाने के निमित्त उपलब्ध कराई जाने वाली विभिन्न सुविधाओं की कर्मियों को शीघ्र दूर करने का निर्देश दिया।

उन्होंने शिवपुरी क्षेत्र के कई मतदान केंद्रों पर जाकर वहां के बीएलओ से वृथ् लेवल अवेयरनेस ग्रुप की सूची का



अवलोकन किया। उन्होंने बीएलओ को नागरिकों की जानकारी के अभाव को दूर करने, बीएलओ द्वारा नगर निगम के कर्मों को वृथ् लेवल अवेयरनेस ग्रुप में शामिल करने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी बीएलओ को वृथ् लेवल अवेयरनेस ग्रुप एवं वॉलंटियर्स चयनित करने में भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों का अनुपालन करने को कहा। उन्होंने राजकीय मध्य विद्यालय नवीन आरक्षी केंद्र शिवपुरी के भौतिक निरीक्षण के क्रम में शौचालय को

सुचारू रूप से क्रियाशील कराने का निर्देश दिया गया। ट्रैफिक पुलिस स्टेशन एवं पुलिस लाईन के लिए संचालित स्वास्थ्य केंद्र के कारण विद्यालय परिसर में मतदाताओं के लिये पर्याप्त स्थान नहीं है। इसके लिये उन्होंने मतदाताओं की असुविधाओं को शीघ्र दूर करने के लिये संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया। मतदान केंद्रों के भौतिक निरीक्षण के क्रम में निर्वाचन कार्य से जुड़े रांची जिले के पदाधिकारी उपस्थित थे।

सत्ताधारी गठबंधन के उम्मीदवारों की घोषणा नहीं होने पर भाजपा का तंज

महागठबंधन के पास उम्मीदवारों की हो गयी कमी : प्रतुल शाहदेव

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने महागठबंधन के झारखंड में सिर्फ तीन उम्मीदवारों की घोषणा पर तंज करते हुये कहा है कि उसके पास उम्मीदवारों का टोटा है। कहा कि महागठबंधन के नेता डब्लूती नाव की सवारी से बचते दिख रहे हैं, इसलिये अभी तक सिर्फ तीन नाम की घोषणा हुई। उन्होंने कहा कि इसके उलट एनडी गठबंधन से अब तक सारे उम्मीदवारों की घोषणा हो चुकी है और सब प्रचार कर रहे हैं। 11 उम्मीदवारों की घोषणा तो एक माह



पूर्व ही हो गई थी। उन्होंने कहा कि सत्ताधारी गठबंधन के बीच सीट बंटवारे को लेकर भी रोज फार्मुला बदलने की खबरें आती हैं। गठबंधन के लोगों को सिर्फ ज्यादा से ज्यादा सीटों को हथियाने की चिंता है। जनता के बारे में इन्होंने अपनी कोई सोच या योजना उजागर नहीं की है। अंततः ऐसा ना हो कि महागठबंधन को जनता ही झारखंड

से नौ दो ग्यारह कर दे। इन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी को एक बार फिर प्रधान मंत्री बनाने के लिए राष्ट्रवाद और विकास की आंधी चल रही है। इस आंधी का सामना करने के लिये महागठबंधन के नेता हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। इन्होंने कहा कि महागठबंधन के भीतर खाने से चुनाव लड़ने के मुद्दे पर नेताओं में एक दूसरे को पहले आप, पहले आप कहने वाली स्थिति दिख रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि धर पकड़ के और आरजू मिनत कर पिछले बार के चुनाव में हारे हुए उम्मीदवारों को ही खोज-खोज कर लड़ने की तैयारी की जा रही है।

शिव उरांव संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बने



रांची। शिव उरांव को संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। शुक्रवार को प्रेस क्लब में पार्टी के महासचिव विजय शंकर नायक ने मनोनयन पत्र सौंपा। उन्होंने कहा कि शिव उरांव के प्रदेश अध्यक्ष बनने से पार्टी को मजबूती मिलेगी। मौके पर राष्ट्रीय प्रवक्ता सवरीना टोपों, मैना उरांव, उमा शंकर झा, नरेंद्र साई, मनीष चौधरी, फिरोज अंसारी, बसंत उरांव थे।

जेबीवीएनएल ने ₹81 करोड़ बिजली बिल वसूली के लिए कोल्हान के सरकारी दफ्तरों को भेजा नोटिस

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड बिजली वितरण निगम की ओर से बिजली बिल वसूली के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। जहां आम घेरलू उपभोक्ताओं से बिल वसूली और चोरी के खिलाफ छापेमारी की जाती है। वहीं, सरकारी कार्यालयों को नोटिस भेज कर बिल वसूली की जा रही है। पिछले दिनों रांची विद्युत आपूर्ति कार्यालय की ओर से रांची के सरकारी आवासों और कार्यालयों को नोटिस भेजा गया था। वहीं, अब जमशेदपुर के विभिन्न सरकारी कार्यालयों से बिजली बिल वसूली के लिए नोटिस भेजा गया है। इसमें जमशेदपुर, आदित्यपुर, कोल्हान

क्षेत्र शामिल है। यहां के सरकारी कार्यालयों में कुल 81 करोड़ रुपए बकाया है। बकाया राशि भुगतान के लिए 31 मार्च तक का समय दिया गया है। बकाया राशि 31 मार्च तक जमा नहीं करने पर कार्रवाई की जायेगी। आदित्यपुर विद्युत अवर प्रमंडल के अधीन आनेवाले सरकारी विभागों और बड़े उद्योगों पर ही करीब 7 करोड़ से अधिक का बिजली बिल बकाया है। इसमें नगर निगम, जेआरडीसीएसएल, पीएचडी और जियाडा जैसे सरकारी विभाग शामिल हैं। आदित्यपुर के सरकारी विभागों के पास एचटी और एलटी कनेक्शन मिलाकर करीब सात करोड़ का बकाया है। इसमें

चुनाव ड्यूटी : इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए भाड़ा तय

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव के लिए ईवी श्रेणी के वाहनों के लिए हायर एंड डिटेन्शन चार्ज की दर्ज निर्धारित की गयी है। परिवहन विभाग ने आदेश जारी किया है। विभाग ने पहले ही पेट्रोल-डीजल वाहनों के लिए हायर एंड डिटेन्शन चार्ज तय

नहिन्द्रा एक्स्यूवी 400 ईवी, टाटा टियागो नेक्सन ईवी, टाटा टिगोर ईवी, एसी कार : 1470.00 रुपये

नहिन्द्रा एक्स्यूवी 400 ईवी, टाटा टियागो नेक्सन ईवी, टाटा टिगोर ईवी, बिना इलेक्ट्रिक ऑटो : 620 रुपये
1280.00 रुपये।

टाटा पंच ईवी, टाटा टियागो ईवी, वातानुकूलित : 1340.00 रुपये
टाटा पंच ईवी, टाटा टियागो ईवी, बिना वातानुकूलित कार : 1170.00 रुपये

कर दिया था, अब इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए भी दरों को तय किया है। यानि चुनावी ड्यूटी में अगर ये वाहन

प्रयोग में लाये जाते हैं तो उन्हें निर्धारित दरों का ही भुगतान वाहन संचालकों के पक्ष में करना होगा।

चुनाव में खाने-पीने की सामग्री की दर तय चाय 10 और नॉन वेज थाली ₹152 की होगी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव में चाय-काँफी से लेकर पानी की बोतल तक की दर तय कर दी गई है। चुनाव कार्य के दौरान उम्मीदवार या राजनीतिक दल द्वारा समर्थकों या पार्टी में नाश्ता या भोजन कराया जाता है तो जिला प्रशासन की ओर से निर्धारित दर ही मान्य होगा। इसी दर पर खर्च की गणना की जाएगी। जिला प्रशासन ने इसके लिए टेंडर जारी किया था और एल वन दर पर इन खाद्य सामग्री की दर निर्धारित की है। इसी दर से उम्मीदवारों को खर्च का हिसाब देना होगा।

निर्धारित दर के अनुसार चाय और काँफी की दर प्रति कप 10.50 रुपए है। नास्ते को तीन श्रेणी में रखा गया है। साधारण नाश्ते में चार पूड़ी, दो जलेबी और सब्जी रहेगी। नाश्ता

खाद्य पदार्थों की निर्धारित दर

चाय 10.50
काँफी 10.50
नास्ता साधारण 35.00
नास्ता टाछप वन 45.00
नास्ता टाछप टू 65.10
खाना साधारण 80.00
खाना वेज 120.00
खाना नॉन वेज 152.25
कोल्ड ड्रिंक्स 2 लीटर 21.00
पानी बोतल एक लीटर 10.50



टाइप वन में समोसा या कचौड़ी एक पीस, एक वेजिटेबल चाँप, स्पंजी रसगुल्ला 2 या काजू बर्फी दो पीस रहेगी।

साधारण खाना में दो रोटी, चावल, दाल, सब्जी, भुजिया, स्पंजी रसगुल्ला एक, सलाद, अचार और पापड़ रहेगा। वेज खाने में दो रोटी, जीरा राइस, दाल, मिक्स

वेज, मटर पनीर, भुजिया, बुदिया रायता, स्पंजी रसगुल्ला एक, सलाद और पापड़ रहेगा। नॉन वेज खाना में दो रोटी, जीरा राइस, दाल, मिक्स भेज, सब्जी, पनीर सब्जी, भुजिया, बुदिया रायता, स्पंजी रसगुल्ला एक, सलाद, पापड़, मछली या चिकन या मटन-4 पीस में दो रोटी, जीरा राइस, दाल, मिक्स निर्धारित किया गया है।

भाजपा को पूरी छूट और कांग्रेस से लूट की नीति पर काम कर रहा इडी-सीबीआई : राजेश ठाकुर

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। भाजपा को छूट और कांग्रेस से लूट नीति के तहत देश में आयरक विभाग काम कर रहा है। लोकसभा चुनाव में हार के डर से भाजपा अलग-अलग हथकंडे अपना रही है। यह आरोप प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने प्रधानमंत्री मोदी पर लगाते हुए कहा कि आगामी चुनाव के लिए भाजपा द्वारा कराए गए आंतरिक सर्वे में हार की रिपोर्ट आ चुकी है तो मोदी के सिपाहसालार के रूप में कार्य कर रही सरकारी एजेंसियां ईडी, सीबीआई, आईटी आदि खुलकर मैदान में आ गई है।

श्री ठाकुर ने कहा कि आयरक विभाग द्वारा कांग्रेस को 1823 करोड़ का नोटिस भेजा गया है।



135 करोड़ कांग्रेस के खाले से पहले ही आयरक विभाग द्वारा निकाला जा चुका है। लेकिन भाजपा के खाले की जो जानकारी चुनाव आयोग की वेबसाइट पर है उसमें 1297 लोगों ने बिना नाम पते के बिना पूरी जानकारी के 42 करोड़ रुपए भाजपा के खाले में 2017-18 में जमा किए हैं। कांग्रेस के 14 लाख के डिपॉजिट पर आयरक विभाग ने हमारे खाले प्रीज कर दिए परंतु बीजेपी के 42 करोड़ नजर नहीं आए।

भाजपा ने जो नियम का उल्लंघन किया है उसके चलते उन पर 4600 करोड़ की दैनदारी बनती है लेकिन आयरक विभाग को भाजपा के खाले नजर ही नहीं आ रहे हैं। इन्होंने कहा कि देश में 'कर आतंकवाद' की एक नई परिभाषा गढ़ी जा रही है जिससे जीएसटी की शकल में आम जनता पहले से ही पीड़ित है, 2024 के चुनाव में विपक्ष को हतोत्साहित करने का यह एक नया तरीका है कि विपक्ष को आर्थिक रूप से कमजोर करके उसे नख- दंत विहीन किया जाए ताकि चुनाव को एक तरफा करने की कोशिश की जाए, लेकिन मोदी नहीं जानते कि मोदी की नीतियों के खिलाफ विपक्ष नहीं बल्कि जनता चुनाव लड़ रही है। उक्त जानकारी प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने दिया।

टेरर फंडिंग मामले में आरोपी की जमानत याचिका खारिज

खबर मन्त्र व्यूटो

रांची। चतरा के टंडवा स्थित मगध और आग्रपाली कोयला परियोजना से टेरर फंडिंग मामले में जेल में बंद कल्याणपुर चौक निवासी अनिश्वय गंडू की जमानत याचिका एनआईए के विशेष न्यायाधीश एमके वर्मा की अदालत ने खारिज कर दी है। वह स्पेशल एनआईए कांड संख्या 2018 से जुड़े एक मामले में छह जून 2020 से जेल में है। इससे पूर्व याचिका पर सुनवाई के दौरान एनआईए की ओर से दलीलें दी गई कि याचिकाकर्ता टीपीसी के लिए कोयला खनन क्षेत्र से जबरन वसूली के माध्यम से नाजायज स्रोतों से धन

एकत्र किया। अन्य सदस्यों के साथ मिलकर टीपीसी उखाड़ी के नाम पर भय पैदा कर स्थानीय व्यापारियों और डीओ धारकों से लेवी वसूलने में सल्लित था। याचिकाकर्ता के वकील ने दलील दी कि इसी मामले के आरोपी सुदेश केडिया, संजय जैन, महेश अग्रवाल, अजय कुमार, अजीत ठाकुर और सुभान मियां को ऊपरी अदालत से जमानत मिल चुकी है। याचिकाकर्ता का मामला बिना अभियुक्त व्यक्तियों की तुलना में बेहतर स्थिति में है। इन्होंने बहुत कष्ट सहा है। ऐसी संभावना है कि निकट भविष्य में सुनवाई पूरी नहीं हो सकेगी। दोनों पक्षों को सुनने के बाद अदालत ने याचिका खारिज कर दी।

यात्रियों की भीड़ देखते हुए रेलवे ने ट्रेनों का किया अतिरिक्त विस्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। दक्षिण पूर्व रेलवे की ओर से राज्य में चलने वाली स्पेशल ट्रेन को अतिरिक्त विस्तार दिया गया है। वहीं कुछ ट्रेनों में अतिरिक्त कोच जोड़ा गया है। यात्रियों की भीड़ और लंबी वॉटिंग लिस्ट को देखते हुए रेलवे ने ये निर्णय लिया है। अप्रैल में नवरात्रि और फिर गर्मी छुट्टियों को ध्यान में रखते हुए, रेलवे ने स्पेशल ट्रेनों को अतिरिक्त विस्तार दिया है। इसके साथ ही पूर्व से संचालित स्पेशल ट्रेनों के फेरे जून तक बढ़ा दिये गये हैं।

धनबाद होकर चलने वाली कोलकाता बिकानेर और कोलकाता मदार साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेनों में अतिरिक्त कोच जोड़े जाएंगे। धनबाद, बोकारो और रांची हाथक चलने वाली रक्सली हैदराबाद स्पेशल ट्रेन का परिचालन अब जून तक होगा।

इन ट्रेनों में जोड़े गये अतिरिक्त कोच



ट्रेन संख्या 12495 बिकानेर कोलकाता प्रयाग एक्सप्रेस में चार से 25 अपरल तक एक थर्ड एसी का अतिरिक्त कोच।

ट्रेन संख्या 12496 कोलकाता बिकानेर प्रयाग एक्सप्रेस में पांच से 26 अपरल तक एक थर्ड एसी का अतिरिक्त कोच।

ट्रेन संख्या 19608 मयूर कोलकाता साप्ताहिक एक्सप्रेस में एक से 29 अपरल तक एक थर्ड एसी व एक स्लीपर का अतिरिक्त कोच।

ट्रेन संख्या 19607 कोलकाता मदार साप्ताहिक एक्सप्रेस में चार अप्रैल से दो मई तक एक थर्ड एसी व एक स्लीपर का अतिरिक्त कोच।

उदय चौहान

रांची। जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव की तारीखें नजदीक पहुंच रही है वैसे-वैसे चुनावी चर्चा जोर पकड़ रही है। झारखंड के दुमका, खूंटी व गोड्डा सीट सबसे हॉट मानी जाने लगी है। भाजपा ने दुमका से सीता सोरेन, गोड्डा से निशिकांत दुबे व खूंटी से अर्जुन मुंडा को प्रत्याशी बनाया है। महागठबंधन की ओर से दुमका से हेमंत सोरेन के चुनाव लड़ने के चर्चा गरम है। वैसे, सीट शेयरिंग व अन्य कामों में महागठबंधन धीमी रफ्तार से चल रहा है। मात्र खूंटी सीट से कांग्रेस ने कालीचरण मुंडा को उम्मीदवार बनाया है। दुमका व गोड्डा सीट से उम्मीदवारों के नाम महागठबंधन ने घोषित नहीं किया है। झारखंड में सभी 14 सीटों लोकसभा सीटों पर चार चरणों में मतदान होगा।



सूत्रों के अनुसार झारखंड का लोकसभा चुनाव इस बार काफी दिलचस्प होने वाला है। झारखंड की रांची, दुमका, गोड्डा, सिंहभूम, खूंटी और हजारीबाग लोकसभा सीट हॉट मानी जा रही है। भाजपा ने इस बार रांची से संजय सेठ, दुमका से सीता सोरेन, गोड्डा से निशिकांत दुबे, सिंहभूम से गीता कोड़ा, हजारीबाग से मनीष जयसवाल को मैदान में उतारा है। ऐसी चर्चा है कि इस बार झारखंड की दुमका लोकसभा सीट सबसे हॉट सीट हो सकती है। इस सीट से पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन चुनाव लड़ सकते हैं।



मालूम हो कि हेमंत सोरेन अभी जेल में हैं। सूत्रों की मानें, तो वह जेल से ही लोकसभा का चुनाव लड़ सकते हैं। अगर हेमंत सोरेन दुमका से चुनाव लड़ते हैं तो यह देश की सबसे हॉट सीट में से एक हो सकती है। राजधानी रांची हमेशा से ही एक हॉट सीट रही है। रांची में छठे चरण में 25 मई 2024 को मतदान होगा। इस सीट पर अभी भाजपा का कब्जा है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के संजय सेठ ने कांग्रेस उम्मीदवार सुबोध कांत सहाय को लगभग तीन लाख वोटों से हराया था। भाजपा ने एक बार फिर संजय सेठ पर



भरोसा जताया है। आईएनडीआई में अभी सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत का दौर जारी है। देखना दिलचस्प होगा कि रांची सीट कांग्रेस के पास ही रहेगी या फिर झामुमो बाजी मारेगी।

गीता कोड़ा ने पलटी सिंहभूम की बाजी

सिंहभूम की सीट भी हॉट सीटों में से एक रहने वाली है। यह सीट अनुसूचित जाति-जनजाति के लिये आरक्षित है। इस सीट पर चौथे चरण में 13 मई 2024 को मतदान होगा। 2019 के लोकसभा चुनाव में गीता कोड़ा कांग्रेस के टिकट पर

लोकसभा पहुंची थी। गीता कोड़ा ने हाल ही में भाजपा का दामन थाम लिया था। भाजपा ने उन्हें सिंहभूम सीट से अपना उम्मीदवार बनाया। सिंहभूम कांग्रेस के लिये एक गढ़ के रूप में रही है। गीता कोड़ा के जाने के बाद आईएनडीआई से यहां से कौन चुनाव लड़ेगा, वह तो उम्मीदवारों की लिस्ट जारी होने के बाद ही पता चलेगा। हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं है कि वह भी एक हॉट सीट रहने वाली है।

गोड्डा भी एक ऐसी सीट है, जिसपर देशभर के लोगों की नजर रहने वाली है। इस सीट पर सातवें चरण में एक जून 2024 को मतदान होगा। 2019 के चुनाव में इस सीट पर भाजपा नेता निशिकांत दुबे जीत दर्ज कर की थी। निशिकांत दुबे 2009 से लगातार लोकसभा पहुंच रहे हैं। भाजपा ने एक बार फिर से अपने दिग्गज नेता पर भरोसा जताया है। वहीं, आईएनडीआई की तरफ

से अभी स्पष्ट नहीं है कि यहां से कौन चुनाव लड़ेगा। खूंटी भी एक हॉट सीट रहने वाली है। इस सीट पर 13 मई 2024 को चौथे चरण में मतदान होगा। भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्र सरकार में मंत्री अर्जुन मुंडा को खूंटी से से दूसरी बार उम्मीदवार बनाये जाने से सबसे हॉट सीट में से एक बन गई है। हजारीबाग सीट भी इस बार हॉट सीटों में शामिल रहने वाली है। इस सीट पर पांचवे चरण में 20 मई 2024 को मतदान होगा। 2019 के चुनाव में इस सीट से भाजपा के वरिष्ठ नेता जयंत सिन्हा सांसद चुने गये थे। लेकिन, इस बार विधायक मनीष जयसवाल को भाजपा ने उम्मीदवार बनाया है।

खैर! लोकसभा चुनाव में कौन किस पर भारी पड़ता है। अभी तो चर्चा गरम है कि कौन-कौन सबसे हॉट सीट है।

गुड फ्राइडे के अवसर पर मसीहियों ने ईसा मसीह को याद किया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मसीही विश्वासी शुक्रवार को गुड फ्राइडे की आराधना में शामिल हुए। पिलातुस के आदेश पर प्रभु यीशु मसीह को क्रूस मृत्यु की सजा दी गयी थी। इस घटना के स्मरण में मसीही विश्वासी ने आराधना के दौरान मनन चिंतन किया। संत मरिया महागिरजाघर में सुबह 6 वंदना और पाप स्वीकार किया गया। दिन के 10 बजे से क्रूस रास्ता की आराधना हुई। शाम 4:30 बजे से लोयला मैदान में पुण्य शुक्रवार की विधि में विश्वासी शामिल हुए। बहुबाजार स्थित संत पॉल्स कैथेड्रल में सुबह छह बजे से विशेष आराधना हुई। मेन रोड स्थित क्राइस्ट चर्च में सुबह 6:30 बजे से विशेष आराधना हुई। इस अवसर पर सभी गिरजाघरों में विशेष प्रार्थना हुई और क्रूस रास्ता का प्रार्थना किया गया। संपूर्ण चर्च में धर्म गुरुओं ने गुड फ्राइडे की चर्चा करते हुए कहा कि अपनों की गलतियां माफ करना आसान है, पर दूसरों की गलतियों को क्षमा करना बड़ी बात है।



विश्व के कल्याण के लिए यीशु मसीह ने खुद को क्रूस पर बलिदान कर दिया : मॉडरेटर बिशप जोहन

जॉर्डन चर्च में विशेष आराधना हुई। मौके पर चर्च के मॉडरेटर बिशप जोहन डांग ने कहा कि आज के ही दिन विश्व के कल्याण के लिए यीशु मसीह ने खुद को क्रूस पर बलिदान कर दिया। मॉडरेटर बिशप डांग ने कहा कि हम मसीही हैं और इस घटना पर विश्वास करते हैं। यीशु को अपनी क्रूस मृत्यु के बारे में पहले से ज्ञात था। पिलातुस ने यह देखते हुए भी कि यीशु में कोई दोष नहीं वह यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का आदेश देता है। यीशु को गोलागथा की पहाड़ी में ले जाकर क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है।

हरमू संत फ्रांसिस चर्च में बच्चों ने निकाली झांकी : हरमू संत फ्रांसिस चर्च में गुड फ्राइडे के अवसर पर बच्चों ने खूबसूरत झांकी निकाली। इस अवसर पर मसीही समुदाय के लोगों ने हिस्सा लिया। गुड फ्राइडे ईस्टर संडे से पहले मनाया जाता है और यह दिन ईसाई समुदाय में सबसे खास माना जाता है। ईसाइयों की मान्यता के अनुसार, इस दिन ईसा मसीह ने पूरी दुनिया से बुराई को खत्म करने के लिए अपना बलिदान दिया था। गुड फ्राइडे के दिन को ईसाई लोग बड़े शोक के रूप में याद करते हैं और फास्टिंग भी करते हैं।

एनडब्लू जीइएल चर्च में बिशप राजीव ने दिया संदेश

रांची। गुड फ्राइडे की आराधना पर खीस्त गिरजाघर में बिशप राजीव वतीश टोपो ने उपदेश दिए। आराधना का संचालन रेह यीशु नासरी मिंज ने किया। मौके पर रेह शशि मिंज, रेह सलमोन एक्का सहित अन्य मौजूद थे।

सामलौग पल्ली में जीवंत झांकी में क्रूस रास्ता की विधि

रांची। सामलौग पल्ली में गुड फ्राइडे के मौके पर जीवंत झांकी पर आधारित क्रूस रास्ता की विधि पूर्ण की गई। इसके माध्यम से प्रभु यीशु के दुखभोग और क्रूस का स्मरण किया गया। जीवंत झांकी में पिलातुस एरोन एक्का, यीशु निर्मल एक्का, मरियम का पात्र रिया प्रीति लकड़ा, बेरोनिका का पात्र नेलीका एक्का व जोसेफ का पात्र रिजाइस एक्का ने निभाया। निकोदिम खलखो, सिरिनी निमोन, नितेश भंगरा, इलियास लकड़ा सहित कई लोगों ने बाइबल के किरदारों की भूमिका निभाई।



माजपा ने अकिता हत्याकांड में दोषियों की सजा के फैसले का किया स्वागत

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा ने अकिता हत्याकांड के दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाये जाने का स्वागत किया है। पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष आरती कुनूर ने कहा कि पूर्व डीएसपी नूर मुस्तफा ने दोषियों की उम्र कम कर बर्खास्त की कोशिश की थी। उपचार राज्य सरकार ने कार्रवाई नहीं की है। भाजपा ने इस हत्याकांड पर जोरदार आंदोलन किया। आंदोलन जोर पकड़ा तब डीएसपी ने उम्र को सुधार कर शाहरुख को बालिंग किया। आरती कुनूर शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रही थीं। उन्होंने बर्खास्त से आग्रह किया कि उच्च न्यायालय में अपील करें कि ऐसे दुर्घटना अपराधियों को फांसी की सजा हो। पेट्रोल छिड़क कर जिस बच्चे अकिता की हत्या हुई थी। इस तरह से प्रदेश में छह हजार से ज्यादा बच्चियों का बलात्कार एवं हत्या हुई है। अकिता हत्याकांड के तुरंत बाद दुमका में ही 14 वर्षीय



नाबालिंग आदिवासी को अरमान अंसारी ने लव जेहाद के नाम पर फंसा कर गर्भवती किया और उसके बाद उसकी हत्या कर पेड़ पर लटका दिया।

उन्होंने कहा कि रांची में एसआई संख्या टोपनो की मवेशी तस्कर द्वारा गाड़ी चढ़ा कर मार डालना, बीरियों में राबिया पहाड़िया की बोटी बोटी काटकर हत्या कर देना, जामा की घटना, सुखदेवनगर की घटना, स्पेन की महिला के साथ दुष्कर्म की घटना सहित कई घटनाएं प्रदेश को कलंकित किया है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बलाघे कि एमटी-एससी की कितनी बच्चियों एवं महिलाओं के साथ दुष्कर्म एवं हत्या की घटनाएं हुईं। कितने केस में फास्ट ट्रैक का गठन किया गया।

भू-माफियाओं के गठजोड़ से लूटी जा रही आदिवासी जमीन : समिति

रांची। राष्ट्रीय आदिवासी समन्वय समिति ने आदिवासियों के सामाजिक, धार्मिक एवं रैयती जमीन का हो रहे अवैध हस्तांतरण पर गहरी चिंता व्यक्त की है। समिति ने कहा कि राज्य सरकार के अधिकारी और भू-माफियाओं के गठजोड़ से आदिवासियों की जमीन पर कब्जा कर लैंड लॉनिंग की जा रही है जो आपराधिक मामला है। राज्य सरकार भी आदिवासियों के जमीन के मामले में मौन व्रत धारण किए हुए है। न्यायालय द्वारा दिए गए दखल देहनी के आदेशों का अनुपालन भी अंचल अधिकारी गण एवं जिला प्रशासन के द्वारा नहीं कराई जा रही है। राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन भी आदिवासियों को न्याय देने के मूढ में नहीं है। वहीं दूसरी ओर अंचल अधिकारी, कर्मचारी, एनआईसी और भू माफियाओं की मिली भगत से गलत तरीके से रसदों में लगान कम देना, खतियान के रकबा प्लॉट की संख्या में गड़बड़ी कर व्यापक पैमाने पर जालसाजी की जा रही है।

नशा कारोबार पर रोक लगाने को युवा आजसू ने एसएसपी को सौंपा ड्रापन

ड्रग्स माफियाओं पर कार्रवाई की मांग

नशा वर्तमान के साथ साथ आने वाली पीढ़ी को भी बर्बाद कर रहा : युवा आजसू

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। युवा आजसू के एक प्रतिनिधि मंडल ने रांची के वरीय पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार सिन्हा को जिले में सक्रिय ड्रग्स पैडलर/ड्रग्स माफियाओं की सक्रियता पर कार्रवाई करने और युवाओं को ड्रग्स माफियाओं के चंगुल से दूर करने के लिए पांच सूत्री मांगों को लेकर ड्रापन सौंपा। युवा मोर्चा के राज्य संयोजक गौतम सिंह एवम जब्बर अंसारी के नेतृत्व में एसएसपी से मिले प्रतिनिधि मंडल ने रांची में तेजी से बढ़ रहे ड्रग्स के कारोबार और युवाओं को ड्रग्स की लत लगाने उनके भविष्य को बर्बाद कर रहे बेखुश ड्रा पैडलर की ओर ध्यान आकृष्ट करवाया। युवा मोर्चा ने मांग की कि ड्रग्स पैडलर के खिलाफ त्वरित कार्रवाई के लिए स्पेशल दस्ते का गठन,



स्कूल, कॉलेज, मंदिर, मस्जिद सहित सभी धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थानों के 100 मीटर के दायरे में पान गुमटी, गुटखा, सिगरेट, चाय की दुकानों को अखिल हटाने और सभी गुमटियों पर स्पेशल दस्ता के माध्यम से निगरानी रखने, नशे से होने वाले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व सामाजिक नुकसान के बारे में विभिन्न माध्यमों से जागरूकता अभियान चलाने के साथ ही जिले के सभी बॉर्डर क्षेत्र में वाहनों की सघन जांच करने की मांग की है।

युवा आजसू के प्रदेश संयोजक गौतम सिंह ने कहा कि नशे ने कई परिवारों को तहस नहस कर दिया

है। शासन प्रशासन को अखिल हटाने के माध्यम से कार्रवाई करनी चाहिए। नशा वर्तमान के साथ आने वाली पीढ़ी को भी बर्बाद कर रहा है। ड्रापन सौंपने के उपरांत प्रदेश संयोजक अब्दुल जब्बर ने कहा कि हमें आज इस अति गंभीर विषय पर रांची एसएसपी से मिलकर रांची में फल फूल रहे ड्रग्स के कारोबार पर रोक लगाने और उचित कार्रवाई करने का आग्रह किया है। प्रतिनिधि मंडल में मुख्य रूप से युवा आजसू के सौरव कुमार, गदाधर महतो, नीरज वर्मा, नीतीश सिंह, अधिपेक झा, अजित कुमार, अशुतोष कुमार, कैलाश कुमार सहित अन्य मुख्य से शामिल रहे।

खबर एक नजर में

सदानी झंडा लगाव अभियान प. बंगाल से शुरू

रांची। सदानी झण्डा लगाव अभियान के तहत शुक्रवार को मूलवासी सदान मोर्चा पश्चिम बंगाल के प्रदेशाध्यक्ष रोशन सिंह रौतिया ने पश्चिम बंगाल के डूआर्स के बनारहट के क्षेत्रों में सदानी झण्डा लगाव अभियान चलाया और सदान परिवार के रजनी गोप एवं अन्य परिवारों के बीच सदानी झण्डा सौंपा और घरों में लगाया। मूलवासी सदान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने पश्चिम बंगाल और असम में भी प्रदेश कमिटी का गठन कर दिया है। इसी कड़ी में मूलवासी सदान मोर्चा केंद्रीय समिति की ओर से सदानी झण्डा लगाओ अधिकार बचाओ अभियान चलाया जा रहा है।

एक अप्रैल को मनायी जायेगी शीतला सप्तमी

रांची। चैत्र मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को शीतला सप्तमी के रूप में मनाया जाता है। राजधानी में शीतला सप्तमी की पूजा एक अप्रैल को की जाएगी। इस दिन मां दुर्गा के स्वरूप शीतला माता की पूजा की जाएगी। देश के कुछ भागों में इसे शीतला अष्टमी के रूप में भी मनाया जाता है। राष्ट्रीय सनातन एकता मंच के प्रांतीय प्रवक्ता संजय सराफ ने बताया कि बसोड़ा शीतला माता को समर्पित त्योहार है। शीतला माता ढंडक प्रदान करने वाली देवी हैं। मान्यता है कि इस दिन शीतला माता की विधि-विधान से पूजा करने से विभिन्न बीमारियों से मुक्ति मिलती है और घर में सुख-शांति आती है।

स्वाति प्रसाद का गाना यू ट्यूब पर रिलीज

पेरिस ओलिंपि 2024 में खेलने वाले खिलाड़ियों में भर रहा जोश



रांची। रांची की उभरती हुई प्लेबेक सिंगर स्वाति प्रसाद ने पेरिस ओलिंपि 2024 में खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए जोर लगा रे गाने को गाया है। शुक्रवार को स्वाति प्रसाद के यू ट्यूब चैनल स्वाति प्रसाद ऑफिशियल पर इसे रिलीज किया गया। गाने में कई खिलाड़ियों के नामों का भी जिक्र किया है, जिन्होंने अपने खेल से देश का नाम रोशन किया है। इस गाने को डॉ पंकज सोनी ने लिखा है। पीवीवी एंटरटेनमेंट प्रॉड्युट लिमिटेड इस एलबम का निर्माता है। संगीत स्वाति प्रसाद ने ही दिया है।

युवाओं को दिया जायेगा युवा रतन सम्मान



रांची। राजधानी रांची में झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच की 22वीं प्रांतीय सभा सह लघु अधिवेशन की शुरुआत आज से होगी। प्रांतीय अध्यक्ष अरुण गुप्ता ने बताया कि सामाजिक समर्पण शाखा के आतिथ्य में 31 मार्च तक प्रांतीय सभा सह लघु अधिवेशन का आयोजन अग्रसेन भवन में आयोजन हो रहा है। इस दो दिवसीय अधिवेशन में झारखण्ड प्रांत से करीब चार सौ युवा शामिल होंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेन्द्र भट्ट, सांसद संजय सेठ, पूर्व प्रांतीय अध्यक्षगण, प्रांतीय पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, विभीन शाखाओं के अध्यक्ष, सचिव एवं युवा साथी शामिल होंगे। इस अधिवेशन में समाज के युवा प्रतिभा को युवा रतन सम्मान से सम्मानित भी किया जायेगा। मौके पर सरिता बाथवाल, दिनीता सिंगनिया, विशाल पांडिया, सार्थक अग्रवाल, विकास अग्रवाल, पिकेश खंडेलवाल, स्वता भाला, सपना सिंघानिया, सुमित लाड उपस्थित थे।

मस्जिद जाफरिया में हजरत अली की तीन दिवसीय मजलिस शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मस्जिद जाफरिया में बयान हजरत अली इब्न अबी तालिब की याद में तीन दिवसीय मजलिस की शुरुआत शुक्रवार को हुई। ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड झारखंड के चेयरमैन और मस्जिद जाफरिया रांची के इमाम व खतीब हजरत मौलाना अल्हाज सैयद तहजिबुल हसन रिजवी ने मजलिस को संबोधित करते हुए कहा कि अल्लह का रसूल का फरमान है कि अली की मुहब्बत ईमान और मुहब्बत अली ईमान की निशानी है। हजरत अली उस महान व्यक्ति का नाम है। जिनका जन्म की व्यवस्था ईश्वर ने अपने घर काबा में की।



हजरत अली ने अपना पूरा जीवन मानवता के लिए दे दिया। जब अली को पता चला कि लोग भूखे हैं तो वह रात के अंधेरे में गरीबों के घर अपनी पीठ पर राशन लेकर जाते थे। अली के शासनकाल में कोई भी भूखा नहीं सोया। हजरत अली ने कहा कि यदि समाज का एक भी आदमी भूखा रहेगा तो उस देश के अमीर लोगों पर तरस खाने के अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता। अली के किरदार से मुसलमान अपने समाज को नई

जिंदगी दें। लोग हमें धर्म से नहीं उरित्र से पहचानें। 1400 साल पहले सन 40 हिजरी में रमजान की 19 तारीख को हजरत अली पर इराक के कूफा की मस्जिद में अब्दुल-रहमान इब्न मुलजिम ने उस समय हमला किया जब वह नमाज पढ़ रहे थे और 21 रमजान को हजरत अली शहीद हो गए। मर्सिया खानी सैयद अता इमाम रिजवी और मुहम्मद इमाम ने की। पेशखानी सैयद निहाल हुसैन सरियावी, अमूद अब्बास, युनुस राजा, अमीर गोपालपुरी ने की। कार्यक्रम का आयोजन स्वर्गीय हाजी अजहर हुसैन के पुत्र सैयद मेहदी इमाम और सैयद जफरुल हसन द्वारा किया गया।

ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस मुशाविरत एडहॉक कमिटी का किया गया गठन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस मुशाविरत ने राज्यों में कमिटी बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसी कड़ी में झारखण्ड में भी सात सदस्यों की एक एडहॉक समिति का गठन इस प्रकार किया गया। झारखण्ड राज्य मुस्लिम मजलिस मुशाविरत के पूर्व महासचिव खुशींद हसन रूमी को झारखण्ड राज्य का कनवीनर बनाया गया। हाजी हत्तीमुद्दीन रांची, हाजी शकील अहमद लोहरदगा, मुहम्मद मिन्हाज आलम चतरा, मौलाना सैयद तहजिबुल हसन रिजवी रांची, साजिद हुसैन लालू कोडरमा, प्रो. डॉ. जकीन अख्तर जमशेदपुर को सदस्य बनाया गया है। इनकी नियुक्ति पर जामिया



रशीदुल उलूम चतरा के नाजिम हजरत मौलाना मुफ्ती नजर तौहीद, मौलाना मुस्तफा कासमी, जमीयत उलेमा के झारखंड के कोषाध्यक्ष शाह उमैर, सेंट्रल मुहम्मद कमिटी के महासचिव अकीलुर रहमान, कल्हाडी शाह बाबा कर्बला कमिटी के आफताब आलम, रांची पब्लिक स्कूल के सचिव मुहम्मद तौहीद, सत्य भारतीय कमिटी के सरवर खान, सहाफी जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट के आदिल रशीद, जमीयत उल-इराकीन के

महासचिव सैफुल हक, ऑल इंडिया मोहिम कॉन्फ्रेंस के कार्यकारी अध्यक्ष मंजूर अहमद अंसारी, ऑल इंडिया काग्रिस कमिटी अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष अनवार अहमद अंसारी, मजलिस उलेमा के अध्यक्ष मौलाना साबिर मोहनपुरी, लोहारदगा अंजुमन इस्लामिया के अध्यक्ष रऊफ अंसारी, जमीयत उल-इराकीन ग्रामीण अध्यक्ष मुहम्मद जावेद, डॉ. जफर अहमद और शाहनवाज आलम टाटा, गुलाम जिलानी अधिवक्ता हजारीबाग समेत दर्जनों संस्थानों के प्रमुखों ने बधाई दी है। खुशींद हसन रूमी ने मजलिस मुशाविरत के अध्यक्ष फिरोज अहमद एडवोकेट, महासचिव शेख मंजूर अहमद और उनकी पूरी टीम को धन्यवाद दिया।

मनरेगा में न्यूनतम मजदूरी दर 280 तो 450 के भुगतान का दबाव क्यों : चैबर

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखण्ड चैबर ऑफ कॉमर्स की कार्यकारिणी समिति की बैठक शुक्रवार को चैबर भवन में अध्यक्ष किशोर मंत्री की अध्यक्षता में हुई। कहा गया कि जब मनरेगा में न्यूनतम मजदूरी दर 280 रुपये है तो हमें क्यों 450 रुपये का भुगतान करने का दबाव बनाया जा रहा है। चैबर अध्यक्ष किशोर मंत्री ने नाराजगी जताते हुए कहा कि हमने अक्टूबर में ही विभाग को आपत्ति और सुझाव देते हुए यह सुझाया था कि पूर्व की दर से अधिकतम 5 फीसदी वृद्धि ही हो किंतु आश्चर्य है कि हमारे प्रतिवेदन पर बिना विचार किये या वार्ता किये, नई दर को अव्यवहारिक रूप से प्रभावित कर दिया गया है, जो हमें मंजूर नहीं है। रांची शहर के कई प्रमुख क्षेत्रों में वाहनों की गति सीमा 20 कि.मी. निर्धारित किये जाने से होनेवाली समस्या पर भी वार्ता की



गई और इसे अव्यवहारिक बताया गया। यह निर्णय लिया गया कि जल्द ही ट्राईफेज एसपी से मिलकर, इस निर्णय में संशोधन का आग्रह किया जायेगा। जेबीवीएनएल द्वारा इंडस्ट्रियल रेट में वृद्धि किये जाने से होनेवाली परेशानी पर भी सदस्यों द्वारा चिंता जताई गई।

कार्यकारिणी सदस्य रोहित पोद्दार के सुझाव पर महासचिव पंरा गप्तानी ने कृषि निदेशक और कृषि सचिव की उपस्थिति में कृषि विभाग की योजनाओं पर भी कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर की सफलता के लिए स्टॉलधारियों और शहरवासियों का आभार जताया। आनंद कोटारी ने बताया

कि किसान, एफपीओ, एफपीसी द्वारा निर्मित और उत्पादित खाद्य उत्पादों के प्रचार और बिक्री के लिए चैबर भवन में आगामी 6 और 7 अप्रैल को प्रदर्शनी लगायी जायेगी। बैठक में आदित्य मल्होत्रा, राहुल साबू, पंरा गप्तानी, अमित शर्मा, शैलेष अग्रवाल, ज्योति कुमारी, अनिल अग्रवाल, नवजोत अलंग, राम बांगड, रोहित पोद्दार, सुनिल केडिया, शशांक भारद्वाज, मुकेश पांडे, जेपी शर्मा, महेंद्र जैन, राजीव चौधरी, कार्तिक प्रभात, तुलसी पटेल, आनंद जालान, सुशील चौधरी, अकिता वर्मा, कुणाल विजयवर्गीय, एसके अग्रवाल, एसपी सिंह, रितेष कुमार, राजेश महतो आदि सदस्य थे।

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा एवं वरीय पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार सिन्हा ने शुक्रवार को बुंदू प्रखंड के संवेदनशील इलाकों में बूथों का निरीक्षण किया। इस दौरान डीसी ने लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों की समीक्षा को लेकर बुंदू प्रखंड कार्यालय के सभागार में समीक्षा बैठक की। डीसी ने जिला में मतदान केंद्रों पर पेयजल/शौचालय, बिजली की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निमित्त बुंदू प्रखंड के उन्नत मध्य विद्यालय हुसीरहात, बुंदू, बूथ संख्या-10, राजकीयकृत प्राथमिक विद्यालय चुल्गी, बूथ संख्या-15 एवं 16, राजकीयकृत मध्य विद्यालय वारूहात, बूथ संख्या-18 एवं 19



का निरीक्षण किया। बैठक में सभी संबंधित सेक्टर पदाधिकारी, सेक्टर पुलिस पदाधिकारी, थाना प्रभारी एवं निर्वाचन से संबंधित सभी पदाधिकारी, कर्मियों को चुनाव से संबंधित कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

बैठक में पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) सुमित कुमार अग्रवाल, निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी-सह-अनुमंडल पदाधिकारी, बुंदू

लाल मोहन मरांडी, भूमि सुधार उप समाहर्ता बुंदू छवि बारला, प्रखंड विकास पदाधिकारी बुंदू रेणु कुमार, सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी-सह-अंचल अधिकारी बुंदू पवन कुमार, उप-निदेशक सामाजिक सुरक्षा कोषांग रांची रवि शंकर मिश्रा, थाना प्रभारी, तमाड़, सभी सेक्टर पदाधिकारी एवं सभी पुलिस सेक्टर पदाधिकारी एवं संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुरक्षा बलों को लेकर दिया विशेष निर्देश

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त रांची राहुल कुमार सिन्हा द्वारा मतदान बूथों पर निरीक्षण क्रम में बूथों पर सारी जरूरी व्यवस्थाओं को देखते हुए कहा कि चुनाव के समय जो भी फोर्स यहाँ रुके उनके लिए बूथों पर जरूरी सभी आवश्यक सेवा सुनिश्चित रूप से होना चाहिए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की समस्या बूथों पर रहने के दौरान ना हो। इसलिए सभी संबंधित अधिकारी यह पहले से ये देख ले की बूथों पर सभी आवश्यक सेवा ससमय उपलब्ध रहें।

निरीक्षण क्रम में डीसी ने मतदान बूथों पर बुनियादी सुविधा प्रदान करने को लेकर सभी बूथों पर पहुंच कर मुआयना करते हुए संबंधित अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए सभी दिशा-निर्देश का पालन करते हुए मतदान केंद्रों पर साफ-सफाई, पेय जल की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था सुनिश्चित कराने, मतदान केंद्रों में बिजली की वैकल्पिक व्यवस्था कराने, विद्यालयों में न्यूनतम मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने एवं इसे ससमय पूरा कराने का कहा गया। इस दौरान उन्होंने संवेदनशील इलाकों में बूथों का विशेष निरीक्षण किया, ताकि भय मुक्त वातावरण में मतदान कराया जा सके। इसको लेकर मतदान केंद्रों पर तमाम सुरक्षा व्यवस्था कैसे सुनिश्चित हो, इसका मुआयना किया गया।



मांडर : सड़क हादसे में एक युवक की मौत, दो घायल

मांडर। मांडर प्रखंड के टांगर बसली के निकट मुख्यपथ पर शुक्रवार शाम सात बजे हुए सड़क हादसे में एक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं दो अन्य इस हादसे में घायल हो गए। मिली जानकारी के अनुसार हारिल जोल्हा टोली निवासी 22 वर्षीय सुजीत एका और 18 वर्षीय बादल कच्छ्य अपनी बाइक से घर की ओर लौट रहे थे। इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहे एक अन्य बाइक सवार से उनकी सीधी भिड़ंत हो गई। इस हादसे में तीनों युवक सड़क पर गिरकर घायल हो गए। ग्रामीण और पुलिस की मदद से तीनों को रेफरल अस्पताल मांडर लाया गया, जहां चिकित्सकों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया। वहीं बादल का प्राथमिक उपचार अस्पताल में ही किया गया, जबकि सुजीत के पैर टूट जाने व शरीर के अन्य हिस्सों पर गंभीर चोट होने के कारण उसे रिम्स रेफर कर दिया गया। वहीं दूसरी ओर मृत युवक की पहचान नहीं हो पाई थी।

बेड़वारी गांव में सर्पदंश से किशोरी की मौत

ठाकुरगांव। बुढ़मू प्रखंड के बेड़वारी गांव निवासी अजय महतो की पुत्री सोनी कुमारी (16 वर्ष) की आर्किस्मिक मृत्यु सर्पदंश से हो गई। जानकारी के अनुसार मृतका अपने खेत में काम कर रही थी इसी बीच विषेले सांप ने डस लिया। घटना के बाद परिवारों का रोकर बुरा हाल है। घटना की सूचना मिलते ही ठाकुरगांव पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया। आजसू पाटी की वरीय नेत्री सह पूर्व जपि उपाध्यक्ष पाटीती देवी ने परिजनों से मिलकर हरसंभव मदद का भरोसा दिया है।

दुकान में आग लगाने का प्रयास

सिकिदिरी। सिकिदिरी थाना क्षेत्र के सिंगारी बजार टांड में रामानंद बेदिया के दुकान में गुरुवार की रात अज्ञात लोगों ने आग लगाने का प्रयास किया। दुकान के संचालक ने बताया कि शुक्रवार की सुबह दुकान खोलने के बाद अंदर माचिस की बहुत सारी तिलियां जली हुई मिली। उन्होंने आशंका जताया कि दुकान के दरवाजे की नीचे से माचिस की तिली जलाकर अंदर फेंका गया था। पुलिस को सूचना दी गई है।

पत्रकार के निधन पर शोक सभा

बेड़ो। ओरमांडी के पत्रकार जय प्रकाश गुप्ता के आर्किस्मिक निधन पर बेड़ो के स्थानीय पत्रकारों ने शुक्रवार को एक शोक सभा का आयोजन कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और दो मिन्ट का मौन रहकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए श्रद्धाजलि दी। शोक सभा में पत्रकार केदार महतो, श्रीमंत घटर्जी, शिव शंकर कुमार, उज्ज्वल गुप्ता, अनुज कुमार, संजय कुमार मौजूद थे।

पतरातू गांव में दो पक्षों में मारपीट, आठ घायल

ठाकुरगांव। थाना क्षेत्र के पतरातू गांव में शुक्रवार की देर शाम दो पक्षों में आपसी विवाद में जमकर मारपीट हुई। मारपीट में दोनों पक्षों के आठ लोग घायल हुए हैं। घायलों का इलाज बुढ़मू सीएचसी में कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार गांव के अजुनम कमेटी को लेकर दोनों पक्षों में मारपीट हुई। पुलिस के अनुसार एक पक्ष से ताहिर अंसारी, मनिरुद्दीन अंसारी, मौजाहिद अंसारी व रमजान अंसारी घायल हुए हैं। वहीं दूसरे पक्ष से तोफूक आलम, अकील जावेद, कमरुद्दीन अंसारी तथा वसीम अंसारी घायल हुए हैं। थाना में दोनों गुटों द्वारा कारवाई की मांग की गई है।

तिलाई पीड़ी गांव में कल कई कार्यक्रम

सोनाहातू। प्रखंड के पूर्वी क्षेत्र पंडाडीह पंचायत के तिलाई पीड़ी गांव में 31 मार्च को विराट झूमर राता नाचपुर्णा लड़ाई एवं रात्रि में छेउ नृत्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में झूमर शिल्पी जुनुन रशिका ग्रुप के झूमर सम्राट रंजीत महतो सुरेश कुमार और झूमर शिल्पी एजे लीपनी सुनीता राना मनोहरपुर पश्चिम सिंहभूम के कलाकार अपने कला का प्रदर्शन करेंगे।

सैक्रेड हर्ट चर्च मैकलुस्कीगंज और खीस्त राजा चर्च खलारी में मना गुड फ्राइडे

मसीही विश्वासियों ने निकाली क्रूस यात्रा

प्रभु येशु के बलिदान को किया गया याद

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। सैक्रेड हर्ट चर्च मैकलुस्कीगंज में गुड फ्राइडे पर शुक्रवार को प्रभु येशु मसीह को याद कर विशेष क्रूस आराधना किया गया। क्रूस आराधना में लालपुर मायापुर लपरा मसरीखाड दुल्ली परसातरी एवं आसपास के मसीही शामिल हुए। इस दौरान चर्च में मुख्य अनुष्ठान पुरोहित विल्फ्रेड द्वारा प्रभु के सात वचनों का पाठ किया और अनुयायियों को संदेश सुनाया एवं मिस्सा अनुष्ठान सम्पन्न कराया। वही खलारी के शांतिनगर



स्थित खीस्त राजा चर्च में गुड फ्राइडे के अवसर पर मसीही विश्वासियों द्वारा क्रूस यात्रा निकाली गई। कार्यक्रम की शुरूआत क्रूस यात्रा से की गई। इस अवसर पर चर्च के युथ सदस्यों द्वारा प्रभु येशु को सुली पर चढ़ाए जाने की घटना को सांकेतिक रूप में जीवंत करते हुए ईसा मसीह द्वारा क्रूस को ढोकर चौदह स्थानों पर

ले जाया गया। इस दौरान बारी-बारी से चौदहों स्थान पर पूजा आराधना किया गया और अंत में प्रभु येशु को सुली में चढ़ाया गया। इसके बाद फादर हिलारियुस तिग्गा, फादर ऑस्कर टोपो एवं डिक्कन कंचन लकड़ा के द्वारा चर्च में विशेष मिस्सा पूजा कराया गया। मौके पर क्रूस की उपासना कर क्रूस का चूबन किया गया। साथ ही परम

मौके पर ये लोग थे मौजूद

मौके पर तोबियस बाड़ा मेरी बाड़ा सिस्टर बिरिजिनिया सचिन खलखो संजय खलखो विन्संट खेस जोषी टीडी राकेश साह जौली जोसेफ कोनेल्वुईस लकड़ा अमित प्रेम एवका सतोष भंगरा सहित बड़ी संख्या में मसीही समुदाय के लोग उपस्थित थे।

प्रसाद का वितरण मसीही विश्वासियों के बीच किया गया। पुरोहित ने अपने संदेश में कहा कि प्रभु येशु ने मानवता के कल्याण के लिए घोर यातना सहते हुए बलिदान दिया। हमें भी उनके वचनों का अनुसरण करते हुए लोगों के बीच प्रेमए करुणाए क्षमा का संदेश देते हुए मानवता की सेवा करना चाहिए। गुडफ्राइडे वास्तव में दुखदाई दिन है। गुड फ्राइडे प्रभु के वचनों को अमल करने का दिन है। इसी संदेश और

निस्वार्थ प्रेम के लिए प्रभु के बलिदान देने के कारण ही इसे गुड फ्राइडे कहा जाता है। मृत्यु के एक दिन पूर्व प्रभु येशु मसीह ने मिस्सा की थी। इसी को परंपरा निभाने के लिए सैक्रेड हर्ट चर्च में शुक्रवार को प्रभु का विशेष क्रूस आराधना किया गया। महिला संघ के सदस्यों द्वारा प्रभु येशु का गुणगान किया गया। सारे विधि पुरोहित हुबेरतुस बेक ने सहयोग किया। तत्पश्चात परम प्रसाद का वितरण किया गया।

पारंपरिक रीति-रिवाज से मना गुड फ्राइडे



इटकी। इटकी प्रखंड क्षेत्र में गुड फ्राइडे का त्यौहार शुक्रवार को पारंपरिक रीति-रिवाज के साथ मनाया गया। मौके पर प्रभु येशु मसीह के बलिदान को याद करते हुए चर्च में विशेष प्रार्थना सभा हुई। मानव कल्याण के लिए क्रूस पर लटके येशु के सात उपदेशों की चर्चा की गयी। क्षेत्र के मुख्य सीएनआई चर्च में आयोजित विशेष प्रार्थना सभा में चर्च के मुख्य पादरी एन कंडूलना ने प्रभु येशु के सात उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात किये जाने की आवश्यकता जतायी और आपसी प्रेम भाईचारे का संदेश दिया। आराधना सभा में सहायक पादरी जे तीर्की, पीटर मिंज, प्रीतम खलखो, मरियम खलखो, नेहा खलखो, प्रशांत मिंज, अनंता दादेल, निशित तिग्गा, अनूप टोपो सहित काफी संख्या में मसीही समुदाय के लोग शामिल थे। इधर महुआ टोली व रानीखटगा स्थिति एनडब्ल्यूजीईएल चर्च में भी विशेष आराधना सभा हुई।

बूथों पर अतिरिक्त सुरक्षा बल रहेंगे तैनात : डीसी

खबर मन्त्र संवाददाता

बुढ़। बुढ़ प्रखंड कार्यालय के सभागार में शुक्रवार को डीसी रांची राहुल कुमार सिन्हा और एसएसी रांची चंदन कुमार सिन्हा ने संयुक्त रूप से खूंटी लोक सभा क्षेत्र के तमाड विधानसभा अंतर्गत बुढ़ प्रखंड में शांतिपूर्ण मतदान करने को लेकर चुनाव ड्यूटी में तैनात सेक्टर अफसरएपदाधिकारी एकर्मचारी एबुथ लेवल तैनात मजिस्ट्रेट और बी एल ओ के साथ बैठक का आयोजन किया। इस मौके पर डीसी और एसएसी ने तमाड विधानसभा के तीनों प्रखंड में शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराने की रणनीति तैयार कर इसके साथ ही संवेदनशील और अति संवेदनशील मतदान केंद्रों पर रूट चार्ट कर गश्ती दल गठित करने का आवश्यक दिशा निर्देश

दिया। डीसी रांची राहुल कुमार सिन्हा ने कहा रांची स्थित मोराहाबादी से मतदान कर्मों और सुरक्षा बल मत पत्तियों के साथ सीधे मतदान केंद्र तक जाएंगे मतदान केंद्र पर ही मतदान कर्मियों और सुरक्षा बल वहीं पर रात्रि विश्राम करेंगे। मतदान केंद्र में सौचालय एवं सफाई कार्य पूरा करने हेतु एसडीएम बुढ़ और प्रखंड विकास पदाधिकारी एअंचल अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। एसएसी रांची चंदन कुमार ने मतदान केंद्र पर तैनात पुलिस अधिकारियों को समय अनुसार ड्यूटी में तैनात रहकर मोबाइल सेवा हमेशा उपलब्ध रहने का आवश्यक दिशा निर्देश दिया। उन्होंने चेतावनी दी यदि किसी हाल में मोबाइल सेवा टप हुआ तो ऐसे पुलिसकर्मियों एवं पदाधिकारी पर



मौके पर थे मौजूद

मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी बुढ़ मोहनलाल मरांडीए एलआरडीसी छवि बालाए कार्यपालक दंडाधिकारी अंजली मेहताए डीएसपी रतिमान सिंहए प्रखंड विकास पदाधिकारी रेणु कुमारीए अंचल अधिकारी पवन कुमार थानेदार पंकज भूषण के अलावा अन्य पदाधिकारी कर्मचारी एवं पुलिस अधिकारी मौजूद थे।

कारंवाई की जाएगी। नक्सल प्रभावित अति संवेदनशील मतदान केंद्र पर सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा तैनात करने और निकटवर्ती क्षेत्र में कोलस्टार की व्यवस्था करने की सलाह दी। इसके साथी

मतदान कर्मियों को ले जाने के लिए ग्रामीण सड़क पुल पुलिया के बारे जानकारी हासिल किया और कहा जहां पर बड़ी गाड़ियां बस नहीं जा सकती वहां पर छोटी बस मतदान कर्मियों को पहुंचाया जाएगा।

इटकी में जंगली हाथियों से परेशान ग्रामीणों ने जंगल में लगाई आग

पटरा खाड़कर चार हाथियों को ग्रामीणों ने दूर खदेड़ा

खबर मन्त्र संवाददाता

इटकी। जंगली हाथियों के उत्पात से परेशान ग्रामीणों ने हाथियों को भगाने को लेकर इटकी मोड़ के समीप हरी बिंधानी मार्ग स्थित जंगल में आग लगा दी। जिससे उक्त जंगल में पहुंचे चार जंगली हाथी अलग अलग दिशाओं में आबादी वाले क्षेत्र में प्रवेश कर गए। ग्रामीणों द्वारा बम पटखा फोड़ कर व मोटरसाइकिल का साइलेंसर खोल हो हल्ला कर एक जंगली हाथी को मलार डैम तक खदेड़ दिया। मलार



डैम में जंगली हाथी के घुसने के बाद दो जंगली हाथियों को बारीडीह की ओर खदेड़ दिया गया। वहीं एक जंगली हाथी तिलकसूती गांव की ओर चला गया है। घटना गुरुवार रात करीब दस-न्यारह बजे की है। ग्रामीणों के अनुसार पांच जंगली हाथियों का एक झुंड आठ दिनों से इटकी प्रखंड के रानीडीह स्थित

जंगल में अपना बसेरा बनाये हुए हैं। अलग से चार जंगली हाथियों के झुंड इटकी क्षेत्र में प्रवेश करने से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। पिछले एक सप्ताह से पांच जंगली हाथियों का झुंड शाम होते ही जंगल से निकलकर गांव खेतों में लगी फसल को अपना निवाला बना पैरों से रौंद कर बर्बाद कर रहे हैं।

सीएचसी बेड़ो में ओपीडी सेवा एक दिन बाद बहाल

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। रांची के सिविल सर्जन प्रभात कुमार के मौखिक आश्वासन व बेड़ो थाना द्वारा सुरक्षा गार्ड तैनात कराए जाने के बाद शुक्रवार को सीएचसी बेड़ो के स्वास्थ्यकर्मियों ने अपना हड़ताल समाप्त कर ओपीडी सेवा शुरू कर दिया। जिससे मरीजों ने राहत का सांस लिया है। गौरतलब है कि गत दिनों चिकित्सकों व कर्मचारियों के साथ हुई मारपीट व अपभद्र व्यवहार के विरोध में गुरुवार को स्वास्थ्यकर्मियों ने दिनभर ओपीडी का कार्य बहिष्कार कर दिया था। साथ ही मुख्य द्वार पर धरना दिया था। ओपीडी सेवा के बंद रहने से मरीजों को बगैरे इलाज कराए घर वापस लौटना पड़ा था। जिससे उन्हें भारी परेशानियों का भी सामना



करना पड़ा था। इस दौरान स्वास्थ्य कर्मियों ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुरक्षा गार्ड तैनात करने की गुहार लगाया था। इधर चिकित्सा प्रभारी डा सुमित्रा कुमारी ने बताया कि सिविल सर्जन रांची ने 1अप्रैल से विभाग द्वारा सुरक्षा गार्ड मुहैया कराने का आश्वासन दिया है। सिविल सर्जन के आश्वासन व बेड़ो थाना के द्वारा गुरुवार की रात्रि ही सुरक्षा गार्ड तैनात कराए जाने के बाद स्वास्थ्यकर्मियों ने अपना हड़ताल एक दिन के बाद शुक्रवार को समाप्त कर दिया। साथ ही शुक्रवार

प्रबंधन कर्मचारियों को सम्मान की नजर से देखें : अरविंद कुमार

खलारी। कोल इंडिया प्रबंधन चिकित्सा सुविधा में कर्मचारियों को सम्मान नजर से देखें। जिन मजदूरों और कर्मचारियों के मदद से कंपनी सालाना करोड़ों का मुनाफा कमाती है उसके साथ भेदभाव करना उचित नहीं है। उक्त बातें यूनाइटेड कोल वर्कर्स यूनियन केडीएच शाखा सचिव अरविंद कुमार ने कहा। उन्होंने कहा कि कंपनी के अधिकारी एवं कर्मचारियों को नेत्र रोगों के उपचार के साथ अब चश्मे के लिए पैसा देने का प्रस्ताव पारित किया है जो कंपनी प्रस्ताव चश्मे की नजर से आंख मूंद कर भेद भाव का निर्णय

है। यह निर्णय उचित नहीं है। नेत्र बीमारी में चश्मे के लिए कर्मचारी से लेकर अधिकारियों तक का स्लैब तैयार किया गया है। जिसमें पूर्ण रूप से मजदूरों में उच्च व निम्न वर्ग का भेदभाव को दशार्ता है। कर्मचारी को 10 हजार रुपयेए 1 से 1.3 रैंक के अधिकारी को 20 हजार रुपयेए 1.4 से 1.5 के अधिकारी को 30 हजार रुपयेए 1.6 से 1.7 के अधिकारी को 35 हजार रुपयेए 1.8 से 1.9 रैंक के अधिकारी को 45 हजार रुपये और बोर्ड स्तर के अधिकारी को 50 हजार तक एक जैसी रोग के लिए भुगतान करना समझ से परे है।

सरहुल महोत्सव को लेकर ग्रामीणों की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के कल्याणपुर में आगामी 11 अप्रैल को सरहुल महोत्सव शोभा यात्रा सह मेला आयोजन को लेकर कल्याणपुर स्थित सरना क्लब में ग्रामीणों की बैठक का आयोजन शुक्रवार को किया गया। बैठक की अध्यक्षता टंडवा प्रखंड प्रमुख रीना कुमारी और संचालन शिव शंकर साव ने किया। इस ऐतिहासिक सरहुल महोत्सव सह मेला आयोजन को लेकर टंडवा प्रखंड प्रमुख रीना कुमारी ने बताया कि झारखंड प्रदेश में मुड़मा मेला के तर्ज पर कल्याणपुर में भी मेला का

आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है इस सरहुल महोत्सव सह मेला में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से व्यवसायियों के द्वारा विभिन्न प्रकार के स्टॉल लगाए जाते हैं इस मेला आयोजन में विधि व्यवस्था सहित शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न करए जाने को लेकर अगली बैठक में नई कमेटी का गठन किया जाएगा जिसमें क्षेत्र के सभी समाज सेवी जनप्रतिनिधि पुलिस प्रशासन, सीसीएल अधिकारी शामिल होंगे।

बैठक को अन्य वक्ताओं ने भी संबोधित किया। बैठक में ललिता कुमारी मनेश्वर भगत बालेश्वर उरांव अरुण उरांव संगीता कुमारी महेंद्र उरांव फ्लेडर पासवान विनोद उरांव संतोष उरांव मोनय उरांव सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

सरहुल महोत्सव : आदिवासी सरना पड़हा समिति ने की बैठक

11 को सरहुल पूजा और महोत्सव 13 अप्रैल को होगा

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांडी। सरहुल पूजा सह सरहुल महोत्सव को लेकर आदिवासी सरना पड़हा समाज मुन्ना पतरा चकला ओरमांडी की एक महत्वपूर्ण जैविक उद्यान सरना स्थल में शुक्रवार को हुई। समाज के अध्यक्ष समुद्र पहान की अध्यक्षता में हुई बैठक में सर्व सहमति से 10 अप्रैल को सभी गांव में रूसा व 11 अप्रैल को सभी सरना स्थलों में पहान द्वारा

सामूहिक रूप से सरहुल पूजा करने का निर्णय लिया गया। वहीं जैविक उद्यान सरना स्थल मुन्नापत्रा में 13 अप्रैल को सरहुल महोत्सव घूमधाम से आयोजन करने को लेकर विचार-विमर्श की गई। निर्णय लिया गया कि महोत्सव को सफल बनाने के लिए प्रखंड के विभिन्न गांव में संपर्क स्थापित करने के साथ समारोह में शामिल होने के लिए निर्मात्रित किया जाएगा। वहीं एक चंदा कमेटी का भी गठन किया गया। बताया गया कि समारोह के मुख्य अतिथि विधायक राजेश कच्छ्य होंगे। बैठक में मुख्य पहान पुजारी दिल रंजन पहान, रमेश उरांव, अघनु मुंडा, प्रेमनाथ मुंडा, बालक पहान,



बैठक में शामिल आदिवासी समाज के लोग।

नीलमोहन पहान, सुनील उरांव, संजय तिर्की, बलराम बेदिया, गोपाल बेदिया, बाबूलाल महली, रमेशचंद्र उरांव अशोक मुंडा,

गुदी सिंह मुंडा, गोपाल उरांव, संजय मुंडा, सुखराम पहान, राजकुमार मुंडा, दिगंबर मुंडा, सोहराई बेदिया, सुलेन्द्र उरांव,

तीर्थमोहन उरांव, विमल उरांव, ग्रामप्रधान, कोंटवार, पहान के साथ समाज के कई गण्यमान्य लोग उपस्थित थे।





गुड फ्राइडे धूमधाम से मनाया गया



तालझारी। प्रखंड स्थित सीएनआई के एपीफनी चर्च में शुक्रवार को गुड फ्राइडे धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान बरहरवा चर्च के पास्टर डिकन विजय किस्कू ने प्रार्थना सभा के दौरान संबोधित किया और प्रभु ईसा मसीह के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प दिलाया। यहां बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। गुड फ्राइडे पर ईसाई समाज ने यीशु मसीह को याद किया। चर्च में विशेष आराधना हुई। यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने से पहले उनकी सात वाक्यांशों को पढ़ा गया। पास्टर ने कहा कि यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाने की याद में गुड फ्राइडे मनाया जाता है। गुड फ्राइडे से एक दिन पहले माउंडी थर्सडे मनाया गया। इस दिन यीशु ने अपने 12 शिष्यों के पैर धोए थे। सूली पर चढ़ाए जाने के तीसरे दिन यीशु मसीह के उठने की खुशी में ईस्टर मनाया जाता है। ईस्टर पर यीशु के दोबाया जीवित हो उठने की खुशी में गीत भी गाए जाएंगे। कहा कि दूसरे को क्षमा करें जब आप दूसरों को क्षमा करेंगे तो आपको भी प्रभु यीशु क्षमा करेंगे। परमेश्वर हम पर दया करता है, हमारे पापों को क्षमा करता है और हमारा उद्धार करता है। अंत में बच्चों ने यीशु मसीह के जीवन वृत्त पर नाटक प्रस्तुत किया।

अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्र के बूथों का एसपी ने लिया जायजा



बोकारो। पुलिस अधीक्षक बोकारो पूंच्य प्रकाश ने अन्तर्राज्यीय सीमा से सटे मतदान केन्द्रों एवं थानों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान बरमसिया मुर्गावल बिरखाम गर्वई पुल बिरसा पुल बॉर्डर चेकनाका तथा चौरा चास सियालजोरी थाना एवं बरमसिया बंगडिया अमलाबाद ओपी में उपस्थित सभी पुलिस पदाधिकारियों व कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

मांदर की थाप पर झूमे प्रकृति प्रेमी



बेरमो। पेटरवार प्रखंड के पिछरी गांव में सरहुल पूजा समिति पिछरी की ओर से बाहा बाँगा (सरहुल) महोत्सव सोल्लसा मनाया गया। जेहरा स्थान में पूजा की गई। इसके बाद मांदर की थाप पर लोक नृत्य से समां बंध गया। ग्रामीण महिला-पुरुषों संग अतिथि भी थिरके। बेरमो विस क्षेत्र के भाजपा नेता प्रकाश कुमार सिंह ने जल-जंगल-जमीन व विरासत को बचाते हुए विकास पर बल दिए जाने की बात कही। कहा कि बेरमो को मिलकर आगे बढ़ाना होगा, विकास का प्रकाश हर ओर फैलाना होगा। झामुमो जिलाध्यक्ष हीरालाल मांठी, आजसू जिलाध्यक्ष सचिन महतो, भाजपा जिला मंत्री विक्रम सिंह, जिप सदस्य अशोक मुर्मू, झामुमो के वरीय नेता घुनु हांसदा सहित अन्य अतिथि पहुंचे। नाथके बाबा में सुरेश मुर्मू, शिव मुर्मू, रूपलाल मुर्मू व भदरू मुर्मू सहित अध्यक्ष शंकर मुर्मू, सचिव बिरन टुडू, कोषाध्यक्ष रमेश टुडू व मुन्ना टुडू, उपाध्यक्ष रवि मरांडी, उप सचिव शंकर हेम्ब्रम, उप कोषाध्यक्ष राजेंद्र हांसदा, सलाहकार अनिल मुर्मू, संगठन पदाधिकारी सुनील हांसदा, मीडिया प्रभारी शिवलाल बास्के एवं सोशल मीडिया प्रभारी परगन मुर्मू, सुबोध मुर्मू, मार्टिन नाग व रमेश टुडू सामिल रहे।

फुसरो में रामचरित मानस पाठ का शुभारंभ

बेरमो। फुसरो स्थित पटेल नगर में 24 घंटे का रामचरित मानस पाठ का शुभारंभ आचार्य बिरेंद्र मिश्रा उर्फ शास्त्रीजी की देखरेख पंडितों की एक टीम द्वारा किया गया। मुख्य जजमान के रूप में अमरनाथ मिश्रा एवं उनकी धर्मपत्नी अनीता मिश्रा शामिल हुईं। शुक्रवार से शुरू हुआ यह रामचरितमानस पाठ शनिवार को 2 बजे तक भंडारा के साथ समाप्त होगा।

भाजपा प्रत्याशी दुल्लू महतो का बड़बोलापन करेंगे बंद : सरयू राय

मेरे साथ खड़े होने वाले को दी धमकी तो नहीं करेंगे बदशत

खबर मन्त्र संवाददाता

धनबाद। बाघमारा के जिस विधायक को धनबाद लोकसभा सीट के लिए भाजपा ने टिकट दिया है,उसने अब तक न पचां दाखिल किया है और न ही चुनाव जीता है। बावजूद वह व्यक्ति खुलेआम किसी को धमकी देने लगा है,जो असहनीय है। ऐसे व्यक्ति की हम बोलती बंद करने का काम करेंगे। यह बातें शुक्रवार को भारतीय जनतंत्र मोर्चा के संरक्षक सह जमशेदपुर पूर्वी क्षेत्र के विधायक सरयू राय ने कही। ज्ञातव्य है कि भाजपा प्रत्याशी की धमकी का



वीडियो विगत गुरुवार से ही वायरल हो रहा है, जिससे धनबाद के व्यवसायियों का एक वर्ग धुब्ध नजर आ रहा है। जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष कृष्णा अग्रवाल के घेया स्थित आवास पर प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए जमशेदपुर

पूर्वी के विधायक ने कहा कि बाघमारा विधायक दुल्लू महतो का चाल, चरित्र किसी से छिपा नहीं है। वह बाघमारा क्षेत्र के परि्या 1 से 5 में बीसीसीएल और आउटसोर्सिंग कंपनियों से रंगदारी वसूलने का काम करते आ रहे हैं। ये बातें सार्वजनिक

भाजपा के आदर्शवादी नेताओं को लेना चाहिए संज्ञान

विधायक सरयू राय ने कहा कि कृष्णा अग्रवाल उनके अच्छे साथी हैं। जहां भी उनके लोगों को कोई धमकाने का काम करेगा, वहां वह खड़े रहेंगे। उन्हींके बुलावे पर वह आज धनबाद आये हैं। उन्होंने पिछले दिनों दुल्लू महतो की उम्मीदवारी को लेकर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को पत्र लिखा था, जिसमें हमसभी के आदर्श पंडित दीनदयाल उपाध्याय को कोट करते हुए लिखा था कि उम्मीदवार का चयन करते समय पार्टी से कोई गलती हो जाए तो जनता को ध्यान में रखते हुए उस गलती को सुधारना भी चाहिए। पत्र की इसी बात को लेकर बाघमारा विधायक ने उनके साथ फोन पर तीखी बहस की और इन्हें धमकाने का काम किया। परंतु ऐसी बातों से डरने वाले नहीं हैं। दुल्लू के कारनामे की शिकायत ईडी से करेंगे और निष्पक्ष जांच की मांग करेंगे। इसके अलावा राज्य सरकार से भी चुनाव में की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर बातचीत करेंगे। ऐसे लोगों को उखाड़ फेंकने का काम किया जाएगा। हालांकि यह काम भाजपा के आदर्शवादी नेताओं और आरएएसएस को करना चाहिए। परंतु अफसोस है कि इस काम की शुरुआत कृष्णा अग्रवाल ने की है।

लड़ सकते हैं निर्दलीय

लोकसभा चुनाव में उम्मीदवारी के सवाल पर उन्होंने कहा कि धनबाद सीट को लेकर पिछले डेढ़ माह से चर्चा थी कि भाजपा सरयू राय को टिकट देने जा रही है, तो कभी जदयू के टिकट पर उन्हे धनबाद से चुनाव लड़ने की बात कही जा रही थी। परंतु सारी बातें गलत हैं। मेरा संगठन है, जिसका मैं संरक्षक भी हूँ। चुनाव के लिए उन्होंने एक कमेटी बनाई है। यदि कमेटी ने इच्छा जताई तो चुनाव लड़ने से पीछे नहीं हट सकता। धनबाद में जो विपरीत परिस्थिति बनी है, इसपर भी विचार विमर्श कर रहे हैं।

हो चुकी हैं। कमजोर और गरीब लोगों की जमीन हड़पने में भी वह आगे रहे हैं। ऐसे व्यक्ति को भाजपा ने टिकट देकर राजनीति में विपरीत परिस्थिति पैदा कर दी है। उन पर मनी लाँड्रिंग का केस

भाजपा को नहीं मिलेगी एक भी सीट : हेमलाल

साहिबगंज। झामुमो के वरीय नेता व पूर्व मंत्री हेमलाल मुर्मू ने शुक्रवार को चौधरी विपक्ष पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि जननायक हेमंत सोरेन को गिरफ्तार हुए 60 दिन हो गये लेकिन उन पर अभी तक कोई आरोप सिद्ध नहीं हुआ है। राजनीतिक षडयंत्र के तहत हेमन्त सोरेन को जेल में डाला गया है। झामुमो ये बात पहले से कह रही है। अब खुल कर बात सामने आ रही है कि चुनाव तक उनको अंदर रखने की साजिश रची गई है ताकि झारखंड के 14 पर भाजपा कब्जा जमा सके। हेमंत के जेल जाने से झामुमो के लिये लोगों में सहानुभूति बढ़ी है। इस बार सीट जनता भाजपा को यहां एक भी सीट नहीं देगी। गठबंधन यहां 14 सीट जीतेगी। वह शुक्रवार को यहां एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे। हेमलाल ने कहा कि विपक्ष जिन सवालों को उठा रहा है उसका जवाब तो हेमन्त ने अपने



काम से पहले ही दे दिया है। 1932 खतियान व सरना कोड को पारित कर गया केन्द्र सरकार व राज्यपाल को भेज दिया है। हेमलाल ने भाजपा में शामिल हुई सीता सोरेन पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, सीता सोरेन कहती हैं कि उन्हें पार्टी व परिवार में सम्मान नहीं मिला। सीता सोरेन 15 वर्षों से जामा की विधायक आखिर किसके सम्मान व सहानुभूति से हैं। सीता सोरेन स्वर्गीय दुर्गा सोरेन की जामा में आदमकद प्रतिमा नहीं लगाने की बात करती हैं, जबकि खुद वहां की विधायक हैं। उन्हें विधायक मद से ही प्रतिमा लगवा लेनी चाहिए थी। हेमलाल ने कहा कि दुर्गा सोरेन उनके व पार्टी के आदर्श हैं। उनकी प्रतिमा लगनी ही चाहिए। 15 वर्षों से विधायक बनी रहीं, आज भाजपा में जा कर नई-नई बात कर रही हैं। उनका ये निर्णय उन्हें घाटे में ले जायेगा। भाजपा का कारनामा देश व राज्य देख रहा है।

वाहन चेकिंग में 22 लाख जब्त

बारियातू। आदर्श अचार सहिता को लेकर चेकिंग अभियान मे बारियातू पुलिस ने 21 लाख 95 हजार रुपए जब्त किये गये। इनकम टैक्स विभाग को जानकारी दी गई। एसडीपीओ आशुतोष कुमार सत्यम ने बताया की एसपी अंजनी अंजन के निर्देश भाग को लोकतंत्र का महापर्व लोकसभा चुनाव 2024 को स्वतंत्र निष्पक्ष एवं भय मुक्त बनाने के लिए लातेहार पुलिस कृत संकल्पित है। लगातार 24 घंटे बारियातू थाना

गेट के सामने गठित इंटर डिस्ट्रिक्ट चेकनाका पर चेकिंग की जा रही है। उक्त चेकनाका पर प्रथम पाली में प्रतिनियुक्ति पुलिस पदाधिकारी सअनि द्वारिकानाथ पांडेय द्वारा थाना एवं चेकनाका पर प्रतिनियुक्ति थाना सशस्त्र बल के द्वारा थाना प्रभारी राजा दिवालर के नेतृत्व में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बालूमाथ आशुतोष कुमार सत्यम के अनुवीक्षण में चेकिंग के दौरान एक काले रंग के टाटा नक्सैन चार पहिया वाहन जेएच 02 एमबी

3719 से शुक्रवार को 21 लाख 95 हजार रुपए नगद रखा हुआ मिला। इस आलोक में अग्रतर विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही है। आपकी बताते चलें कि लातेहार पुलिस द्वारा आदर्श आचार सहिता लागू होने के बाद से अबतक कुल 26 लाख 11 हजार रुपए नगद बरामद किया जा चुका है। लगभग 3 करोड़ 60 लाख रुपए मूल्य का अफीम डोडा नरकोटीक ड्रग्स, गांजा जप्त किया जा चुका है।

शिक्षक से गाली गलौज व मारपीट मामले में दो पर मामला दर्ज

जख्मी कर देने तथा पॉकेट से रुपया ले लेने का मामला प्रकाश में आया है

खबर मन्त्र संवाददाता

पाकुड़। महेशपुर थाना क्षेत्र के सीलमपुर गांव में 26 मार्च को एक दिव्यांग शिक्षक के साथ दो व्यक्तियों के द्वारा एकमत होकर गाली गलौज करते हुए जान से मारने की नीयत से मारपीट कर जखमी कर देने तथा पॉकेट से रुपया ले लेने का मामला प्रकाश में आया है। वहीं वादी सीलमपुर गांव निवासी मुकेश भगत ने थाने में दिए गए आवेदन में उल्लेख किया है कि चौदपुर गांव स्थित

खबर मन्त्र संवाददाता

पाकुड़। 29 मार्च ईसाई धर्म से जुड़ा प्रमुख दिन है। इस दिन प्रभु यीशु के बलिदान को याद किया जाता है। इस दिन दुनिया में जहां भी ईसाई समाज के लोग रहते हैं। अपने आसपास के गिरजाघर में प्रार्थना सभा का आयोजन करते हैं। पाकुड़ जिले के भी सभी गिरजा घरों में विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इसे शोक दिवस के तौर पर भी मनाया जाता है। गुड फ्राइडे को ग्रेट फ्राइडे, ब्लैक फ्राइडे या होली फ्राइडे भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि आज से 2000 वर्ष पूर्व यरूसलम के गैलिली प्राप्त में ईसा मसीह नाम के एक संत हुआ करते थे। किंतु कुछ

समुदाय विशेष के लोग गुड फ्राइडे पर गिरजाघर में की प्रार्थना



लोग उनसे बहुत ही चिढ़ते थे। मानव जाति की रक्षा के लिए प्रभु यीशु अपना सर्वस्व बलिदान दिया। यीशु को यहूदी शासकों ने शारीरिक और मानसिक रूप से कई यातनाएं दीं। उन्हें सूली पर चढ़ाया गया। उन पर कौल ठोकवाया गया। जिस दिन यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था वो दिन शुक्रवार था। इसलिए

यह दिन गुड फ्राइडे के रूप में मनाया जाता है। इसी वजह से ईसाई धर्म के लोग गुड फ्राइडे के दिन प्रभु यीशु के बलिदान को याद करते हैं। यह दिन ईसाई धर्म के अनुयायियों के लिए बेहद ही खास होता है। इस दौरान ईसाई समुदाय के लोग गिरजाघरों में जाकर प्रार्थना करते हैं। साथ ही प्रभु यीशु की याद में

ट्रेन से कटकर युवक की मौत, सिर गायब

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। नगर थाना की पुलिस ने शुक्रवार की सुबह रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर पुल से सटे समीप पोल नंबर 70/10 के पास से एक युवक का धड़ बरामद किया। सिर की तलाश के लिए पुलिस ने दो किलोमीटर के परि्या को खंगाला, लेकिन कुछ पता नहीं चला। कपड़ों से धरवालोंने ने शव की शिनाख्त की। मृतक 21 वर्षीय आकाश मंडल दुधानी के नाम मंदिर मोहल्ले का रहने वाला था। पिता विजय मंडल ने किसी पर शक जाहिर नहीं किया है। पुलिस ने यूडी केस दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम कराया। अशोषी मानसिक रूप से बीमार था और गुरुवार को ही रांची से इलाज कराकर घर लौटा था। सुबह करीब नौ बजे ट्रेक के समीप से



गुजर रहे लोगों की नजर घड़ पर पड़ी तो इसकी जानकारी नगर थाना की पुलिस को दी। इसके बाद एसडीपीओ विजय महतो और नगर थाना प्रभारी अमित लाकड़ा मौके पर पहुंचे। दोनों ने शव कब्जे में लेकर छानबीन शुरू की। इसी बीच एसपी पीतांबर सिंह खेरवार भी स्थल पर पहुंच अपने स्तर से छानबीन किया। एसपी के निर्देश पर पुलिस ने सिर की तलाश में दो किलोमीटर में फैले

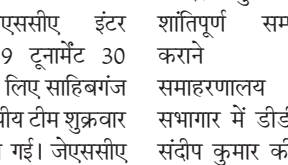
पहाड़ और जंगल में सर्च अभियान चलाया। करीब दो घंटे की मशकत के बाद सिर का पता नहीं चला।

कपड़ों से हुई शव की शिनाख्त

शव बरामद होने के बाद लोगों ने इसे इंटरनेट मीडिया में पोस्ट कर दिया। मृतक के भाई ने जब मृतक की शर्ट देखी तो भाई के रूप में पहचान की। दोपहर घर के लोग अस्पताल पहुंचे और शव की

शिनाख्त की। प्लंबर का काम करने वाले पिता विजय मंडल का कहना था कि मंझला बेटा आशीष तीन साल से मानसिक रोग से ग्रस्त था। कई जगह इलाज कराने के बाद ठीक नहीं हुआ। एक साल से रांची के कफिके में इलाज चल रहा था। गुरुवार को कफिके में दिखाने के बाद धनबाद करीब सात बजे घर लौटे। रात में बेटा खाना खाकर सो गया। सुबह करीब साढ़े चार बजे बेटे ने कहा कि टहलने जा रहा है। इसके बाद वापस नहीं आया। कहा कि बेटे की किसी से दुश्मनी नहीं है। वह अक्सर घर से भाग जाता था। कई बार ट्रेन से भागलपुर तो कभी हंसडीहा चला गया। ट्रेन पर चढ़ने के क्रम में उसके साथ यह हादसा हो गया। इसमें किसी का दोष नहीं है। पिता के बयान पर यूडी केस दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम कराया गया।

साहिबगंज की अंडर-19 क्रिकेट टीम गोड्डा खाना



साहिबगंज। जेएससीए इंटर डिस्ट्रिक्ट अंडर-19 टूर्नामेंट 30 मार्च-04 अप्रैल के लिए साहिबगंज जिला की 15 सदस्यीय टीम शुक्रवार को गोड्डा खाना हो गई। जेएससीए डिस्ट्रिक्ट सब कमिटी चेयरमैन चंद्रशेखर सिन्हा उर्फ बोदी सिन्हा ने बताया कि साहिबगंज की टीम का गोड्डा, दुमका व जामताड़ा के साथ मैच होगा। चंद्रशेखर प्रसाद सिन्हा उर्फ बोदी सिन्हा व जिला क्रिकेट संघ के पदाधिकारियों ने टीम को शुभकामना देकर बस स्टैंड से खाना दिया। मौके पर जिला क्रिकेट संघ सचिव अंकुर सिन्हा, सतीश सिन्हा, मो अशफाक आलम, अमित तिवारी, राकेश गुप्ता, प्रभाकर सिंह, सहित अन्य मौजूद थे।

बंद पड़े केपटी पावर प्लांट के स्टोर में लगी भयंकर आग

स्टोर का दरवाजा तोड़ कर आग पर पाया जा सका काबु



कल पुजों पर चोरो ने हाथ साफ करना शुरू कर दिया। इस बीच सुरक्षा कर्मियों और चोरो के बीच अनेको बार मुठभेड़ भी हुईं मगर हर बार चोरो के समूह द्वारा सुरक्षाकर्मियों को ही नुकसान पहुंचाया गया। इसी बीच एकाएक उक्त प्लांट में भयंकर आग लग जाती है और देखते ही देखते आग

भयंकर रूप ले लेती है जिसके जद में आकर प्लांट में लगे अधिकशः किमती सामान जल कर तहस नहस हो जाता है। इस घटना के बाद मानो सीसीएल ने इस प्लांट को एक तरह से लावारिस छोड़ दिया और प्लांट की सुरक्षा हटा लिया गया। फिर तो मानो चोरो के लिए यह प्लांट चारागाह बन गया

और प्लांट से चोरी की जगह लूट शुरू हो गई। बीच बीच में सीसीएल के सुरक्षा कर्मियों और स्थानीय पुलिस द्वारा संयुक्त कार्रवाइयों के दौरान कई बार भारी मात्रा में लोहा बरामद किया गया। इतना ही नहीं चोरो द्वारा प्लांट से लोहा काटने के लिए गैस कटर और चोरी का लोहा ढोने के लिए इस्तेमाल होने वाले ट्रेक्टर को भी जप्त किया गया। इस मामले में कईयो की गिरफ्तारी भी हुईं मगर सच यही था कि भीतर ही भीतर यह प्लांट लोहा चोरी के वजह से खंडहर मे तब्दील हो चुका था अगर कुछ बचता था तो वो सिर्फ प्लांट के स्टोर रूम मे बंद कुछ सामान थे। मगर इस स्टोर में भी बीते देर रात अचानक से आग लग

खबर मन्त्र संवाददाता

गई जिसे काफ़ी मसकत के बाद सीसीएल प्रबंधन द्वारा स्टोर का दरवाजा तोड़ कर आग पर काबु पाया जा सका मगर तब तक स्टोर में रखे सारे सामान जल कर राख हो चुकी थी। वहीं इस घटना के संबंध में जितनी मुंह उतनी बात वाली कहावत है। कुछ का कहना है कि चोरो ने इस घटना को अंजाम दिया है तो कुछ का कहना है कि सीसीएल प्रबंधन अपनी लापरवाही और प्लांट के प्रति उपेक्षा को छुपाने के लिए साजिश की है ताकि इस घटना के बाद हिसाब किताब का झंझट ही समाप्त हो जाये। बहरहाल मामला कुछ भी हो मगर यह पावर प्लांट अंगर पुरी तरह खोखला और खंडहर हो चुका है यादगार के तौर पर सिर्फ अब प्लांट की चिमनी शेष खड़ी है।

भाजपा के कई लोगों के बीच है नाराजगी

कृष्णा अग्रवाल ने कहा कि धनबाद में जब व्यापारियों को प्रिस खान से धमकी मिल रही थी, तो धनबाद में धरना भी दिया था। उसी समय उन्होंने भाजपा से इस्तीफा दे दिया था। लेकिन पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री ने इस्तीफा स्वीकार नहीं किया। इसलिए वह झाजपा के साथ भी हैं और नहीं भी हैं। पार्टी के लोगों से बातचीत होती है। भाजपा के ही पक्ष में वोट करते आये हैं, लेकिन पार्टी के निर्णय से नाराजगी थी, जिसे प्रदेश अध्यक्ष को चार पत्रे का पत्र लिख कर बता दिया था। उसके आघ घंटे बाद मुझे दुल्लू महतो का फोन आया। उन्होंने तीखी बहस की और धमकाने की भी कोशिश कर रहे थे। इससे वह आहत हैं। उन्होंने खुद मुझे फोन किया था और फोन भी उन्होंने ही काटा। ऐसा नहीं है कि नाराजगी सिर्फ मेरी है, पार्टी में कई अन्य लोग में भी इस निर्णय से नाराज हैं। कई लोगों का फोन भी आया था। लेकिन किसी ने कहने की हिम्मत नहीं दिखाई लेकिन मैंने पार्टी के समक्ष कह दी।

बनाता है। निष्पक्ष चुनाव की नीति पर ऐसे लोग पानी फेर सकते हैं। चुनाव आयोग को स्वतः संज्ञान लेना चाहिए। आयोग को ऐसे लोगों पर नजर रखने के लिए एक टीम का गठन करना चाहिए।

24 घंटे के अखंड हरि कीर्तन का आयोजन

बेरमो। फुसरो नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत करगली गेट पोस्ट आफिस कॉलोनी स्थित शिव मंदिर में 24 घंटे का अखंड हरि कीर्तन का आयोजन किया गया। पुजारी नंद कुमार पांडेय ने यजमान अनिल कुमार सिंह को विधि विधान के साथ पूजा अर्चना करवा कर अखंड हरि कीर्तन की शुरूआत कराया। जिसके बाद भजन मंडली के ज्ञान सिंह, राजू दुबे, अनिल पाठक, रामप्रवेश, तुलसी, सुपन, जीवायन, आदि के द्वारा हरे राम हरे कृष्ण के गूंज से पूरा क्षेत्र गुंजायमान होता रहा। इस अखंड हरि कीर्तन में महिलाओं की भी अच्छी खासी भागीदारी देखी गई। मौके पर अभय कुमार सिंह, सहित कई लोग उपस्थित थे।

जिला प्रशासन के अधिकारी हुए ईवीएम वीवी पेट संचालन से प्रशिक्षित

बोकारो। लोकसभा आम निर्वाचन 2024 को निष्पक्ष पारदर्शी सुचारू व शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने हेतु समाहरणालय



सभागार में डीडीसी संदीप कुमार की अध्यक्षता में संपन्न ईवीएम वीवीपेट के सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सामग्री कोषांग की वरीय नोडल मेनका ईवीएम कोषांग के नोडल पदाधिकारी मो शफीक आलम कार्मिक कोषांग की नोडल पदाधिकारी शालिनी खालखो ईवीएम कोषांग के सहयोगी पदाधिकारी पीरूपू समेत विभिन्न कोषांग के पदाधिकारी कर्मी एवं गोमिया बेरमो बोकारो चंद्रनिकियारी विधानसभा क्षेत्र के सहायक निवाची पदाधिकारी आदि उपस्थित थे। मौके पर राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर ने कहा कि वे मतदान कार्मिकों की भांति ईवीएम वीवीपैट संचालन में पूर्ण रूप दक्षता हासिल करें। उन्होंने कहा कि दायित्वां के निर्वहन में जो भी शंका हो उसका तत्काल समाधान करा लिया जाए ताकि निर्वाचन प्रक्रिया को सुचारू व निर्बाध रूप से सम्पन्न कराया जा सके। राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर ने सैद्धांतिक प्रशिक्षण में बारीकियों को समझाते हुए ईवीएम प्रशिक्षण के दौरान मतदान कर्मियों को विभिन्न प्रपत्र भरने सहित पूरी प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए हैंड्स ऑन प्रशिक्षण दिया।

बोकारो संयंत्र में आयोजित सुझावों के मेले में कर्मियों ने दिए अपने विचार

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग के तत्वावधान में बोकारो स्टील प्लांट के विभिन्न विभागों में सुझाव मेला का आयोजन किया गया। औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष जीएम हिमांशु गुप्ता व प्रबंधक प्रीति प्रिया के नेतृत्व में एसएमएस 2 एवं सीसीएस विभाग में आयोजित सुझाव मेला का उद्घाटन सीजीएम अशोक कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रबंधक एके तिवारी द्वारा किया गया। प्लांट के केंद्रीय अनुसंधान के भारी अनुसंधान मैकेनिकल विभाग में सुझाव मेला का उद्घाटन सीजीएम वीके सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विभाग के जीएम सके मंगुआल के साथ पीके पांडा सोके गुप्ता एसके मुखर्जी शामिल थे। सुझाव मेला में लगभग 145 सुझाव संयंत्र के कर्मियों के द्वारा दिया गया।



96.8 करोड़ मतदाता

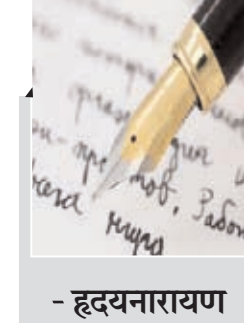
भारतीय जनतंत्र पूर्वजों के सचेत कर्मों का प्रसाद

खास बात

एकीकृत मानव दर्शन

देश में लोकसभा के पहले चरण का चुनाव 19 अप्रैल को होगा, दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल, तीसरे चरण के लिए 7 मई, चौथे चरण के लिए 13 मई, पांचवें चरण के लिए 20 मई, छठे चरण के लिए 25 मई और सातवें चरण के लिए 1 जून को मतदान होगा। नतीजों की घोषणा 4 जून को होगी। लोकतंत्र के सबसे पड़े पर्व में इस बार देश भर में 96.8 करोड़ मतदाता अपने मत का प्रयोग करेंगे, जिनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 49.7 करोड़ और महिला मतदाताओं की संख्या 47.1 करोड़ है। इसमें फरस्ट टाइम वोटर्स की संख्या 1.82 करोड़ है। इस बार यंग वोटर्स में 21 से लेकर 29 साल के वोटर्स के आंकड़े भी शामिल किए गए हैं, जिनमें 19.74 करोड़ मतदाता अपने मत का प्रयोग करेंगे। इसके साथ ही बुजुर्ग वोटर्स की संख्या भी चुनाव आयोग ने बताई है, जिसमें 85 साल से ज्यादा उम्र के 82 लाख मतदाता हैं। वहीं, 100 साल की उम्र से ज्यादा 2.18 लाख मतदाता हैं। इस बार ट्रांसजेंडर्स मतदाताओं की संख्या 48 लाख है। 88.4 लाख दिव्यांग मतदाता हैं। इसके साथ ही 2.18 लाख सर्विस इलेक्टर्स मतदाता हैं। इस बार महिलाओं के भी बढ़-चढ़कर लोकतंत्र के इस सबसे बड़े पर्व में हिस्सा लेने की उम्मीद है। 18 से 19 साल की महिला वोटर्स की संख्या इस बार 85.3 लाख है। इसके साथ ही देशभर के 12 राज्य ऐसे हैं, जहां पर महिला वोटर्स का अनुपात पुरुषों के मुकाबले 1,000 हजार से ज्यादा है। मुख्य चुनाव आयुक्त ने बताया कि बड़े-बड़े सोलिविटीज से भी कहा गया है कि वह व्यूथ को ज्यादा से ज्यादा मोटिवेट करें और लोकतंत्र के इस सबसे बड़े पर्व में अपनी भागीदारी के लिए आगे आने के लिए प्रेरित करें। इस बार जो नए मतदाता हैं, वह हमारे एंबेसडर्स के तौर पर होंगे।

एक साथ चुनाव पर विचार करने वाली समिति की रिपोर्ट सार्वजनिक हो गई है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में इस मुद्दे पर अध्ययन करने के लिए एक समिति बनाई गई थी। समिति ने अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंप दी है। इस रिपोर्ट का विरोध भी प्रारम्भ भी हो गया है। एक साथ चुनाव का विषय देश के हित में है। लेकिन इस रिपोर्ट की सिफारिशों का विरोध भी हो रहा है। बताया जाता है कि यह रिपोर्ट 18000 पृष्ठ की है। इसे ठीक से पढ़े जाने और तथ्यों के विवेचन का काम बड़ा है। विरोध करने वाले भी संभवतः इस रिपोर्ट को पूरी तौर पर पढ़े बिना ही अपने निष्कर्ष निकाल रहे हैं। भारतीय जनतंत्र पूर्वजों के सचेत कर्मों का प्रसाद है। सभा समितियां ऋषेदिक काल में ही थीं। संविधान निमाताओं ने ब्रिटिश तर्ज का संसदीय जनतंत्र अपनाया। अनेक संवैधानिक संस्थाएं गढ़ी। केन्द्रीय स्तर पर संसद बनी। केन्द्र को संसद के प्रति जवाबदेह बनाया। राज्य सरकारों विधान मण्डलों के समक्ष जवाबदेह बनीं। संसद व विधान मण्डल के चुनाव के लिए नियुक्त निर्वाचन आयोग (अनुच्छेद 324) बना।



- हृदयनारायण

निजीकरण को सही तरीके से अंजाम देना एक ऐसी चुनौती है जिसे विकसित देश भी अछी तरह अंजाम नहीं दे सके हैं। निजीकरण का लक्ष्य है परिस्परितियों का किफायती इस्तेमाल करना। इरादा यह भी है कि सरकार समुचित राजस्व जुटा सके। इन दो लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सरकार को सही मूल्यांकन करना चाहिए। यह आसान नहीं है। बिक्री का समय सही होना चाहिए।

सड़कों से विकास

देश में 2020-21 में राजमार्गों का निर्माण 36.5 किलोमीटर प्रतिदिन के स्तर पर पहुंच गया। यह राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की सबसे तेज रफ्तार है। गडकरी ने कई टवीट कर कहा कि भारत ने 2.5 किलोमीटर की चार लेन की कंक्रीट की सड़क का निर्माण सिर्फ 24 घंटे में पूरा कर एक विश्व रिकॉर्ड बनाया है। इसके अलावा 26 किलोमीटर की एक लेन की बिटुमन की सड़क का निर्माण सिर्फ 21 घंटे में पूरा किया गया है। दिल्ली मुम्बई राजमार्ग अगले साल से चालू हो जाएगा। इसमें ठेकेदारों को समर्थन, ठेका प्रावधानों में ढील, उप-ठेकेदारों को सीधे भुगतान तथा ऑन-साइट मजदूरों के लिए खाने-पीने के अलावा चिकित्सा की सुविधा शामिल है। गडकरी ने कहा कि इन परियोजनाओं में गुणवत्ता नियंत्रण के लिए निर्माण उच्च भारतीय सड़क कांग्रेस (आईआरसी) के मानदंडों के अनुरूप किया जा रहा है। नीति दिशानिर्देशों के अद्यतन को गुणवत्ता नियंत्रण क्षेत्र बनाया गया है। देश की सड़कों को विश्व स्तरीय और बेहतर बनाने का काम तेजी से चल रहा है लेकिन झारखंड और बिहार जैसे राज्य आज भी राष्ट्रीय सड़क आसत से काफी पीछे हैं। इन दोनों राज्यों में सड़क की परियोजना पांच से दस वर्ष तक देर से चल रही है। दूसरी ओर केन्द्र सरकार का कहना है कि इन राज्यों में भूमि के कानून और अधिग्रहण की प्रक्रिया में देर से सड़क परियोजना समय से पूरा नहीं हो पाती है। आज सड़क विकास की गति को तेज करती है। यूपी, महाराष्ट्र, और गुजरात में आठ-आठ लेन की सड़क बन रही है जिससे उन राज्यों में निवेश और रोजगार में तेजी आ रही है। आज सड़कों से ही विकास का पैमाना तय हो रहा है। लेकिन झारखंड, बिहार में सिर्फ घोषणाओं की खबर ही चर्चा में है।

संविधान सभा में निर्वाचन आयोग के कृत्यों पर बहस हुई। आयोग को कर्मचारी अधिकारी देने का प्रश्न उठा। डॉ. आम्बेडकर ने कहा, "आयोग के पास कम काम होगा।" शिबन् लाल सक्सेना ने कहा कि, "संविधान में निर्धारित नहीं है कि अमेरिकी तर्ज पर यहां 4 वर्ष में निर्वाचन अवश्य होगा। संभव है कि केन्द्र व राज्यों के निर्वाचन एक साथ न हों। तब हर समय कहीं न कहीं निर्वाचन होता रहेगा।" उनकी आशंका सच निकली। सम्प्रति भारत चुनाव व्यस्त देश है। सभी लोकसभा चुनाव तो बहुधा राज्य विधानसभाओं के निर्वाचन। त्रिस्तरीय पंचायती चुनाव व नगर निकाय निर्वाचन भी अकसर होते रहते हैं। नीति आयोग ने लोकसभा व विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने का सुझाव दिया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी इसी विचार के हैं। 2014 के चुनाव में भाजपा ने भी घोषणा पत्र में यही विचार व्यक्त किया था।

प्रधानमंत्री ने सभी दलों से अपील की थी। कहा था, "एक साथ चुनाव से दलों का नुकसान होगा। हमें भी नुकसान होगा लेकिन इसे संकीर्ण राजनैतिक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए।"

1951-52 में पहली लोकसभा व राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ हुए थे। 1967 तक दोनों के चुनाव साथ-साथ हुए थे। 1968 से यह क्रम टूट गया। दरअसल संविधान निमाताओं ने सरकारों का कार्यकाल नहीं सुनिश्चित किया। यहां सरकारों का जीवन संसदीय बहुमत की डोर से बंधा हुआ है। डॉ. आम्बेडकर ने संविधान सभा में स्पष्ट किया था कि सरकारी जवाबदेही को स्थिरता (कार्यकाल) की तुलना में ऊपर रखा गया है। सदन में सरकारों की संवैधानिक

जवाबदेही है। इस आधारभूत सिद्धांत में सरकारों का कार्यकाल अनिश्चित है। यहां बहुमत स्थायी नहीं होता। दल-बदल प्राविधान में भी छेद किए गए। थोक दल बदल को दल टूट कहा गया। तमाम सरकारें अल्प मृत्यु की शिकार हुईं। साथ-साथ चुनाव का क्रम भंग हो गया।

साथ-साथ चुनाव से राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय संदर्भों से जुड़ने की ओर बढ़ेंगे और क्षेत्रीय दलों की दृष्टि राष्ट्रीय होगी। लेकिन कुछ दलों की चिन्ता बड़ी है। बीते कुछेक वर्षों में राष्ट्रीयता का भाव देशव्यापी हुआ है। माकपा, भाकपा जैसे वामपंथी दल स्वयं को अंतरराष्ट्रीय विचारधारा का दल बताते हैं लेकिन उनका प्रभाव क्षेत्र राज्यस्तरीय भी नहीं बचा। चुनाव आयोग ने बेशक केन्द्रीय विधि

मंत्रालय के एक संदर्भ के जवाब में दोनों चुनाव एक साथ कराने पर बहुत पहले ही सहमति व्यक्त की थी लेकिन सभी दलों की सहमति प्राप्त करना आसान नहीं। कुछेक दल वर्तमान स्थिति को ठीक मानते हैं और चुनाव अलग-अलग ही चाहते हैं।

लोकसभा व विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने का विचार आदर्श है। लोकसभा का चुनाव अलग व देश की सभी विधानसभाओं के चुनाव अलग से कराने का विचार भी आया था। कुछ दल इस विचार को उचित मान सकते हैं। लेकिन दोनों ही स्थितियों में संविधान संशोधन की आवश्यकता होगी। संशोधन में केन्द्र व राज्य सरकारों को सुनिश्चित कार्यकाल देना होगा। सदन में बहुमत खो जाने की स्थिति में सरकारी कार्यकाल की समस्या का निराकरण जरूरी होगा। दसवीं अनुसूची के अनुसार दल से भिन्न मतदान के कारण सदन की सदस्यता खो जाने की विधि प्रवर्तन में है। मूलभूत प्रश्न किसी भी कारण से सदन में बहुमत खो चुकी सरकार को पूरा कार्यकाल देने की नई व्यवस्था का है। क्या वैकल्पिक सरकार बनाने का अधिकार संसद या विधानसभा को दिया जा सकता है? क्या हमारा दलतंत्र स्थिर कार्यकाल और संवैधानिक जवाबदेही को एक साथ चला सकता है? क्या संवैधानिक जवाबदेही को छोड़कर स्थिरता को ही अपनाया जा सकता है? अमेरिका में ऐसा ही है।

प्रश्न देर सारे हैं। ऐसे प्रश्नों का उत्तर संविधान संशोधन और वैधानिक नैतिकता से ही जुड़ा हुआ है। डॉ. आम्बेडकर ने संविधान सभा में इतिहासकार ग्रेट को उद्धृत किया था। "वैधानिक नैतिकता" का अर्थ संविधान और उसकी संस्थाओं के प्रति निष्ठाभाव है। ग्रेट ने लिखा है कि समाज की वैधानिक नैतिकता ही विधान की शक्ति है। भारत का जनसामान्य विधान का आदर करता है लेकिन दलतंत्र में वैधानिक नैतिकता का अभाव है। इसलिए सरकारें बहुधा अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पातीं। तब लोकसभा और विधानसभा के मध्यावधि चुनाव का कोई विकल्प नहीं होता। संसदीय जनतंत्र का मुख्य उपकरण दलतंत्र है। जनतंत्र खूबसूरत विचार है। दलतंत्र ही इसे गतिशील बनाता है। समाज व्यवस्था निरंतर परिवर्तनशील है। लेकिन राजनैतिक व्यवस्था में राजनैतिक सुधार की गति उन्मत्तल, नक्सलवाद, समाज में मानसिक और शारीरिक तनाव की समस्या, आतंकवाद, नशीली दवाओं का अत्यधिक उपयोग, आत्महत्या, राजनीतिक शक्ति का ध्वंसीकरण, धर्म परिवर्तन की साजिश, पारिवारिक व्यवस्था के अवमूल्यन के कारण तलाक दर में वृद्धि, क्या इन चिंताओं का कोई समाधान है? क्या वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण हो रहा है, क्या यह वास्तविक विकास है?

साल का नया मास, शुरू हुआ अब, दिन - दुगुने बीत गए, पता नहीं कब राशि है तुला, और तराजू है संग से कमीज रही ढीली, इसतुलन हुई तंग ! - अमिताभ बच्चन

भाजपा कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी एवं वहाँ मौजूद अन्य सम्मानित नेताओं/कार्यकर्ताओं से मुलाकात हुई। चुनावी रणनीतियों पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। आज जब हम एक संगठन में साथ हैं तब भी, उनका सदैव स्नेह मिलता रहा है। - सीता सोरेन

आपके ट्वीट

अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूंकने वाले, अमर शहीद नीलाम्बर - पीताम्बर जी के शहादत दिवस पर विनम्र श्रद्धांजलि।
झारखंड के वीर शहीद अमर रहे !
जय झारखंड !!
- चंपई सोरेन, सीएम

सत्य की ताकत

धर्म-प्रवाह

सामी सत्यानन्दजी परमहंस

सुलोचना ने राम से कहा कि मैं आपको आर्शिवाद देती हूँ कि जैसे आप अयोध्यापति है वैसे ही आप लंकापति भी होंगे। जब तक धरती,सूरज, चाँद रहेंगे संसार में आपकी कीर्ति अमर रहेगी और मुन्ध्या आपके नाम का जाप करने को बाध्य रहेंगे। हे रामचन्द्र हे कौशलपति सच्चाई जग को प्यारी है कौशल जिस तरह तुम्हारा है लंका उस तरह तुम्हारी है। प्रसंग का अध्यात्म इस प्रसंग का मूल रूप से तीन सबक है। पहला यह कि कहा जा रहा था कि मेघनाथ यज्ञ कर रहा है। तो यज्ञ क्या बढ़िया है? भले यज्ञ को अच्छा कहा जाए क्या? यज्ञ के माने क्या होता है? मेघनाथ भी यज्ञ कर रहा था। यज्ञ अच्छा भी हो सकता है खराब भी हो सकता है। उसका दोनों ओर लक्ष्य जाएगा। यज्ञ को धर्म नहीं कह सकते हैं। धर्म के नीचे यज्ञ है। यज्ञ का अर्थ होता है जो ज्ञान की ओर ले जाए। इसमें दो अक्षर होते हैं। य और ज्ञ। जिसका लक्ष्य ज्ञान की ओर हो उसे यज्ञ कहते हैं। अनेक तरह के यज्ञ होते हैं। प्रव्यमय यज्ञ होता है जिसमें वस्तुओं की आहुति दी जाती है। योग यज्ञ कहते हैं जिसमें प्राण और अपान की क्रिया की जाती है। उसी तरह स्वाध्याय यज्ञ है। अपने ज्ञान का नाश किया जाता है और बुद्धि को विकसित किया जाता है। यह स्वाध्याय यज्ञ है। यज्ञ का सीधा मतलब है कि जो परमात्मा की ओर ले जाए जो ज्ञान की ओर ले जाए। मेघनाथ जो कर रहा था वह कभी भी ज्ञान की ओर नहीं ले जा रहा था। उसका फल तामसो है। तो यज्ञ दोमुंहा होता है दोनों ओर ले जाता है। इसका लक्ष्य क्या है ये देखा जाता है। इस पूरे प्रकरण में दूसरी बात भी थी। (ब्रह्म विद्यालय एवं आश्रम)

सकता है। उसका दोनों ओर लक्ष्य जाएगा। यज्ञ को धर्म नहीं कह सकते हैं। धर्म के नीचे यज्ञ है। यज्ञ का अर्थ होता है जो ज्ञान की ओर ले जाए। इसमें दो अक्षर होते हैं। य और ज्ञ। जिसका लक्ष्य ज्ञान की ओर हो उसे यज्ञ कहते हैं। अनेक तरह के यज्ञ होते हैं। प्रव्यमय यज्ञ होता है जिसमें वस्तुओं की आहुति दी जाती है। योग यज्ञ कहते हैं जिसमें प्राण और अपान की क्रिया की जाती है। उसी तरह स्वाध्याय यज्ञ है। अपने ज्ञान का नाश किया जाता है और बुद्धि को विकसित किया जाता है। यह स्वाध्याय यज्ञ है। यज्ञ का सीधा मतलब है कि जो परमात्मा की ओर ले जाए जो ज्ञान की ओर ले जाए। मेघनाथ जो कर रहा था वह कभी भी ज्ञान की ओर नहीं ले जा रहा था। उसका फल तामसो है। तो यज्ञ दोमुंहा होता है दोनों ओर ले जाता है। इसका लक्ष्य क्या है ये देखा जाता है। इस पूरे प्रकरण में दूसरी बात भी थी। (ब्रह्म विद्यालय एवं आश्रम)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में 18 वीं लोकसभा के चुनाव का बिगुल बज गया है। चुनाव आयोग ने सात चरणों में मतदान कार्यक्रम जारी कर दिया है। चार जून को मतगणना की तारीख तय की गई है। सीधी सी बात है कि दोहरा बाद तक 18 वीं लोकसभा की तस्वीर साफ हो जाएगी। खैर यह सब अलग बात है पर विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में चुनावों में महिलाओं की बढ़ती सक्रिय भागीदारी तारीफे काबिल है। गत दो चुनाव में देश की महिला वोटर्स ने नई सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मजे की बात यह भी है कि 2019 के चुनाव में पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला मतदाताओं ने अधिक मुखर होकर मतदान किया। अब तो यह माना जाने

लगा है कि देश के करीब एक दर्जन राज्यों में महिलाओं के वोट ही नई सरकार के गठन में बड़ी भूमिका निभाने वाले हैं। तस्वीर का सकारात्मक पक्ष यह भी है कि मतदान ही नहीं चुनाव में सक्रियता से हिस्सा लेने और उम्मीदवार को जिताने में भी महिलाएं आगे आई हैं। देश के तारीख तय की गई है। सीधी सी बात है कि दोहरा बाद तक 18 वीं लोकसभा की तस्वीर साफ हो जाएगी। खैर यह सब अलग बात है पर विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में चुनावों में महिलाओं की बढ़ती सक्रिय भागीदारी तारीफे काबिल है। गत दो चुनाव में देश की महिला वोटर्स ने नई सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मजे की बात यह भी है कि 2019 के चुनाव में पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला मतदाताओं ने अधिक मुखर होकर मतदान किया। अब तो यह माना जाने

नवम्बर 2024

खैर सबसे अच्छी बात यह है कि गांव हों या शहर, महिलाएं अब घर की चारदीवारी में कैद रहने वाली या पुरुष के कहे अनुसार मतदान करने वाली नहीं रही हैं। पुरुषों के हां में हां मिलाने वाली स्थिति से बहुत बाहर आ चुकी हैं। संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में महिलाएं सक्रियता से हिस्सा लेने लगी हैं। इस साल देश में 96 करोड़ 88 लाख मतदाता हैं तो इनमें से महिला मतदाताओं की संख्या 47 करोड़ 15 लाख के करीब है। एक मोटे अनुमान के अनुसार पुरुषों की तुलना में करीब दो करोड़ महिला मतदाता कम हैं। यही स्थिति 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान थी। इस सबके बावजूद पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला

मतदाताओं के मतदान का आंकड़ा अधिक है। 2019 के चुनाव में पुरुष मतदाताओं का प्रतिशत 67.02 प्रतिशत रहा तो महिलाओं के मतदान का प्रतिशत 67.18 प्रतिशत रहा। पूर्वोत्तर, हिमाचल प्रदेश, गोवा, बिहार सहित बहुत से प्रदेशों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत अधिक रहा। यह तो रही मतदान की बात तो दूसरी है। पुरुषों के हां में हां मिलाने वाली स्थिति से बहुत बाहर आ चुकी हैं। संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में महिलाएं सक्रियता से हिस्सा लेने लगी हैं। इस साल देश में 96 करोड़ 88 लाख मतदाता हैं तो इनमें से महिला मतदाताओं की संख्या 47 करोड़ 15 लाख के करीब है। एक मोटे अनुमान के अनुसार पुरुषों की तुलना में करीब दो करोड़ महिला मतदाता कम हैं। यही स्थिति 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान थी। इस सबके बावजूद पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला

आते आते इसमें जबर्दस्त बदलाव देखने को मिला। 2019 के चुनाव में महिलाओं द्वारा मोदी में विश्वास व्यक्त करने का आंकड़ा 36 प्रतिशत पहुंच गया। यानी कि 2019 के चुनाव में 36 फीसदी महिलाओं ने भाजपा को वोट दिया। महिलाओं के अधिक मतदान का ही परिणाम रहा कि 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा और नरेन्द्र मोदी को जबर्दस्त बहुमत प्राप्त हुआ। विगत दो लोकसभा चुनाव परिणामों से सबक लेते हुए अब सभी राजनीतिक दल महिला मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने के हर संभव प्रयास में जुट गए हैं। यही कारण है कि महिलाओं को लुभाने वाली योजनाएं की जा रही हैं। केन्द्र की उच्चला योजना, मध्य प्रदेश की लाडली योजना, लखपति लाडली योजना, महिला मुखिया को नकद राशि और मुफ्त बस यात्रा का करिश्मा देखा जा चुका है।

कार्टून वर्ल्ड

चौ नयातना का शिकार लड़कियां...

कई न मूर्खों डेट ऑफ कौन

आखिर क्यों जरूरी है नागरिकता संशोधन कानून ?

मुनीष मिश्रा

मोदी सरकार ने बहुप्रतिक्षित नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। इसी के साथ देश में अब सीएए लागू हो गया है। हम यहां यह समझने की कोशिश करेंगे आखिर यह क्यों जरूरी है। साल 2020 में देशभर में सीएए के खिलाफ प्रदर्शन हुए थे। इन प्रदर्शनों में कई ऐसे लोग भी थे जिन्हें कानून की कम या गलत जानकारी थी। इसलिए आइए समझते हैं कि सीएए लागू होने से क्या बदलेगा। आगामी लोकसभा चुनाव से ठीक पहले मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। इसी के साथ देश में अब सीएए

सामयिक

लागू हो गया है। सीएए के अमल में आ जाने के बाद अब बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए गैर मुस्लिम अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता मिलने का रास्ता साफ हो गया है। साल 2020 में देशभर में सीएए के खिलाफ प्रदर्शन हुए थे, इसलिए आइए समझते हैं कि सीएए लागू होने से क्या बदलेगा? तर्कनीकी तौर पर सिटीजनशिप अमेंडमेंट एक्ट यानी सीएए से सिटीजनशिप एक्ट ऑफ 1955 में संशोधन किया गया है। इससे होगा ये कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए उन लोगों को नागरिकता मिल जाएगी जो 31 दिसम्बर, 2014 से पहले किसी न किसी तरह की प्रताड़ना से तंग होकर भारत आए थे। इससे इन

पास किया गया। दो दिन बाद 09 दिसंबर, 2019 को राज्यसभा में भी इस पर मुहर लग गई। दोनों सदन में पास होने के बाद सीएए को 10 जनवरी, 2020 को राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई। हालांकि, इसके लागू में होने में काफी देरी हो गई। इसकी प्रमुख वजह रही देशभर में होने वाले विरोध प्रदर्शन। सरकार ने अपने बयान में कहा है कि सीएए के जरिए मिलने वाली नागरिकता वन-टाइम बेसिस पर ही होगी। यानी कि 31 दिसम्बर, 2014 के बाद गैरकानूनी तरीके से पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों को नागरिकता नहीं दी जाएगी। इस कानून के अमल में आने के बाद भारत के किसी भी नागरिक चाहे

वो किसी भी धर्म का हो, की नागरिकता को कोई प्रभाव नहीं होगा। सीएए की आवश्यकता इसलिए थी क्योंकि हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन और ईसाई अल्पसंख्यक जो दशकों से भारत में आए और देश में बस गए, वे पूर्व-संशोधित नागरिकता कानून के तहत भारतीय नागरिकता हासिल नहीं कर सकते थे। इसके चलते वो भारतीय नागरिकता के कई लाभों से वंचित थे। भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों के आने के कई कारण थे- उत्पीड़न, भेदभाव, शारीरिक असुरक्षा, जबरन धर्म परिवर्तन का खतरा, इत्यादि। आधिकारिक आंकड़े मुस्लिम बहुल पड़ोसी देशों से बड़े पैमाने पर अल्पसंख्यकों के पलायन की गवाही देते हैं।

संस्थापक
स्व. डॉ. अभय कुमार सिंह

वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स
प्रइवेट लिमिटेड के लिए

मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह

द्वारा चिरौंदा, बोडैया रोड, रांची
(झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

संपादक
अविनाश ठाकुर*

फोन : 95708-48433

पिन: -834006
e-mail
Khabarmantra.city@gmail.com

R.N.J.No.
JHAHM/2013/51797

*पीआरवी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी।
प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।



स्पीड न्यूज

एक अप्रैल से नॉर्थ पोल की यात्रा करेंगे पर्वतारोही सत्यरूप सिद्धांत

भुरकुंडा (रामगढ़)। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए नेवर गिव अप का अटल भाव रखें। यदि कोई शारीरिक कमी है, तो वह भी सफलता में आड़े नहीं आएगी। यह बात प्रसिद्ध पर्वतारोही सत्यरूप सिद्धांत ने कही। सत्यरूप सिद्धांत शुकुवार को अपनी प्रस्तावित नॉर्थ पोल एक्सपैडिशन को लेकर आयोजित वेबिनार को संबोधित कर रहे थे। आइ श्री फाउंडेशन व श्री अरुसेन स्कूल भुरकुंडा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस वेबिनार में सत्यरूप ने अपने पर्वतारोहण के अनुभव को साझा करते हुए नॉर्थ पोल की चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बचपन में वे अस्थमा से ग्रसित थे। ऐसे में सामान्य जीवन भी प्रभावित था। सत्यरूप सिद्धांत ने बताया कि एक अप्रैल से उनकी नॉर्थ पोल की यात्रा साइबेरिया की राजधानी क्रानोयास्क से शुरू होगी। 10 दिनों की स्कीइंग शुरू करते हुए 90 डिग्री उत्तर की ओर 111 किलोमीटर का सफर तय कर उत्तरी ध्रुव पर पहुंचेंगे। मौसम प्रतिकूल होने पर समय लंबा हो सकता है। यात्रा के दौरान तेरते बर्फ पर चलना पड़ता है। पोलर बियर व अन्य बफ़ीले जानवरों का खतरा सबसे अधिक होता है। इस सफर के दौरान कमर में टाईअप किया हुआ खाने-पीने और अन्य जरूरी सामान से भारा बॉक्स के स्लेज को भी खींचना पड़ेगा।

ईसाई धर्मांतरियों ने मनाया गुड फ्राइडे



भुरकुंडा (रामगढ़)। पटेलनगर स्थित कैथोलिक आश्रम चर्च में शुकुवार को ईसाई समुदाय के लोगों ने गुड फ्राइडे का त्योहार मनाया। कोयलांचल के मसीही परिवार के सैकड़ों लोगों ने चर्च में यीशु के बलिदान को याद करते हुए प्रार्थना सभा में शामिल हुए। इस दौरान लोगों ने प्रभु यीशु के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प भी लिया। बताया गया की गुड फ्राइडे ईसाई धर्म के लिए खास पर्व होता है। इस दिन लोग प्रभु यीशु के बलिदान को याद करते हैं। और उनके दिखाए गए शांति और प्रेम के मार्ग पर चलने का वचन लेते हैं। मौके पर फादर थोमस, फादर बरनाबस, फादर सेबरेन लकडा, फादर जेवियर, सिस्टर सरोज, सिस्टर सुमती टोपो, प्रीति खलखो, पात्रिक मिंज, सुधीर मिंज, अनिश बारा, बासिल कुजुर, राजेश पांडेवानी, जुरिस्टन बारा, इरेनियुस गिद्ध, अमन कुजुर, जोसेफ ओडिया, उषा किरण कुमारी, मिलरंड एक्का, प्रीतम तिग्गा, प्रमोद कुजुर, जुलित्ता एक्का, रजनी डुगंडा, रजनी बागे, हेलेन किंडो, आनंद कुमार बरला, अमन तिग्गा, बेरोनिका तोपनो, फुलमनी गुडिया, राशेल तिग्गा, रॉबिन तिग्गा उपस्थित थे।

अंडर -19 क्रिकेट टीम हथी रवाना



रामगढ़। झारखंड क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित अंतर जिला अंडर-19 क्रिकेट टूर्नामेंट 2023-24 में भाग लेने के लिए रामगढ़ जिला अंडर 19 की टीम हजारीबाग रवाना हुई। हजारीबाग में कोडरमा, सरायकेला खरसावा, चतरा एवं हजारीबाग के साथ 30 मार्च से प्रारंभ टूर्नामेंट में रामगढ़ जिला की टीम पार्टिसिपेशन करेगी। टीम को रवाना करने के लिए रामगढ़ क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कुमार जैन, सचिव अरुण कुमार राय, कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र साहू, पवन कुमार साहू, कोषाध्यक्ष सूरज प्रसाद, कोच अलोक शर्मा एवं सदस्य महेंद्र राणा उपस्थित में टीम के कप्तान अनिलच्यता अनुपम एवं उप कप्तान राहुल राज, टीम मैनेजर लक्ष्मण कुमार गोलू एवं कोच रोशन सिंह के नेतृत्व में रुद्राक्ष कुमार सिंह, सुजल कुमार, सत्यम कुमार शर्मा, मानस गोयल, युवराज सिंह, रूपम कुमार केशरी, कृष्.नीरज कुमार महतो, प्रिस राज, कशिश मुंडा, देवेश गोयल एवं आशीष कुमार चौबे को शुभकामना देते हुए रवाना किया। अध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने कहा कि अंडर 19 टूर्नामेंट में टीम संतुलित एवं ऊर्जावान है जो बेहतर प्रदर्शन करेगी।

एचीव में नये सत्र के लिए हवन



कुजू। एचीव इंस्टीट्यूशन शिवनगर कॉलोनी सांडी में शुकुवार को नये सत्र के छत्र-छात्राओं के लिए धार्मिक हवन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मौजूद पुरोहित के रूप में आचार्य राकेश पांडेय ने हवन को संपन्न कराया। संस्थान के संचालक अनिल मेहता व संजीव कुमार झा उर्फ बमबम झा ने बताया कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजन से छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों में भी एक नई ऊर्जा का संचार होता है और वह नई उमंग के साथ नए सत्र में पढ़ाई में लग जाते हैं। उन्होंने बताया कि सत्र 2024 - 25 से इस ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को इंटर साइंस की पढ़ाई के लिए रामगढ़ जाने की आवश्यकता नहीं होगी। उन्हें संस्थान के द्वारा ही कम शुल्क में यहीं पर कोचिंग की सुविधा उपलब्ध की जाएगी। मौके पर सदाशिव, नारायण, अनुग्रह, नरेश, विनय, संदीप, चंदन, राहुल, सानू, संजीव, लक्ष्मी, सीमा के अलावा अनेक छात्र छात्राएं शामिल रहे।

फटा पोस्टर निकले पटेल, मनीष के अभियान पर कैसेंगे नकेल

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। काफी जद्दोजहद के बाद इंडिया गठबंधन ने अपना लोकसभा उम्मीदवार हजारीबाग से तय कर दिया है। एक तरफ एनडीए गठबंधन के भाजपा के लोकसभा उम्मीदवार मनीष जायसवाल पिछले दो सप्ताह में पूरे हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में फ्लॉग लगाकर अपने कार्यकर्ताओं को मोटिवेट करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रख रहे हैं तो इधर काफी मंथन के बाद इंडि

हजारीबाग लोकसभा चुनाव क्षेत्र में कांग्रेस और भाजपा के बीच होगा सीधा मुकाबला

गठबंधन ने भाजपा के मांडू विधायक जयप्रकाश भाई पटेल को लोकसभा उम्मीदवार बना दिया है। जयप्रकाश भाई पटेल ने भाजपा को छोड़ कांग्रेस का दामन थाम लिया, जिसके बाद उन्हें टिकट दे दी गयी।

अब हजारीबाग लोकसभा चुनाव में जेपी पटेल कांग्रेस बनाम मनीष जायसवाल भाजपा का मुकाबला होने



वाला है। ये सीधो टक्कर है। इसमें किसी तीसरी पार्टी की कहीं कोई गुंजाइश नहीं है। भुनेश्वर मेहता के भी चुनाव लड़ने की बात सामने आ रही



है। लेकिन इसमें संदेह है क्योंकि उनकी उम्र और स्वास्थ्य पहले जैसी नहीं है। हां वे लड़ते तो त्रिकोणिय संघर्ष हो सकता था। यथाथ यही है

कि मनीष जायसवाल और जेपी पटेल इन दोनों के बीच में से किसी एक के सर पर 4 जून को जीत का सेहरा होगा बाकी जो भी उम्मीदवार वहाँ से अपना दावेदारी पेश करेंगे वो वोटकटवा ही माने जाएंगे। माना जा रहा है कि भाजपा को कोई अगर यहाँ की संसदीय सीट से जीतने से रोकने में कामयाब हो सकता है तो वे जेपी पटेल ही हैं। सूत्र बताते हैं कि जेपी पटेल को हजारीबाग के दिग्गज नेता यशवंत सिन्हा का साथ मिल रहा है। साथ ही हजारीबाग विधानसभा में बड़कागांव, बरही के विधायक भी कांग्रेस के ही हैं। जेपी पटेल को बरही, चौपारण, बड़कागांव से काफी उम्मीदें होगी और फिर उनका अपना गढ़ मांडू विधानसभा तो है ही। पटेल को मुस्लिम मतदाता, यशवंत सिन्हा के लॉयल रहे जातिविशेष के कार्यकर्ता और भाजपा के विरोधियों के वोट मिलने के पूरे आसार हैं। वहीं जायसवाल को आम लोगों के बीच उनकी सुलभता व लोकप्रियता और उनके द्वारा कोरोनाकाल में किये गये सहायता को लोग भूल नहीं पाये हैं।

कमल खिलाएं, सभी अधूरे काम पूरे होंगे : जयसवाल

भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने पतराटू में चलाया जनसंपर्क अभियान कहा-कमल का फुल है आपका प्रत्याशी

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। भाजपा के हजारीबाग लोकसभा प्रत्याशी मनीष जयसवाल ने गुरूवार को पतराटू प्रखंड अंतर्गत भदानीनगर मंडल के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर जनसंपर्क अभियान चलाया। इस दौरान भाजपा भदानीनगर मंडल अध्यक्ष सागर कुमार दांगी के नेतृत्व में मनीष जयसवाल ने पतराटू प्रखंड के जुमरा, सांकी, सुदी, पाली, चिकोर, लादी, मतकमा, देवरिया चारी टोंगरी कुरसे आदि क्षेत्रों में जन संपर्क अभियान चलाया। इस दौरान जनसंवाद, नुककड़ सभा का भी आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों से विभिन्न समस्याओं से मनीष जयसवाल को अवगत कराया। मौके पर मनीष जयसवाल ने कहा की भाजपा का उदेश्य ही सबका साथ-सबका विकास करना है। उन्होंने कहा की विकास योजनाओं का धरातल पर उताकर समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंचाना भाजपा का लक्ष्य है। पीएम मोदी के हाथों को मजबूत करें सभी समस्याओं का समाधान होगा। इधर देर शाम मतकमा-कुरसे फोरलेन स्थित हवेली रेस्टोरेंट में प्रेस कॉन्फ्रेंस किया। मनीष जयसवाल ने कहा कि आपका उम्मीदवार कोई व्यक्ति



नहीं कमल का फुल है। आपकी 80 प्रतिशत ओपिनियन मेरे पक्ष में होने के कारण ही मुझे उम्मीदवार बनाया गया है। मुझे जीताकर बेजने की भी जिम्मेवारी अब आप सबों की है।

उन्होंने कहा कि अपने सभी विचारधारा वालों का एक-एक मत कमल के पक्ष में लाने का प्रयास करें और पीएम मोदी के गारंटी दें। भाजपा जो कहती है उसे गारंटी के साथ पूरा भी करती है। श्री जयसवाल ने कहा कि कमल खिलाएँ सभी अधूरे काम पूरे होंगे। आपसभी चुनाव की तैयारी में अभी से ही तन-मन से जुट जाएँ। प्रेस कॉन्फ्रेंस व जनसंपर्क में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता, हजारीबाग लोकसभा के सह संयोजक रणजय कुमार उर्फ कुटू बाबू, पूर्व बीस सूत्री उपाध्यक्ष राकेश प्रसाद,

रंजीत पांडेय, भाजपा भदानीनगर मंडल अध्यक्ष सागर कुमार दांगी, महामंत्री मोतीनारायण सिंह, कोषाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह, किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष सन्नी प्रसाद कुशवाहा, योगेश दांगी, कुमेल उरांव, युवा मोर्चा अध्यक्ष आशीष शर्मा, रामगढ़ जिला मंत्री सुरेंद्र करमाली, टिकेश्वर महतो, भोला प्रसाद कुशवाहा, अजय पासवान, भुरकुंडा मंडल अध्यक्ष सतीश मोहन मिश्रा, उपाध्यक्ष अमरेश सिंह, अनिल खरवार, सुखदेव प्रसाद, जगतार सिंह, बालेश्वर राम, अनिल खरवार, लक्ष्मी नारायण, विद्यासागर ओझा, राकेश सिन्हा, अशोक सोनी, राजेंद्र मुंडा, पंचम महतो, आनंद, सोनू कुशवाहा, सहजजनाथ महतो, सहजनाथ बेदिवा, झागू बेदिवा, फुलेश्वर दांगी सहित दर्जनों भाजपाई शामिल थे।

जनसेवा और विकास हमारी प्राथमिकता रही है : मनीष

भाजपा प्रत्याशी ने बरही प्रखंड में मांगा वोट लोगों में उत्साह का माहौल खिलेगा कमल : मनोज यादव

खबर मन्त्र संवाददाता

बरही/हजारीबाग। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने शुकुवार को बरही प्रखंड के पूर्वी मंडल अंतर्गत दर्जनों गांव में जनसम्पर्क अभियान चलाया। भारी गर्मी होने के बावजूद ग्रामीणों ने लोकसभा उम्मीदवार मनीष जायसवाल व बरही के पूर्व विधायक मनोज यादव का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। उन्होंने बरही प्रखंड अंतर्गत कोल्हुआकला पंचायत के तिलैया बस्ती, महुआटांड, बेला, करगइयो, जवाड, कोल्हुआ, घोबियापहरी, भंडारों पंचायत के तेतरिया भंडारों, बेहराबाद, पुरहरा, बैरिशाल, विजैया पंचायत के गुडियों, विजैया चौक, डपोक पंचायत के गरजामो,



डपोक, खुर्दजावाड, ओरपरता, बेलाहारा, मलकोको पंचायत के बुंडू, बेलादोहर, मलकोको, पड़रिया, बरसोत पंचायत के श्रीनगर, बरसोत और करियातपुर क्षेत्रों का सघन दौरा किया और जनसम्पर्क अभियान चलाया। भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने जनसंपर्क अभियान के दौरान जनता से रूबरू होते हुए मोदी सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराते हुए फिर एक बार प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनाने का अपील किया। उन्होंने कहा कि

आज पूरी दुनिया भारत को सम्मान की दृष्टि से देख रहा है, इसका पूरा श्रेय पीएम मोदी को जाता है। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता और हजारीबाग की जनता के विश्वास पर पार्टी ने भरोसा जताया है। उन्होंने कहा कि जनसेवा और विकास हमारी प्राथमिकता रही है और भविष्य में भी इसी प्राथमिकता के आधार पर कार्य करूंगा। पूर्व विधायक मनोज यादव ने कहा कि हजारीबाग संसदीय क्षेत्र से पार्टी ने मनीष जायसवाल को टिकट देकर लोगों में उत्साह का संचार किया है। उन्होंने कहा कि हजारीबाग से पार्टी की जीत सुनिश्चित है।

जनसम्पर्क अभियान में भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, जिला महामंत्री सुनील साहू, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य गणेश यादव, शैलेन्द्र सिन्हा, दिनेश सिंह राठौड़, जीप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, डोमन पांडेय, आकाश जायसवाल सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

किसी प्रत्याशी को आंखमूंद कर समर्थन नहीं करेगी वैश्य मोर्चा : महेश्वर साहू



भुरकुंडा (रामगढ़)। झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा ने शुकुवार को उत्सव मैरेज हॉल में मतदाता जागरूकता सम्मेलन किया। इसकी अध्यक्षता रामगढ़ जिला के कार्यवाहक अध्यक्ष बसंत प्रसाद साहू एवं संचालन हजारीबाग लोकसभा प्रभारी बोरेंद्र कुमार एवं प्रखंड अध्यक्ष मुकेशलाल सिंदूरिया ने संयुक्त रूप से किया। महेश्वर साहू ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संविधान ने हमें चुनाव के जरिए अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया है। लेकिन कभी-कभी जागरूकता के अभाव में या लोभ लालच में गलत लोगों का चुनाव कर लेते हैं और फिर पांच वर्षों तक नेताओं और अपने आप को कोसते रहते हैं। उन्होंने कहा कि वैश्य मोर्चा किसी भी प्रत्याशी को आंख मूंद कर समर्थन नहीं करेगी, बल्कि अपने मुद्दों एवं प्रत्याशी का मूल्यांकन करने के बाद किसी को समर्थन करने का निर्णय लिया जायेगा। रांची लोकसभा के प्रभारी हीरानाथ साहू ने कहा कि मतदाताओं को जनप्रतिनिधियों से सवाल पूछने की आदत डालने की जरूरत है।

शिव नगर में रुद्र महायज्ञ को लेकर ध्वजारोहण

यज्ञ से क्षेत्र में भक्तिमय का होगा का संचार : रोशनलाल चौधरी 20 से 24 अप्रैल तक चलेगा महायज्ञ, 25 को होगा भंडारा

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। रिवर साइड बुध बाजार भुरकुंडा स्थित शिवनगर कॉलोनी बीटीटीआई में 20 से 24 अप्रैल तक होने वाले पांच दिवसीय श्रीश्री 108 रुद्र महायज्ञ प्राण प्रतिष्ठा को लेकर शुकुवार को श्री शिव मंदिर परिसर में भूमि पूजन एवं ध्वजारोहण हुआ। आजसू पार्टी के केन्द्रीय महासचिव सह बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशनलाल चौधरी, पूर्व ज़िप उपाध्यक्ष सह आजसू पार्टी के केन्द्रीय सदस्य मनोज राम, पूर्व उपप्रमुख रामाशंकर पांडेय सहित अन्य ने ध्वजारोहण किया। इसके पूर्व पुरोहित द्वारा पूरे विध-विधान एवं वैदिक



महायज्ञ को लेकर ध्वजारोहण में शामिल रोशनलाल चौधरी व अन्य।

मंत्रोच्चारण के बीच भूमि पूजन कराया गया। पूजा के दौरान आराध्य देवी-देवताओं के भक्ति जयकारों से पूरा क्षेत्र गुंजाता रहा। इस दौरान आयोजन समिति द्वारा अतिथियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि रोशनलाल चौधरी ने कहा की यह हर्ष का विषय है की श्री शिव मंदिर जीर्णोद्धार हेतु भव्य महायज्ञ का

आयोजन हो रहा है। यज्ञ से पूरे क्षेत्र में साकारात्मक और भक्तिमय वातावरण का संचार होगा। उन्होंने कहा कि सामाजिक व धार्मिक कार्यों में मैं हर प्रकार से आप सबों के साथ हूँ। आयोजन समिति ने बताया की पांच दिवसीय श्रीश्री 108 रुद्र महायज्ञ 20 अप्रैल को कलश यात्रा के साथ शुरू होगा। इस दौरान पंचांग पूजन, प्रवेश

एक नजर में

पटेल का विष्णुगढ़ दौरा कल, तैयारी जोरों पर



विष्णुगढ़। हजारीबाग संसदीय क्षेत्र कांग्रेस उम्मीदवार जयप्रकाश भाई पटेल के पैतृक गांव एवं विष्णुगढ़ प्रखंड के विभिन्न गांवों के दौरे को लेकर भेलवारा, खरकी, बलकमवका, जोधर विधायक मोंड, सारुकुदर, फराचांव, सिमरबेडा, चिहुटिया, नागी, सपमरावा, चानो, तिलैया, नरकी आदि गांवों में इंडिया गठबंधन के घटक दलों के तमाम कार्यकर्ताओं ने बैठक की। विष्णुगढ़ प्रखंड का पहला दौरा 31 मार्च दिन रविवार को होगा। जयप्रकाश भाई पटेल का विष्णुगढ़ प्रखंड में जोरदार स्वागत किया जाएगा। बैठक में जयप्रकाश भाई पटेल को भारी मतों से जीताने की अपील की गई। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि इंडिया गठबंधन हजारीबाग लोकसभा में पूरी ताकत से चुनाव लड़ेगा। इस क्रम में पूरे लोकसभा क्षेत्र में शीघ्र ही इंडिया गठबंधन के बैनर तले सभाओं का आयोजन किया जायेगा।

बीडीओ ने की लोस चुनाव को लेकर बैठक



बड़कागांव। प्रखंड मुख्यालय सभागार में लोकसभा चुनाव को लेकर प्रशासन के द्वारा बुध सुपरवाइजर और बीएलओ प्रशिक्षण एवं अहम बैठक की गई जिसकी अध्यक्षता बीडीओ जितेंद्र कुमार मंडल एवं संचालन सहायक निर्वाचि पदाधिकारी सीओ बालेश्वर राम ने किया। बैठक में बीडीओ एवं सीओ ने सभी सुपरवाइजर और बीएलओ को सभी 127 बूथों में बिजली पानी शौचालय फर्नीचर की पूर्ण व्यवस्था करने का निर्देश दिया। मतदान हेतु 85 वर्ष के वृद्ध एवं 40 प्रतिशत से अधिक प्रमाणित दिव्यांगों को घर से ही पोस्टल बालेट से मतदान करने की सुविधा दी जा रही है। परंतु वे मतदान केंद्र में भी जाकर मतदान कर सकते हैं। जिसके लिए निर्वाचन आयोग के द्वारा वाहन सुविधा एवं मतदान केंद्र पहुंचाने पर लोगों का स्वागत किया जाएगा। प्रशिक्षण में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम करने एवं 80 से अधिक मतदान कराने का लक्ष्य पर जोर दिया गया। प्रशिक्षण दौरान लोगों ने 80 से अधिक से अधिक मतदान कराने को लेकर शपथ लिया। ज्ञात हो पूरे प्रखंड में 127 बूथ बनाए गए हैं, जिसमें कुल 68 बिल्डिंग में चुनाव संपन्न कराया जाएगा। जिसके लिए 127 बीएलओ, 13 सुपरवाइजर लगाए गए हैं। बीडीओ सीओ ने चुनाव को सफलतापूर्वक संपन्न कराने को लेकर सुपरवाइजर और बीएलओ को प्रत्येक दो दिन में बैठक कर बुध के दो समस्याओं को दूर करने पर जोर देने को कहा गया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल लोगों में मुख्य रूप से शशि कुमार, भास्कर राज, पूजा राय, अनुधी पासवान, रुखसाणा परवीन, संजय निगम, राज, कुमार, देवेन्द्र कुमार, खुश नारायण मेहता, मनीष पाठक, नरेंद्र महतो, जितेंद्र कुमार दास, आशीष कुमार सोनी के अलावा अन्य कई उपस्थित थे।

भाजपा ने की बूथ कमिटी को लेकर बैठक



टाटीझरिया। लोक सभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी टाटीझरिया की बैठक भाजपा कार्यालय में हुई जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष कैलासपति सिंह ने किया। बैठक में टाटीझरिया प्रखंड अंतर्गत हजारीबाग लोक सभा क्षेत्र में कुल 33 बूथ में दो कलस्टर बनाया गया टाटीझरिया, डहरभंगा, बेड़म तीन पंचायत का एक कलस्टर तथा दूसरा कलस्टर धरमपुर और इमर पंचायत शामिल हैं। कोडरमा लोक सभा क्षेत्र के तीन पंचायत झरपो, भराजो और खैरा के 21 बूथों का एक कलस्टर बनाया गया। कुल मिलाकर प्रखंड में तीन कलस्टर बनाया गया। निर्णय लिया गया कि शनिवार से बूथ का सत्यापन किया जाएगा। मंडल अध्यक्ष ने कहा कि आगामी लोक सभा चुनाव में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने का कार्य करें। सभी क्षेत्र में जाकर केंद्र सरकार के कार्यों के बारे में बताने का काम करें। बैठक में राजू यादव, महेश अग्रवाल, उपेंद्र पांडेय, अमरेश सिंह, परमेश्वर यादव, विजय पांडेय, नितेश पांडेय, जितेंद्र मंडल, विजय ठाकुर, सुखदेव पांडेय, विक्रम सिंह समेत अन्य शामिल थे।

21 बकाएदारों के काटे गये बिजली कनेक्शन

रामगढ़। गोला प्रखंड क्षेत्र में लंबे समय से बिजली बिल भुगतान नहीं करने वाले उपभोक्ताओं के कनेक्शन काटे जाने से हड़कंप मच गया है। बिजली विभाग की ओर से युद्धस्तर पर बिजली बिल की वसूली की जा रही है। सूचना के बाद भी बिल भुगतान में आना कानी करने वाले उपभोक्ताओं पर सख्ती बरती जा रही है। विभाग की सख्ती के कारण उपभोक्ता अब बिल भुगतान करना ही बेहतर समझ रहे हैं। विद्युत विभाग के अधिकारियों कमियों ने शुकुवार को गोला सहित कोराम्बे व मुखा गांव में बकाएदारों के खिलाफ छापेमारी अभियान चला कुल 21 उपभोक्ताओं का बिजली कनेक्शन काटते हुए अविजल बकाया राशि जमा करने का निर्देश दिया है। साथ ही उपभोक्ताओं को चेतावनी दी गई कि बौर बकाया जमा किए बिजली उपयोग करते पकड़े जाने पर जुमानों के साथ केस दर्ज किया जाएगा। विद्युत विभाग के कर्मी महेंद्र कुमार महतो ने बताया बिजली बिल बकाया रहने पर उक्त गांव के 21 लोगों का बिजली कनेक्शन काटा गया है। उन्होंने बताया कि विभागीय दिशा निर्देश पर ऐसे उपभोक्ताओं का कनेक्शन काटा जा रहा है जो लंबे समय से बिल का भुगतान नहीं कर रहे हैं।

भारतीय लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा के 17 पड़ाव

मनोज कुमार सिन्हा

17 पड़ाव 1951 से 2024 तक का जवाहरलाल नेहरू 1947-64, लाल बहादुर शास्त्री 1964-66, इंदिरा गांधी - 1966-77, 1980-84, मोरारजी देसाई-1977-79, 1979-80 चरण सिंह, 1984-89-राजीव गांधी, 1989-90 - वी पी सिंह, 1990-91- चन्द्रशेखर, 1991-96 - पी वी नरसिम्हा राव, 1996-97-एच डी देवे गोड़ा, 1997-98-आई के गुजराल, 1998-2004-अटल बिहारी वाजपेई, 2004-14-मनमोहन सिंह,

2014-24- नरेंद्र मोदी।

1951-52

हालाँकि कांग्रेस ने पहले आम चुनाव में जीत हासिल की, लेकिन उस समय भी वामपंथी और समाजवादी पार्टियों के पास काफी सीटें और वोट शेयर थे। जेपी और आचार्य नरेंद्र देव के नेतृत्व वाली सोशलिस्ट पार्टी ने 12 सीटें जीतीं, जबकि जेबी कृपलानी की किसान मजदूर प्रजा पार्टी (केएमपीपी) 9 सीटें जीतने में सफल रही। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व वाली जनसंघ (बाद में भाजपा) केवल 3 सीटें ही जीत सकी।

1957

एक बार फिर कांग्रेस ने बड़े अंतर से चुनाव जीता। भारतीय अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी 33 सीटों पर शीर्ष पर उभरी, जबकि सोशलिस्ट पार्टी और केएमपीपी के विलय से बनी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने 19 सीटें जीतीं। जन संघ ने अपना वोट शेयर दोगुना कर लिया लेकिन सीटों के मामले में पार्टी छोटी खिल्लाड़ी रही। अबेडकर की ऑल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन (एससीएफ) ने 6 सीटें जीतीं।

1962

हालाँकि भारत के तीसरे आम चुनाव ने लगभग पहले दो के परिणामों को दोहराया, स्थापित राजनीतिक गुटों के भीतर मतभेद

अधिक स्पष्ट होने लगे। राम मनोहर लोहिया को पीएसपी छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा और उनके अनुयायियों ने फिर से जन्मी सोशलिस्ट पार्टी के तहत चुनाव लड़ा। इसी तरह, मुक्त व्यापार की वकालत करने वाले कांग्रेस के दक्षिणपंथी गुट ने स्वतंत्र पार्टी के तहत चुनाव लड़ा।

1967

नेहरू की मृत्यु के बाद हुए इन चुनावों में कांग्रेस की जीत तो हुई, लेकिन पहली बार उसे दो-तिहाई बहुमत नहीं मिला। स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ 79 सीटें जीतने में कामयाब रहे; वामपंथियों और समाजवादियों ने 83 सीटें जीतीं, जबकि क्षेत्रीय खिलाड़ियों डीएमके और अकाशियों ने 28 सीटें जीतीं। पीएसपी तब और विभाजित हो गई जब जॉर्ज फर्नांडीस और अन्य ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी बनाने के लिए अलग हो गए।

1971

यह पहले मध्यावधि चुनाव में इंदिरा गांधी की भारी जीत थी क्योंकि विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनाव से अलग कराए गए थे। 1969 में इंदिरा को कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया, लेकिन पार्टी के अधिकांश सांसद उनके साथ थे और चुनाव आयोग ने उनके गुट, कांग्रेस (आई) को पिछली पार्टी के उतराधिकारी के रूप में मान्यता दी। उनका 'गरीबी हटाओ' अभियान सफल रहा जबकि स्वतंत्र पार्टी मात्र 8 सीटों पर सिमट गई।

1977

1975 में लगाए गए आपातकाल के खिलाफ नाराजगी इन चुनावों में दिखाई दी। कांग्रेस विरोधी दलों (दक्षिणपंथी और समाजवादी) ने विलय कर जनता पार्टी बनाई और चरण सिंह के भारतीय लोक दल के प्रतीक के तहत चुनाव लड़ा। पूर्व कांग्रेसी मोरारजी देसाई थोड़े समय के लिए ही सही, गैर-कांग्रेसी सरकार का नेतृत्व करने वाले पहले प्रधान मंत्री बने।



1980

जनता पार्टी, जो वामपंथी झुकाव वाले समाजवादियों और दक्षिणपंथी जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी का संघ थी, एक अस्थिर गठबंधन साबित हुई। 1979 में, चरण सिंह-राज नारायण-जॉर्ज फर्नांडीस गुट ने अपने पूर्व जनसंघ सहयोगियों की आरएसएस सदस्यता से हाथ खींच लिया। मोरारजी ने राजनीति से संन्यास ले लिया और इंदिरा गांधी जोरदार जीत के साथ लौटीं।

1984

इंदिरा गांधी की हत्या के तुरंत बाद हुए चुनाव में, कांग्रेस ने 400 से अधिक सीटें जीतीं और 50% से अधिक वोट प्राप्त किये, यह एकमात्र मौका था जब किसी पार्टी ने ऐसा किया था। नवगठित भाजपा, जनसंघ की उतराधिकारी, ने केवल दो सीटें जीतीं और

मुख्यधारा के विपक्ष का सफाया इतना पूर्ण था कि एक नवेली टीडीपी सबसे बड़े विपक्ष के रूप में उभरी। इतना संपूर्ण कि एक भागती हुई टीडीपी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के रूप में उभरी।

1989

बोफोर्स घोटाला, पंजाब में आतंकवाद और श्रीलंका में तमिल विद्रोह से राजीव गांधी का गलत तरीके से निपटना मुख्य चुनावी मुद्दे थे। समाजवादी एक बार फिर जनता दल के रूप में एकजुट हुए, लेकिन केवल 143 सीटें ही हासिल कर सके। वीपी सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा अल्पमत सरकार भाजपा और वामपंथियों के बाहरी समर्थन से बनी थी। एक साल के भीतर, चन्द्रशेखर गुट अलग हो गया और कांग्रेस के बाहरी समर्थन से सरकार बना ली।

1991

कांग्रेस बहुमत से चूक गई फिर भी नरसिम्हा राव के नेतृत्व में अल्पमत सरकार बनाई, जो सदन में बहुमत के बिना पांच साल का कार्यकाल पूरा करने वाले भारत के पहले प्रधान मंत्री बने। फिर भी, उन्होंने उदारीकरण और कठोर आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाया। हालाँकि, उनका कार्यकाल घोटालों से दगदार था - झामुमो रिश्वतखोरी और हर्षद मेहता घोटाले। 1992 में बाबरी मस्जिद टूटा दी गई।

1996

बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और उसे सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। अटल बिहारी वाजपेई की सरकार केवल 13 दिनों तक ही चल पाई क्योंकि बीजेपी को सहयोगी नहीं मिल सके। दूसरी सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस ने सरकार बनाने से इनकार कर दिया लेकिन जनता दल को बाहर से समर्थन दे दिया। जून 1996 में, एचडी देवेगोड़ा ने प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली, लेकिन बमुश्किल एक वर्ष तक टिके रहे और उनके बाद आईके गुजराल आए, जो भी एक वर्ष से अधिक नहीं टिक सके।

1998

हालाँकि भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, लेकिन चुनाव ने कम राष्ट्रीय उपस्थिति वाले क्षेत्रीय खिलाड़ियों की बढ़ती भूमिका की ओर संकेत दिया। उन्होंने 126 सीटें जीतीं। वाजपेयी ने 13 दलों के साथ गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में शपथ ली - जो उस समय तक की सबसे अधिक संख्या थी। सरकार गिर गई क्योंकि 13 महीने बाद अन्नाद्रमुक द्वारा अपना समर्थन वापस लेने के बाद वाजपेयी 1 वोट से विश्वास प्रस्ताव हार गए।

1999

चुनाव ने स्थिर गठबंधन के युग को चिह्नित किया। बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जबकि राज्य पार्टियों ने 162 सीटें जीतीं और 29% वोट हासिल किए, जो कांग्रेस से ज्यादा

था। यह स्पष्ट हो गया कि भविष्य में किसी एक दल के लिए स्पष्ट बहुमत प्राप्त करना कठिन होगा। वाजपेयी की एनडीए सरकार पांच साल का कार्यकाल पूरा करने वाली भारत की पहली गठबंधन सरकार बन गई।

2004

2003 के अंत में तीन उत्तरी राज्यों में विधानसभा चुनावों में अच्छे प्रदर्शन के बाद, भाजपा ने समय से पहले लोकसभा भंग करने की मांग की। ऐसा प्रतीत हुआ कि इसे सही कहा गया क्योंकि माना जा रहा था कि अर्थव्यवस्था अच्छा प्रदर्शन कर रही है और कोई स्पष्ट सत्ता विरोधी लहर नहीं दिख रही है। लेकिन पार्टी का रूढ़िवादी शाइनिंग' अभियान मतदाताओं को लुभाने में विफल रहा। इसे मजबूरन मजबूर होना पड़ा और कांग्रेस यूपीए के मुखिया के रूप में वापस आ गई।

2009

2004 में सरकार बनाने वाले कांग्रेस के यूपीए गठबंधन ने अपने प्रमुख सहयोगी वाम मोर्चा को खो दिया, जिसने भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के बाद समर्थन वापस ले लिया। यह निर्वाचन क्षेत्रों के नये परिशिष्टन के बाद आयोजित पहला चुनाव भी था। कुछ हद तक अश्वर्यजनक रूप से, यूपीए ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया, जिससे उसे और मनमोहन सिंह को लगातार दूसरा कार्यकाल मिला और कांग्रेस को 206 सीटें मिलीं।

2014

यह एक लहर वाला चुनाव था जिसमें पूरी तरह से नरेंद्र मोदी का दबदबा था, जिन्होंने यूपीए-2 पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को धुनाया। 1984 के बाद पहली बार, गठबंधन की अनिवार्यता की धारणा को खारिज करते हुए, एक एकल पार्टी भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया। कांग्रेस 44 सीटों पर सिमट गई, जो उसका अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन था, जिससे वह विपक्ष के नेता का पद पाने के लिए अयोग्य हो गई।

बढ़ता घाटा चिंता के स्तर को पार कर रहा है

2023-24 की पहली छमाही में फिस्कल डेफिसिट 7.02 लाख करोड़ रुपए पर

सरकार की तरफ से मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही का फिस्कल डेफिसिट पूरे साल के अनुमान का 39.3 प्रतिशत रहा। केंद्र सरकार का फिस्कल डेफिसिट चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-सितंबर अवधि के दौरान बढ़कर 7.02 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो अप्रैल-अगस्त में 6.43 लाख करोड़ रुपये था। सरकार की तरफ से मंगलवार को जारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली।

बता दें कि 7.02 लाख करोड़ रुपये पर चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के लिए फिस्कल डेफिसिट पूरे साल के लक्ष्य 17.87 लाख करोड़ रुपये का 39.3



प्रतिशत हो गया है। वहीं, बीते वित्त वर्ष की अप्रैल-सितंबर अवधि के लिए राजकोषीय घाटा 2022-23 के लक्ष्य का 37.3 प्रतिशत था।

चालू वित्त वर्ष के दौरान केंद्र ने फिस्कल डेफिसिट को पिछले वित्त वर्ष के मुकामले 6.4 फीसदी यानी 17.87 लाख

करोड़ रुपये पर बनाए रखने का लक्ष्य रखा है। एक साल पहले की अवधि की तुलना में कम रहा फिस्कल डेफिसिट

लगातार दूसरे महीने केंद्र का राजकोषीय घाटा एक साल पहले की अवधि की तुलना में कम रहा है। यह सितंबर में 59,035 करोड़ रुपये था, जो सालाना आधार पर 25 प्रतिशत कम था। इसे टैक्स कलेक्शन में निरंतर मजबूत वृद्धि से सहायता मिली है।

क्या होता है फिस्कल डेफिसिट ?
फिस्कल डेफिसिट दरअसल सरकार के खर्च और रेवेन्यू के बीच का अंतर होता है। लेखा महानियंत्रक द्वारा जारी आंकड़ों

के अनुसार, यह सितंबर 2023 के अंत में 7.02 लाख करोड़ रुपये रहा। सरकार ने केंद्रीय बजट में चालू वित्त वर्ष 2023-24 में फिस्कल डेफिसिट को सकल घरेलू उत्पाद के 5.9 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य रखा है। 2022-23 में फिस्कल डेफिसिट भारत की जीडीपी का 6.4 प्रतिशत था जबकि पहले इसके 6.71 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया था।

टैक्स कलेक्शन मजबूत

सितंबर में भारत सरकार का नेट टैक्स कलेक्शन सालाना आधार पर 14.3 प्रतिशत बढ़कर 3.56 लाख करोड़ रुपये हो गया। इसका कारण कॉर्पोरेट कर संग्रह 26.6 प्रतिशत बढ़कर 2.12 लाख करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर संग्रह 15.6 प्रतिशत बढ़कर 91,247 करोड़ रुपये होना है।

नकली दवा के असली सौदागरों पर कसे सख्त नकेल

ऋतुपर्ण देवे

इसे व्यवस्था की नकामी कहें या भ्रष्टाचार का खेल, लेकिन सच्चाई यही है कि इंसान की जान से बेपरवाह लोग, पैसे के हवस के आगे दरिन्दे बन मौत के सौदागर तक बन जाते हैं। कैसर की नकली दवा बनाने वाले गिरोह के राष्ट्रीय राजधानी में पकड़े जाने के बाद लोग हैरान-परेशान हैं। यूं तो भारत में नकली दवाओं के खेल का सिलसिला लंबे वक्त से जारी है, जो रुकने का नाम नहीं ले रहा। इसका दूसरा पहलू यह भी कि इसे रोकने की खातिर लंबे-चौड़े अमले पर भारी भरकम खर्च और सख्त कानून के बावजूद जारी रहना खुद में बड़ा सवाल है। शासन-प्रशासन के नुमाइंदा नकलियों से सावधान का राग अलापते रहें तो अटपटा जरूर लगता है।

दिल्ली पुलिस ने हाल ही में तमाम सुबुतों के साथ कैसर की नकली दवा बनाने वाले जिस गिरोह का पदांश किया उसमें 12लोग शामिल हैं। दुख यह कि इस आरोपितों में दो जाने-माने कैसर अस्पताल के कर्मचारी हैं। निश्चित रूप से पूरा गैंग सारी तैयारियों से इस काम में जुटा था। पिछले साल विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में बिक रही कैसर और लिवर की नकली दवाओं को लेकर चेतावना दी। नकली दवाओं के असली निमाताओं ने भी दवा किया था कि उनके नाम व ब्रांड पर भारत में नकली दवाओं का असली खेल चल रहा है। तब कुछ ठोस कार्रवाई होती दिखी नहीं।

शर्मनाक यह भी कि भारत के औषधि महानियंत्रक यानी ड्रग



कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया तक बेसुध रहे कि कैसर तथा लिवर के नकली इंजेक्शन घड़ल्ले से और खुले आम कैसे बिक रहे हैं। संगठन ने चेतावना लेकिन यहां किसे होश आया? यह तो ठीक वैसा ही हुआ जैसे कोरोना के नकली रेमैडिसिबर इंजेक्शन ने न जाने कितनों की जान ले ली और जिम्मेदार बेसुध रहे? संगठन की चेतावनी के बाद यह जरूर माना गया था कि देश में कैसर में इस्तेमाल होने वाला इंजेक्शन एडसट्रिस और आठ अलग-अलग नाम व प्रकार के नकली उत्पाद सहित लिवर की नकली दवा डिफिटेलियो भारतीय बाजार में मौजूद हैं। सवाल यही कि जानकर भी महकमे ने क्या किया? यकीनन दिल्ली पुलिस ने काबिल-ए-तारीफ काम किया।

दिल्ली में पकड़े गए इस अकेले गिरोह ने दो साल में ही

करोड़ों रुपये की दौलत बनाई। पैसों के भूखे इन नरपिशाचों की करतूत रोंगटे खड़े करने वाली हैं। बेहद सुनियोजित तरीकों से अपने काम को अंजाम देता यह गिरोह कैसर की दवा की खाली शीशी पांच हजार रुपये में खरीदता जिसकी कीमत 2.96 लाख रुपये तक होती। इनमें पत्कौनोंजोल जो कि एक एंटी फंगल दवा है जो करीब 100 रुपये में आती है भरता और इंजेक्शन में नकली दवाइयों को मिलाकर बाजारों में सप्लाई करता। यह दवा कीमती रोगियों में उपयोग होती जो बेअसर होने के साथ जानलेवा भी रही। असली दवा की कीमत हजारों से लेकर लाखों रुपये तक होती। इस अकेले गैंग के पास से 89 लाख रुपये नकद, 18 हजार रुपये के डॉलर और चार करोड़ रुपये की 7 अंतरराष्ट्रीय और 2 भारतीय ब्रांडों की कैसर की नकली दवाएं

बरामद होना ही इनके बड़े नेटवर्क का संकेत है। इसके तार भारत ही नहीं बल्कि चीन और अमेरिका तक फैले हैं। यकीनन नकली दवा का असली खेल बेहद चिंताजनक है। ऐसे तमाम गिरोहों को बेनकाब कर लोगों की जान से खिलवाड़ रोकने के लिए सख्ती और सतर्कता जरूरी है। नकली दवा की पहचान का भी तरीका है। दवा पर दर्ज क्यूआर कोड स्कैन करते ही दवा का डिटेल मिल जाएगा। कोड नहीं होने पर नकली हो सकती है। कोड से दवा की जानकारी ड्रग विभाग की वेबसाइट पर मिलेगी जो मिलाई जा सकती है जो यहां सबके बस की बात नहीं।

अमेरिकन कैसर सोसायटी के जाने-माने जर्नल ग्लोबल आंकोलॉजी के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2000 से 2019 के बीच भारत में कैसर से 1 करोड़ 28

लाख से भी ज्यादा मौतें हुईं। वहीं भारतीय नेशनल कैसर रजिस्ट्री प्रोग्राम के केवल दो वर्ष के आंकड़े बताते हैं कि 2020 से 2022 के दौरान देश में 23 लाख 67 हजार 990 लोगों की मौत कैसर के किसी न किसी प्रकार से हुई। भला कैसे पता चलेगा कि इनमें नकली दवा से कितनों की जान गई? शायद कभी नहीं। बड़ा सवाल यह कि हARAM की कमाई के चक्कर में खुलेआम आंखों में धूल झोंकने वाले ये मौत के सौदागर कभी फांसी के फन्दे तक पहुंच पाएंगे? इन्हें नजरअंदाज करने वाले जिम्मेदारों पर भी क्या कभी फंद कसेगा? यकीनन कैसर जैसी घातक और दर्दनाक बीमारी झेल रहे किस्मत के मारे अधमरे लोगों की जिंदगी से खेलने वाला हर वो शख्स इस पाप का बराबर भागीदार है जिसे इस धिनौने खेल का पता था।

मनोज कुमार सिन्हा

ईस्टर एक महत्वपूर्ण धार्मिक त्योहार है जो ईसाई धर्म के अनुयायियों द्वारा उत्साह से मनाया जाता है। यह त्योहार हर साल ईसा मसीह की मौत और उसके जीवित की पुनर्जन्म के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार विभिन्न रूपों में दुनिया भर में मनाया जाता है और लोग इसे खुशी और उत्साह के साथ मनाते हैं।

ईस्टर का पर्व - आशा और पुनर्जन्म का उत्सव

भारत एक बहु-धार्मिक देश है, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग आपसी सद्भाव के साथ रहते हैं। ईस्टर का पर्व ईसाई धर्म का प्रमुख त्योहार है, जिसे भारत में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व ईसा मसीह के पुनर्जन्म का प्रतीक है और आशा, प्रेम तथा बलिदान का संदेश देता है।

ईस्टर का इतिहास विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा हुआ है। इसे पूरे विश्व में बहुत धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार आत्मा की जीत को स्वीकार करता है और उम्मीद की चिरंजीविता का संदेश देता है।

ईस्टर से जुड़ी कहानी

ईस्टर की कहानी ईसा मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म से जुड़ी हुई है। ईसाइयों के अनुसार, ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र माना जाता है, जो मानव जाति के पापों के लिए पृथ्वी पर आए थे। उन्होंने मानवता को प्रेम, करुणा और क्षमा का मार्ग दिखाया। ईसा मसीह

के उपदेशों से समाज में क्रांति आई और लोगों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला। ईस्टर का उत्सव आमतौर पर गुड फ्राइडे के दिन शुरू होता है, जिसे ईसा मसीह की क्रूसीफिक्सन के दिन के रूप में मनाया जाता है। इसके बाद, शनिवार को, वह दिन आता है जब वह मृत्यु के बाद से जीवित हो जाते हैं, और ईस्टर संडे के रूप में उत्सव को मनाया जाता है। ईस्टर जो उत्सव के आखिरी दिन को दर्शाता है।

ईस्टर का पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है। गुड फ्राइडे ईस्टर की तैयारियों का दिन है। इस दिन ईसा मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और उनकी मृत्यु को स्मरण किया जाता है। चर्चों में विशेष प्रार्थना सभाएं आयोजित की जाती हैं और उपवास रखा जाता है।

ईस्टर रविवार ईस्टर का मुख्य दिन होता है। इस दिन चर्चों में विशेष प्रार्थना सभाएं होती हैं, जिसमें ईसा मसीह के पुनर्जन्म का जश्न मनाया जाता है। लोग रंगीन कपड़े पहनते हैं, एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और उपहारों

का आदान-प्रदान करते हैं। ईस्टर के दिन लोग चर्च में जाते हैं, प्रार्थना करते हैं और अपने प्रियजनों के साथ समय बिताते हैं। बच्चे खुद को संचारते हैं, खिलौने और चॉकलेट खरीदते हैं, और विभिन्न प्रतियोगिताओं और खेलों में भाग लेते हैं। ईस्टर के दिन लोग अपने घरों को सजाते हैं, उन्हें खास तरीके से सजाते हैं, और विभिन्न स्वादिष्ट भोजन बनाते हैं।

ईस्टर के दिन लोग एक-दूसरे को ईस्टर की शुभकामनाएं और बधाई देते हैं, और खुशी के इस मौके पर उन्हें गिफ्ट दिए जाते हैं। इस दिन के अलावा, ईस्टर एग्स और ईस्टर बनने की रस्में भी महत्वपूर्ण हैं।

ईस्टर का सामाजिक महत्व

ईस्टर का पर्व केवल ईसाई धर्म के लोगों के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक महत्व भी है। यह पर्व हमें प्रेम, करुणा, क्षमा और बलिदान का संदेश देता है।





समाजसेवी बीपी शाही का आकस्मिक निधन अंत्येष्टि आज



जमशेदपुर। लौहनगरी के नामी बिल्डर एवं उद्योगपति बीपी शाही का आकस्मिक निधन उनके मानगो डिमना चौक स्थित आवास पर शुक्रवार की अपरान्ह हो गया। वे अपने पीछे पूरा राकेश कुमार के अलावा भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनकी अंत्येष्टि शनिवार को स्वर्णरेखा श्मशान घाट पर की जायेगी। शवयात्रा दिन के 11 बजे से उनके डिमना चौक बसत बिहार कालोनी स्थित आवास से निकलेगी। परिवार के लोगों ने बताया कि कुछ दिन पूर्व ही उनके पैर का ऑपरेशन हुआ था और अस्पताल से छुट्टी पाकर घर पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। अचानक आज अपरान्ह 4.10 बजे उन्हें हिचकी आई और उन्होंने अंतिम सांस ले ली।

अवैध बालू-गिट्टी लदे तीन हाइवा किया जल

चांडिल। शुक्रवार को चांडिल एसडीएम शुभा रानी ने नेतृत्व में गठित टीम ने एनएच 33 पर अवैध कारोबार के खिलाफ वाहन जांच अभियान चलाया। एसडीएम ने जानकारी देते हुए बताया कि पाटा टोल प्लाजा पर लगभग साढ़े तीन बजे दो अवैध बालु लदे हाइवा एवं नारागाडीह के पास एक गिट्टी एवं एक बालु लदे हाइवा को जल किया गया है। एसडीएम ने कहा अवैध कारोबार में सलिस लोगों के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगा। कहा चांडिल अनुमंडल क्षेत्र में अवैध कारोबार नहीं चलने दिया जायेगा। सलिस लोगों के खिलाफ प्रार्थमिकी दर्ज कर कार्रवाई की जायेगी।

लालबाबा फाउंड्री के तीन गोदामों में भयंकर आग



जमशेदपुर। बर्मागाइंस थाना अंतर्गत लाल बाबा फाउंड्री के तीन गोदाम में शुक्रवार की रात आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। घटना रात के 7:30 बजे की है। गोदाम क्रमशः बृजेश जायसवाल, काली शर्मा और टुलु शर्मा के बताए जा रहे हैं। यहां काफी मात्रा में रबर होने की वजह से आग तेजी से फैल गया। मौके पर अग्निशमन विभाग के दो दमकल पहुंचकर आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं। समाचार लिखे जाने तक आग पर काबू नहीं पाया जा सका है। बर्मा गाइंस पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई है पुलिस आग लगने का की घटना की जानकारी ले रही है। दमकल विभाग के अनुसार संभवत आग शॉर्ट सर्किट से लगी है।

31 को रविंद्र भवन में दिव्यांग बच्चों के लिए रंगारंग कार्यक्रम



जमशेदपुर। अभया बर्नार्जी फाउंडेशन ने बिष्टुपुर स्थित होटल बुलेवर्ड में शुक्रवार को प्रेसवार्ता की। जिसमें फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. जौहर बर्नार्जी ने बताया कि 31 मार्च, दिन रविवार को समय संध्या 6:30 बजे से साकची स्थित रविंद्र भवन के प्रेक्षागृह में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष रूप से रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम अभिव्यक्ति का आयोजन किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम में जमशेदपुर शहर में विशेष रूप से संचालित दिव्यांग बच्चों के नौ विद्यालयों जिसमें मुख्य रूप से आशा किरण विद्यालय टेल्को, स्कूल ऑफ होप, बिस्टुपुर, सिद्धेश्वर मुख बांधिर विद्यालय बारीडीह, ज्ञानोदय नोबल एकेडमी इंद्र नगर, पीएटीएच - जमशेदपुर, पीएएमएचजे - जमशेदपुर, नेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्लाइंड - करनडीह, दिव्या ज्योति नेत्रहीन विद्यालय - कदमा और अभया अदर्श शिक्षा केंद्र - नीलडीह(टेल्को) के लगभग 70 से अधिक छात्र-छात्राएं भाग लेंगे।

माउंट एवरेस्ट फतह करेगी 16 वर्षीय काम्या कार्तिकेयन

विशेष संवाददाता

जमशेदपुर। देश में साहसिक खेलों को बढ़ावा देने वाली भारत की अग्रणी संस्था टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन (टीएसएफ) ने आज माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए एक नए अभियान को गंव से रवाना किया, जिसमें भारत की सबसे सफल और सबसे कम उम्र की पर्वतारोही काम्या कार्तिकेयन शामिल हैं, जो 29,031.7 फीट पर दुनिया की सबसे ऊंची चोटी के शिखर तक पहुंचने का अपना पहला प्रयास करेंगी। टीम को शुक्रवार को टाटा स्टील के कॉर्पोरेट सर्विसेज के वाईस प्रेसिडेंट चाणक्य चौधरी ने फ्लैग ऑफ किया, जिसमें काम्या के पिता और भारतीय



एवरेस्ट अभियान के लिए टीएसएफ का झंडा देते बार्ने से हेमंत गुप्ता, एस कार्तिकेयन, टाटा स्टील के वीपी चाणक्य चौधरी, काम्या कार्तिकेयन और मुकुल विनायक चौधरी।

काम्या की उपलब्धियां

- 20,000 फीट से अधिक ऊंची चोटी पर चढ़ने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की युवती।
- माउंट डेनाली पर चढ़ने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की लड़की।
- माउंट एवरेस्ट के शिखर से स्की करके नीचे उतरने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की लड़की।
- माउंट डेनाली पर चढ़ने वाली सबसे कम उम्र की गैर-अमेरिकी।

दुनिया की सबसे कम उम्र की लड़की। काम्या की सबसे कम उम्र की लड़की। माउंट डेनाली पर चढ़ने वाली सबसे कम उम्र की गैर-अमेरिकी।

नौसेना के कमांडर एस कार्तिकेयन भी शामिल हैं। काठमांडू से 6 अप्रैल से शुरू होने वाले इस सात सप्ताह के अभियान की मई के अंतिम सप्ताह

टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन काम्या को दे रही मदद

काम्या के माता-पिता भी हैं पर्वतारोही

अपने पिता की पर्वतारोहण गतिविधियों से प्रेरित होकर, काम्या ने तीन साल की छोटी सी उम्र से ही सहाद्री या पश्चिमी घाटों में ट्रेकिंग शुरू कर दी थी। उनकी हिमालय यात्रा सात साल की उम्र में शुरू हुई, जब काम्या ने 2015 में चंद्रशिला चोटी (12,000 फीट) की ऊंचाई पर ट्रेकिंग शुरू की। 2016 में, उन्होंने हर-की-दून (13,500 फीट), केदारकांठा चोटी (13,500 फीट) और रूफुड झील (16,400 फीट) जैसी अधिक कठिन और ऊंची ट्रेकिंग पूरी की। मई 2017 में, काम्या ने नेपाल में 17,600 फीट की ऊंचाई पर एवरेस्ट बेस कैंप तक ट्रेकिंग की और यह उपलब्धि हासिल करने वाली दुनिया की दूसरी सबसे कम उम्र की लड़की बन गई।

पहले से ही छह महाद्वीपों के शिखर पर कर चुकी है चढ़ाई

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई के दौरान साथ रहेंगे पर्वतारोही पिता

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के काम्या के प्रयास को उनके पिता कमांडर एस कार्तिकेयन, जो स्वयं एक कुशल पर्वतारोही हैं, समर्थन देंगे और इस महान साहसिक कार्य में उनके साथ रहेंगे। अक्टूबर 2017 में, मात्र नौ वर्ष की आयु में 20187 फीट ऊंचे माउंट स्टाक कागरी पर अपनी सफलता के बाद, काम्या ने अंतिम पर्वतारोहण चुनौती, द एक्सलोरर्स ग्रीड स्लेम पर कदम रखा।

आश्चर्यजनक है काम्या की उपलब्धियां : चाणक्य चौधरी



जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कपलेक्स में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में टाटा स्टील के वीपी चाणक्य चौधरी ने कहा, पर्वतारोहण दुनिया के सबसे कठिन लोकप्रिय खेलों में से एक है और इसके लिए गर्मिर्ग मॉडिफिक वाले उन्मीदवारों के लिए बहुत कठिन अनुशासन की आवश्यकता होती है। काम्या जैसी युवा स्पोर्ट्स स्टाफ को देखना, जिसने पहले ही वह हासिल कर लिया है जिसे हासिल करने में हममें से अधिक लोग के लिए एक से अधिक जीवन लग सकता है, वास्तव में एक ही समय में आश्चर्यजनक और उत्साहजनक है। वह पहले से ही वैश्विक पर्वतारोहण सर्किट में एक पहचान बन चुकी है। हमें काम्या का स्वागत करते हुए प्रसन्नता हो रही है और सभी चोटियों की जगहों माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के उनके पहले प्रयास का समर्थन करने पर गर्व हैं। मैं काम्या को इस अभियान के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

आवधि की आवश्यकता होती है, लगाना शामिल है। शिखर तक के जिसमें उच्च शिविरो में कई चक्कर रास्ते में बेस कैंप के बाद 4 कैंप हैं।

कदमा बायो डायवर्सिटी पार्क में दिखा तेंदुआ

तेंदुआ को डिनर देने के लिए वन विभाग ने रखे तंदुरुस्त धिंकन

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। शहर के बीचो बीच कदमा स्थित बायोडायवर्सिटी पार्क में तेंदुआ देखने की पुष्टि हो चुकी है। तेंदुआ को पकड़ने के लिए वन विभाग की टीम ने आज पार्क में छह मोशन कैमरा के अलावा एक पिंजड़ा भी लगा दिया है। पिंजड़े में मोटे मुंगे रखे गए हैं ताकि उनका भक्षण करने के लिए तेंदुआ उनके भीतर प्रवेश करे और वहां फंस जाय। वन विभाग ने यहां आठ सदस्यीय टीम को भी 24 घंटे ब्यूटी पर लगा दिया है।

बताया जाता है कि पार्क के गाड़ों ने गुरुवार की आधी रात 12.30 बजे एक तेंदुआ नुमा जानवर को पार्क में विचरते पाया। गाड़ों ने अपने मोबाइल से उसका दूर से विडियो बना कर अपने कंट्रोल रूम को भेजा और गेट बंद कर सुरक्षित हो गया। सुबह-सुबह

वन विभाग ने पकड़ने के लिए लगाया पिंजड़ा, टीम तैनात



कदमा बायो डावर्सिटी पार्क में मोशन कैमरा और पिंजड़ा लगाती वन विभाग की टीम और गाड़ से जानकारी लेने के बाद रणनीति बनाते अधिकारी।

दूसरी ओर, जमशेदपुर की डीएफओ सुशी ममता प्रियदर्शी ने खबर मन्त्र से कहा, पार्क में देखे गए जानवर की विडियो को वन विभाग ने देखा है, कल हमारे विशेषज्ञ पुष्टि कर पायेंगे कि वह जानवर तेंदुआ है अथवा अन्य जानवर। इधर, बायो डावर्सिटी पार्क में वन विभाग ने मोशन कैमरे लगा दिए हैं ताकि जंगली बिल्ली के मूवमेंट को पकड़ा जा सके। इतना ही नहीं जंगली बिल्ली पार्क में ही रहे इसके लिए डिनर के लिए मोटे-मोटे मुंगे वहां



वन विभाग की टीम सूचना मिलने पर मानगो रेंज के रेंज पदाधिकारी

दिविजय सिंह के नेतृत्व में वहां पहुंची और तेंदुआ की खोज शुरू की। इस दौरान टाटा स्टील वन विभाग की टीम की मदद करती रही।

वन विभाग ने जारी की सलाह

- बच्चों को घर के बाहर अकेले ना छोड़ें।
- रात्रि के समय किसी भी प्रयोजन के लिए घर से बाहर कम से कम 4-5 व्यक्तियों के समूह में निकलें।
- मवेशियों को चारागाह में ले जाते समय कम से कम पांच वस्त्रक समूह के साथ रहें।
- मवेशियों के नलें में दूधिल उपकरण करने वाले उपकरण का प्रयोग किया जाए।
- अपने पालतू जानवरों को घर से बाहर अकेले ना छोड़ें।
- झाड़ीबुना क्षेत्र में शान या सुबह के समय शौच के लिए बाहर नहीं निकलें।
- अपने घरों के आसपास रसाई का कचरा जमा न करें क्योंकि यह आवाज कुत्तों को आकर्षित करता है जो बदले में तेंदुआ की आवाजों की संभावना बनाता है।
- घरों के पास झाड़ी को साफ रखें एवं घर के बाहर एवं बालियों में पकड़ने की व्यवस्था रखें।
- बस्ते की हालत में घर से बाहर नहीं निकलें।
- किसी भी प्रकार की धातक खबरों पर विश्वास ना करें एवं वन विभाग से अमिलंब संपर्क करें।
- किसी भी व्यक्ति को यदि तेंदुआ के बारे में कोई सूचना हो तो अभी त्विजय नारायण नंबर पर दें : 89877 90334/9771283269.

टाटा मोटर्स कैंटीन में आरोग्य मेनू आरंभ

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। शुक्रवार को टाटा मोटर्स कंपनी में मजदूरों को एवं प्रबंधन के लोगों के लिए जो कैंटीन सुविधा है। उसमें मूलभूत परिवर्तन किया गया है। फाइनल डिवाइजन के कैंटीन को पहले केवल आहार मेनू था। आज से आरोग्य मेनू भी आरंभ किया गया है। आरोग्य में खाने की गुणवत्ता को वैसे लोगों के मापदंड के आधार पर बनाया गया है जिन्हें लक्ष्य मसाला कम करने की हदियावन डॉक्टर द्वारा दी गई है या फिर कोई जो अन्य बीमारी से ग्रसित लोग हैं। जिन्हें सादा भोजन

चाहिए उनके लिए सहूलियत प्रदान होगा। वही कैंटीन में महिलाओं की सेवा को देखते हुए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए जनरल ऑफिस के पैट्री एवं सीटर के पैट्री को पिंक पैट्री घोषित किया गया है। इसमें आप पूरा प्रबंध महिलाओं के द्वारा किया जाएगा। तीनों कार्यक्रम में उद्घाटन कर्ता के तौर पर एचआर हेड मोहन घंट आई आर हेड सौमिक राय, मनीष वर्मा टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनिजन के अध्यक्ष श्री गुरुमीत सिंह महामंत्री श्री आरके सिंह एवं सभी ऑफिस वेयर एवं वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कोई कसर न छोड़ें, चुनाव की तैयारी में जुट जायें सभी भाजपा कार्यकर्ता : सुधांशु ओझा

चुनाव की तैयारियों और सांगठनिक चर्चा पर कई मंडलों में भाजपा ने की नैराधन बैठक

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। देश में लोकसभा चुनाव का बिगुल बजते ही भाजपा ने कमर कस ली है। लोकसभा चुनाव में विजयी लक्ष्य को साधने के लिए भाजपा जमशेदपुर महानगर के कार्यकर्ता भी पूरी तरह से चुनावी मोड में आ गए हैं। जहां जमशेदपुर महानगर के विभिन्न मंडलों में भाजपा संगठनात्मक बैठक के जरिये कार्यकर्ताओं में जोश भर रही है। इसी क्रम में, जमशेदपुर महानगर अंतर्गत कमलपुर, बोड़ाम



एक बैठक को संबोधित करते महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा।

एवं एमजीएम मंडल में आगामी लोकसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं की भूमिका और बूथ संरचनाओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा एवं विभिन्न कार्यक्रमों के संदर्भ में अलग-अलग बैठक सम्पन्न हुई। उपरोक्त बैठक में भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा मुख्यरूप से शामिल हुए। बैठक में कमलपुर मंडल अध्यक्ष प्रधान महतो, बोड़ाम मंडल अध्यक्ष शांतनु मुखर्जी एवं एमजीएम मंडल अध्यक्ष सुनील सिंह मुंडा समेत शक्ति केंद्र के प्रमुख एवं मंडल अंतर्गत विभिन्न बूथों के अध्यक्षगण शामिल हुए।

लोयोला स्कूल चर्च और बेल्टीह चर्च में मना गुड फ्राइडे

विश्वसिखों ने रक्षा उपवास, की कूस आराधना

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। लोयोला स्कूल चर्च और बेल्टीह चर्च में शुक्रवार को गुड फ्राइडे बड़े ही श्रद्धा के साथ परंपरागत तरीके से मनाया गया। बेल्टीह चर्च में पास्टर मनोज चरण ने सदस्य मसीही समुदाय के बीच प्रवचन दिये। दूसरी ओर, लोयोला स्कूल, नार्दन टाउन में खुले मैदान में प्रभु यीशु मसीह के 14 क्रूस मार्ग की आराधना हुई। प्रत्येक मार्ग का विस्तार से उल्लेख किया गया। इसके उपरांत सभी रोमन कैथोलिक विश्वासियों चर्च में गए और तकरीबन



लोयोला स्कूल में जुटे मसीही और बेल्टीह चर्च में मसीही समुदाय को संबोधित करते पास्टर मनोज चरण।

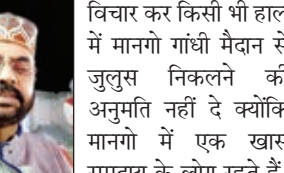


2 घंटे तक क्रम को उपासना हुई और उसके बाद मिसा बलिदान किया गया। रेक्टर फादर केएम जोसेफ, प्रोविशियल फादर जेरोम कुटीनो, फादर पास्कल धनवार, फादर चार्ल्स परेरा, फादर जोसेफ एंथोनी आदि ने गुड फ्राइडे के महत्व को सामने रखा। बताया कि प्रभु यीशु मसीह ने समस्त

हिंदू नववर्ष पर जुलूस निकालने की अनुमति न दे प्रशासन : बाबर खान

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। ऑल इंडिया माइनोरिटी सोशल वेलफेयर फ्रंट के केंद्रीय महासचिव सह झामुमो नेता बाबर खान ने प्रेस विज्ञापित जारी करते हुए कहा कि जमशेदपुर पुलिस को ये सूचना मिल चुकी होगी कि हिंदू नव वर्ष का जुलूस पहली बार मानगो गांधी मैदान से निकलेगा जिस की तयारी कुछ दिनों चुने चिन्हित लोग कर रहे हैं। बाबर खान ने कहा समय रहते इस पर गंभीरता से जिला प्रशासन को



विचार कर किसी भी हाल में मानगो गांधी मैदान से जुलूस निकलने की अनुमति नहीं दे क्योंकि मानगो में एक खास समुदाय के लोग रहते हैं। इस को ध्यान में रखा जाए। जुलूस निकलने वाले को चिन्हित करें कि यह कौन लोग हैं जो पहली बार मानगो गांधी मैदान से जुलूस निकलना चाहते हैं। इन की नियत किया है? जिला प्रशासन किस भी सुरत में इस की अनुमति न दे। वरना विधि व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

टाटा वर्कर्स यूनियन की कमेटी मीटिंग में हंगामा

हंगामे के बीच एकाउंट पारित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। टाटा वर्कर्स यूनियन की कमेटी मीटिंग में आज अकाउंट को लेकर लंबे अरसे बाद हंगामा देखने को मिला। कमेटी मीटिंग के दौरान अध्यक्ष संजीव कुमार चौधरी (टुनु) और उनकी टीम के क्रियाकलापों पर कई कमेटी मेंबरों ने सवाल उठाए (यद्यपि विरोध के बाद अध्यक्ष संजीव कुमार चौधरी ने अकाउंट को पारित करने की



कमेटी मीटिंग को संबोधित करते अध्यक्ष संजीव कुमार चौधरी।

घोषणा कर दी। पूर्व निर्धारित समय के अनुसार कमेटी मीटिंग यूनियन अध्यक्ष संजीव कुमार चौधरी की अध्यक्षता में शुरू हुई। सबसे पहले दिवंगत

सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके बाद अकाउंट को लेकर कोषाध्यक्ष आमोद दुबे ने रिपोर्ट पेश किया। इस अकाउंट के दौरान ही कमेटी मेंबर ओमप्रकाश शर्मा उर्फ

बमबम में अकाउंट में एक सदिग्ध रिपोर्ट को पकड़ लिया और उनके साथ पूर्व सहायक सचिव संजय सिंह ने भी दिया। अकाउंट्स विभाग की कमेटी मेंबर ओम प्रकाश शर्मा



कोलकाता ने बेंगलुरु को 7 विकेट से रौंदा

एजेंसी

बेंगलुरु। आइपीएल 2024 के पहले 9 मैच में घरेलू मैदान पर खेलने वाली टीम को जीत मिली थी। लेकिन अब यह सिलसिला टूट गया है। एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को कोलकाता नाइट राइडर्स ने 7 विकेट से रौंदा दिया है। विराट कोहली के नाबाद अर्धशतक से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 6 विकेट पर 182 रन बनाए। केकेआर ने शुरूआत से ही विस्फोटक बैटिंग की और 17वें ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया। टीम को 19 गेंद रहते मैच को जीता। केकेआर को यह लगातार दूसरी जीत है। वहीं आरसीबी को तीन मैच में दूसरी हार मिली है। 2015 सीजन के बाद आरसीबी अपने घरेलू मैदान पर केकेआर को नहीं हरा पाई है।

विराट की फिफ्टी नहीं आई काम

विराट कोहली ने 59 गेंद में चार छक्कों और चार चौकों से नाबाद 83 रन की पारी खेलने के अलावा कैमरन ग्रीन के साथ दूसरे विकेट के लिए 65 और ग्लेन मैक्सवेल के साथ तीसरे विकेट के लिए 42 रन जोड़े। ग्रीन ने 33 जबकि मैक्सवेल ने 28 रनों की पारी खेली। दिनेश कार्तिक ने अंत में आठ गेंद में तीन छक्कों की मदद से 20 रन बनाए। केकेआर की ओर से अदि रसेल ने 29 जबकि हर्षित राणा ने 39 रन देकर दो-दो विकेट चटकाए। केकेआर के कप्तान श्रेयस अय्यर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। कोहली ने मिचेल स्टार्क की पारी की पहली गेंद पर चौके से खाता खोला जबकि



मैन ऑफ द मैच
सुनील नरेन

कंट्रोवर्सी खत्म, विराट-गंभीर ने डाली जादू की झप्पी

आइपीएल के नए सीजन ने विराट कोहली और गौतम गंभीर के मनुमुटाव को भी खत्म कर दिया है। शुक्रवार को जब एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स की टीमों आमने सामने थी, तब इन दोनों दिग्गजों को एक-दूसरे को गले लगाते देखा गया। दोनों सितारों में पिछले साल मामूली बात पर कहा सुनी हो गई थी। इसके बाद सोशल मीडिया पर क्रिकेट फैंस ने विराट बनाम गंभीर के तौर पर देखा। आखिर रणनीतिक टाइम-आउट के दौरान जब दोनों ने एक दूसरे को झप्पी डाली तो बहुत सारे क्रिकेट फैंस को आराम मिल गया। बता दें कि कोहली और गंभीर पहले भी विवादों का हिस्सा रह चुके हैं। टूर्नामेंट के पिछले सीजन में एकाना क्रिकेट स्टेडियम में आरसीबी बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच झड़प के दौरान कोहली और गंभीर के बीच बहस हुई थी। दरअसल, कोहली और एलएसजी के नवीन-उल-हक के बीच कुछ बातचीत हुई थी जिसके बाद विराट ने उन्हें खरी खोटी सुना थी। यह देखकर गंभीर बीच में आ गए थे। इस दौरान विराट और गंभीर को तीखी बहस करते देखा गया था।

ओवर में टीम के रनों का शतक पूरा किया। मैक्सवेल दो जीवनदान का

फायदा नहीं उठा पाए और अगले ओवर में नरेन की गेंद पर रिंकू सिंह के हाथों लपके गए। रसेल ने इसके बाद रजत पाटीदार (03) जबकि हर्षित ने अनुज रावत (03) को आउट करके आरसीबी का स्कोर पांच विकेट पर 151 रन किया। कार्तिक ने आते ही रसेल पर दो छक्के मारे। उन्होंने पारी की अंतिम गेंद पर रन आउट होने से पहले स्टार्क पर भी छक्का जड़ा।

केकेआर की विस्फोटक शुरूआत

कोलकाता नाइट राइडर्स को सलामी बल्लेबाज फिल साउल और सुनील नरेन ने विस्फोटक शुरूआत दिलाई। पहले ही ओवर में सिराज को 18 रन पड़े। दूसरे ओवर में यश दयाल ने 14 रन दिए। तीसरे ओवर में अलजारी जोसेफ के खिलाफ 14 और 5वें ओवर में सिराज के खिलाफ 11 रन बने। पावरप्ले के आखिरी ओवर में यश दयाल ने 21 रन खर्च किए और केकेआर का स्कोर 6 ओवर के

बाद 85 रन हो गया। यह पावरप्ले में टीम का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। 2017 में इसी मैदान पर आरसीबी के खिलाफ केकेआर ने 6 ओवर में 105 रन ठोके थे। हालांकि नरेन फिफ्टी नहीं बना पाए और मयंक डंगर की गेंद पर बॉल्ड हो गए। उन्होंने 22 गेंदों पर 5 छक्के और 2 चौकों की मदद से 47 रन बनाए। अगले ओवर में साल्ट 30 रन बनाकर विजयकुमार का शिकार बन गए। 9 गेंद पर 2 विकेट गिरने के

बेंगलुरु 182/6 (20 ओवर)		
खिलाड़ी	रन	गेंद चौका छक्का
विराट कोहली नाबाद	83	59 04 04
डु प्लेसिस के.स्टार्क राणा	08	06 00 01
केमरन ग्रीन बी. रसेल	33	21 04 02
मैक्सवेल के. रिंकू बी.नरेन	28	19 03 01
पाटीदार के. रिंकू बी. रसेल	03	04 00 00
अनुज रावत के. साल्ट बी. राणा	03	03 00 00
दिनेश कार्तिक रन आउट	20	08 00 03

अतिरिक्त :04
विकेट पतन : 17-1, 82-2, 124-3, 144-4, 1151, 182-6.
गेंदबाज : मिचेल स्टार्क : 4-0-47-0, हर्षित राणा : 4-0-39-2, अनुजल राय : 2-0-6-0, सुनील नरेन : 4-0-40-1, आदि रसेल : 4-0-29-2, वरुण चक्रवर्ती : 2-0-20-0.

कोलकाता 186/5 (16.5 ओवर)		
खिलाड़ी	रन	गेंद चौका छक्का
साल्ट के. वीन बी. विश्वक	30	20 02 02
सुनील नरेन बी. डंगर	47	22 02 05
वेंकटेश के. कोहली बी. दयाल	50	30 03 04
श्रेयस अय्यर नाबाद	39	24 02 02
रिंकू सिंह नाबाद	05	05 00 00

अतिरिक्त :15
विकेट पतन : 86-1, 92-2, 167-3.
विकेट पतन : मोहम्मद सिराज : 3-0-46-0, यश दयाल : 4-0-46-1, अलजारी जोसेफ : 2-0-34-0, मयंक डंगर : 2-5-0-23-1, विश्वक विजय कुमार : 4-0-23-1, केमरन ग्रीन : 1-0-7-0.

बाद श्रेयस और वेंकटेश अय्यर ने पारी को संभाला। कप्तान श्रेयस जूझ रहे थे लेकिन वेंकटेश ने मन के मुताबिक शॉट खेले। अलजारी जोसेफ के खिलाफ उन्होंने एक ओवर में 20 रन ठोक दिए। फिर सिराख के खिलाफ ओवर में 17 रन बने और वेंकटेश ने 29 गेंदों पर अपनी फिफ्टी पूरी की। दोनों अय्यर ने तीसरे विकेट के लिए 75 रन जोड़े। वेंकटेश 16वें ओवर की पहली गेंद पर आउट हुए।

आइपीएल 2024 पॉइंट्स टेबल

टीम	मैच	जीत	हार	रव्द	अंक	रन रेट
चेन्नई	02	02	00	00	04	+1.979
कोलकाता	02	02	00	00	04	+1.470
राजस्थान	02	02	00	00	04	+8.00
हैदराबाद	02	01	01	00	02	0.675
पंजाब	02	01	01	00	02	+0.025
बेंगलुरु	03	01	02	00	02	-0.711
गुजरात	02	01	01	00	02	-1.425
दिल्ली	02	00	02	00	00	-0.528
मुंबई	02	00	02	00	00	-0.925
लखनऊ	01	00	01	00	00	-1.000

ऑरेंज कैप

खिलाड़ी	टीम	रन
कोहली	बेंगलुरु	181
वलासेन	हैदराबाद	143
रियाज	राजस्थान	127
सैमसन	राजस्थान	97
अधिषेक	हैदराबाद	95

पर्पल कैप

खिलाड़ी	टीम	विकेट
मुस्ताफिजुर	चेन्नई	06
राणा	कोलकाता	05
रसेल	कोलकाता	04
हरपिर	पंजाब	03
डुगराह	मुंबई	03

पंजाब के खिलाफ लखनऊ को करना होगा ऑलराउंड प्रयास



लखनऊ। केएल राहुल की अगुआई वाली लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम जब शनिवार को यहां इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) के दूसरे मैच में पंजाब किंग्स से भिड़ेगी तो उसकी निगाहें हर विभाग में बेहतर प्रदर्शन करने पर लगी होंगी। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) को चंडीगढ़ में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ पहले मैच में 20 रन से हार का सामना करना पड़ा था। इस मैच में क्रुणाल पांड्या को छोड़कर लखनऊ के सभी गेंदबाजों ने न रुकना था और वे प्रभावित नहीं कर सके। मार्क वुड और डेविड विली की अनुपस्थिति में एलएसजी के तेज गेंदबाज कमजोर दिखे जिसमें मोहसिन खान, नवीन उल हक और यश ठाकुर से जिम्मेदारी उठाने की उम्मीद थी। आगामी टी20 विश्व कप टीम में जगह बनाने की मुहिम में जुटे रवि विस्नोई टीम के आइपीएल में शुरूआती मैच में साधारण दिखे। कप्तान राहुल ने भी टी20 विश्व कप को ध्यान में रखते हुए विकेटकीपर बल्लेबाज की भूमिका निभाने का फैसला किया और वापसी वाले मैच में 58 रन की पारी खेली जिससे वह अगले मैच में इससे और बेहतर करना चाहेंगे। साथ ही वह उम्मीद करेंगे कि उनकी सलामी जोड़ीदार विन्टन डिडॉक पंजाब किंग्स के खिलाफ अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में वापसी करें।

दोनों टीमों इस प्रकार हैं:	
लखनऊ सुपर जायंट्स : केएल राहुल (कप्तान), विन्टन डी कोक, देवदत्त पडिक्कल, निकोलस पूरन, दीपक हुडा, क्रुणाल पांड्या, मार्कस स्टोइनिंग, रवि विस्नोई, नवीन-उल-हक, मोहसिन खान, यश ठाकुर।	पंजाब किंग्स : शिखर धवन (कप्तान), प्रमोदिसर सिंह, सिकंदर रजा, लियाम लियामिस्टोन, सैम कुरेन, जितेश शर्मा, शशांक सिंह, हरप्रीत बराड, कैगोसो रबाडा, हर्षल पटेल, राहुल चाहर।

फ्रांस ने पेरिस ओलंपिक के लिए विदेशी पुलिस और सैन्य मदद मांगी

पेरिस। फ्रांस का कहना है कि उसने 46 देशों से पूछा है कि क्या वे इन गतिविधियों में पेरिस ओलंपिक की सुरक्षा में मदद के लिए दो हज़ार से अधिक पुलिस अधिकारी भेजेंगे या कराने के लिए तैयार हैं। आयोगक संभावित हमलों के खिलाफ कड़ी सतर्कता बरतते हुए एक सदी में फ्रांसीसी राजधानी के पहले खेलों के लिए सुरक्षा योजना को अंतिम रूप दे रहे हैं। आंतरिक मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि विदेशी सुरक्षा सहायता के लिए अनुरोध जनवरी में किया गया था जिसमें लगभग दो हज़ार 185 सुरक्षाकर्मियों की मांग की गई थी। मंत्रालय ने कहा कि अधिकारियों से खेलों की सुरक्षा और दर्शकों के अनुभव तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने में मदद मांगी गई है। मंत्रालय ने कहा, यह प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन के लिए मेजबान देशों का एक सामान्य दृष्टिकोण है।

चिराग-सात्विकसाईराज ने बैडमिंटन रैंकिंग में तोड़ा साइना नेहवाल का रिकॉर्ड

नयी दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन स्टार चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी ने 10 सप्ताह तक रुनिया की नंबर वन पुरुष युगल जोड़ी रहने के साथ ही एक नया रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। इससे पहले कोई भी अन्य भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में शीर्ष पर इतने अधिक समय तक कायम नहीं रहा है। इस उपलब्धि के साथ ही चिराग-सात्विकसाईराज ने बैडमिंटन रैंकिंग में शीर्ष पर नौ सप्ताह तक रहने के साइना नेहवाल के रिकॉर्ड को तोड़ दिया है।

एंडी मरे मोटे कार्लो और म्यूनख में वले कोर्ट टूर्नामेंट नहीं खेलेंगे

लंदन। एंडी मरे मियामी ओपन में लगी टखने की चोट के कारण लंबे समय तक टेनिस से दूर रहेंगे जिससे तीन बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन की प्रबंधन टीम ने शुक्रवार को पुष्टि की कि वह मोटे कार्लो और म्यूनख में आगामी वले कोर्ट टूर्नामेंट में नहीं खेल पाएंगे। मोटे कार्लो मास्टर्स सात अप्रैल से शुरू होगा जबकि म्यूनख में बीएमडब्ल्यू ओपन अगले हफ्ते से खेला जाएगा। मियामी ओपन के एक मैच के दौरान रविवार को उनके बाएं टखने की मांसपेशियों में खिंचाव आ गया था और इस 36 साल के खिलाड़ी ने अगले दिन घोषणा की कि वह लंबे समय तक टेनिस नहीं खेल पाएंगे। उनकी प्रबंधन टीम के बयान के अनुसार, इस समय अभी तक स्पष्ट नहीं है कि एंडी कितने लंबे समय तक टेनिस से दूर रहेंगे। वह अपनी चिकित्सा टीम के साथ विकल्पों की समीक्षा जारी रखेंगे। इसमें कहा गया, निश्चित रूप से यह एंडी के लिए बहुत ही निराशाजनक खबर है और उन्होंने दोहराया है कि वह जितना जल्दी हो सके कोर्ट पर वापसी करने के इच्छुक हैं।

आयरलैंड में टी-20 श्रृंखला खेलेगा पाकिस्तान पीसीबी ने जारी किया शेड्यूल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने शुक्रवार को आयरलैंड के साथ तीन टी-20 मैचों की श्रृंखला की तारीखों का ऐलान कर दिया है। पीसीबी की घोषणा के अनुसार तीनों मुकाबले 10 से 14 मई तक डबलिन के कैसल एवेन्यू में खेले जाएंगे। इससे पहले दोनों देशों के बीच 2009 में टी-20 मैच खेला गया था। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जुलाई 2020 में दो देशों के बीच टी-20 श्रृंखला निर्धारित की गई थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण यह दौरा नहीं हो सका था। पाकिस्तान, अमेरिका और वेस्ट इंडीज में होने वाले आइसीसी पुरुष टी-20 विश्वकप 2024 के लिए अपनी तैयारी के मद्देनजर अपनी फॉर्म को बेहतर बनाने के लिए 12 टी-20 मैच खेलेगा। द मेन इन ग्रीन में पाकिस्तान के साथ 18 अप्रैल से शुरू होने वाली पांच टी-20 मैचों की श्रृंखला की न्यूजीलैंड की मेजबानी करेगा। आयरलैंड श्रृंखला के बाद पाकिस्तान 22 से 28 मई के बीच इंग्लैंड के साथ चार मैच खेलेगा।

अमेरिका ने कोरी को अपनी टीम में किया शामिल

वाशिंगटन। अमेरिका ने कनाडा के साथ होने वाली पांच टी-20 मैचों की सीरीज के लिए न्यूजीलैंड के पूर्व ऑलराउंडर कोरी एंडरसन को टीम में शामिल किया है। अमेरिका क्रिकेट के अनुसार सभी मुकाबले सात से 13 अप्रैल तक ह्यूस्टन, टेक्सास में खेले जायेंगे। मोनाक पटेल श्रृंखला में अमेरिका के कप्तान होंगे तथा एरॉन जोन्स को उप-कप्तान बनाया गया है।

कार्लसन की वापसी, निकले सबसे आगे

कार्लसुहे, जर्मनी। दुनिया के 6 दिग्गज खिलाड़ियों के बीच हो रहे ग्रैनैक क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट के छह राउंड के बाद विश्व के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी और पांच बार के विश्व चैम्पियन रहे नर्वे के मैग्नस कार्लसन टूर्नामेंट में 4 अंक बनाकर सबसे आगे निकल गए, कार्लसन ने टूर्नामेंट के तीसरे दिन खेले गए दो मुकाबले में लगातार दो मुकाबले जीतकर वापसी की, कार्लसन ने जर्मनी के विन्सेंट केमर और रिचर्ड रापोर्ट को पराजित किया। दूसरे दिन के बाद सबसे आगे चल रहे रोमानिया के रिचर्ड रापोर्ट कार्लसन के अलावा फ्रांस के मकसीम लागरेव से भी हार गए और इसका फायदा कार्लसन को मिला और वह फिलहाल 6 राउंड के बाद 4 अंक बनाकर सबसे आगे पहुंच गए हैं।

बोपन्ना-एड्डेन की जोड़ी फाइनल में पहुंची

एजेंसी

मियामी। भारत के स्टार टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू इबडेन की जोड़ी ने यहां मार्सेल ग्रैनौलर्स और होरासियो जेबालोस पर सीधे सेट में जीत से मियामी ओपन के पुरुष युगल फाइनल में प्रवेश किया। ऑस्ट्रेलियाई ओपन के विजेता बोपन्ना और इबडेन को शुक्रवार रात सेमीफाइनल में स्पेन के ग्रैनौलर्स और अर्जेंटीना के जेबालोस की जोड़ी पर 6-1 6-4 की जीत के दौरान जरा भी पसीना नहीं बहाना पड़ा। फाइनल में बोपन्ना और इबडेन का सामना क्रोएशिया के इवान डोडिग और अमेरिका के ऑस्टिन क्राजिसेक की जोड़ी से होगा जिन्होंने दूसरे सेमीफाइनल में जर्मनी के केविन क्रावेट्ज और टिम पुट्ज की जोड़ी को 6-4 6-7(7) 10-7 से मात दी। बोपन्ना दुबई चैंपियनशिप के क्वार्टरफाइनल में मिली हार और इंडियन वेल्स मास्टर्स के राउंड 32 से बाहर होने

मियामी ओपन: इवान-ऑस्टिन से होगा खिताबी मुकाबला

बोपन्ना के पास फिर शीर्ष में पहुंचने का मौका

ऑस्ट्रेलियन ओपन में मिली ऐतिहासिक जीत के बाद 44 वर्षीय बोपन्ना एटीपी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंच गए थे। वह ऐसा करने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी थे। हालांकि दुबई चैंपियनशिप के क्वार्टर फाइनल और इंडियन वेल्स के राउंड-32 में हारने के बाद यह जोड़ी दूसरे नंबर पर खिसक गई थी, लेकिन मियामी ओपन के सेमीफाइनल में जीतने से उन्हें सोमवार को जारी होने वाली रैंकिंग में दोबारा शीर्ष पर पहुंचने में मदद मिलेगी।

डोडिग-ऑस्टिन की जोड़ी से होगा सामना

बोपन्ना और एड्डेन की जोड़ी का खिताबी मुकाबले में सामना क्रोएशिया के इवान डोडिग और अमेरिका के ऑस्टिन क्राजिकेक की जोड़ी से होगा। डोडिग ऑस्टिन की जोड़ी ने एक अन्य सेमीफाइनल मुकाबले में केविन क्राविट्ज और टिम पुट्ज की जर्मनी की जोड़ी को 6-4, 6-7(7), 10-7 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया।



अबतक 25 डबल्स खिताब जीत चुके हैं रोहन बोपन्ना

बोपन्ना के करियर का यह 14वां एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल है, जबकि वह पहली बार मियामी ओपन के खिताबी मुकाबले में पहुंचे हैं। ओवरऑल यह उनका 63वां टूर स्तर का फाइनल है। भारत के सबसे सफल टेनिस खिलाड़ियों में शामिल बोपन्ना अबतक अपने करियर में 25 डबल्स खिताब जीत चुके हैं। बोपन्ना और एड्डेन की जोड़ी का यह पांचवां एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल है। बोपन्ना के नाम एक खास उपलब्धि भी जुड़ गई है वह लिअंडर पेस के बाद सभी नौ एटीपी मास्टर्स इवेंट के फाइनल में पहुंचने वाले दूसरे भारतीय खिलाड़ी हैं।



स्पीड न्यूज

एसपी ने किया विद्यालयों का निरीक्षण



निरीक्षण करते एसपी।

गढ़वा। पुलिस अधीक्षक दीपक पांडेय एवं सीआरपीएफ 172 बटालियन के समावेष्ट ने रमकंडा एवं भंडरिया थाना क्षेत्र अंतर्गत नक्सल प्रभावित सुदूरवर्ती क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों का निरीक्षण किया। इस दौरान सीआरपीएफ के जवानों के आवासन के लिए मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया गया। मौके पर एसपी ने रमकंडा तथा भंडरिया थाना प्रभारी को मूलभूत सुविधाओं को ससमय उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। साथ ही इन क्षेत्रों में निवास कर रहे लोगों से बातचीत कर निर्भीक हो कर मतदान करने का आग्रह किया।

अवैध हथियार देसी कट्टा के साथ दो गिरफ्तार

बालूमाथ। बालूमाथ पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मुरपा पिकेट अंतर्गत सीरम ग्राम से अवैध हथियार देसी कट्टा के साथ दो



अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त किया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए बालूमाथ थाना प्रभारी विक्रान्त उपाध्याय ने बताया कि गुरुवार की देर रात सूचना प्राप्त हुई की कुछ लोग सीरम ग्राम में हथियार के साथ घूम रहे हैं सूचना के बाद एस०आई होसेन डोंग के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा अवैध हथियार लोडेड देशी कट्टा के साथ दो लोगों को पकड़ा गया। जिसमें आनंद मुंडा 20 वर्ष पिता कैला मुंडा ग्राम सिरम थाना बालूमाथ निवासी, राहुल गंडू 19 वर्ष पिता नारायण गंडू ग्राम बरवाटोली भीगिया थाना बालूमाथ निवासी शामिल है। जिसके बाद बालूमाथ थाना में कांड संख्या 39/24 धारा 25(1-बी)/ए 26, 35 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज करते हुए दोनों गिरफ्तार अभियुक्तों को मंडल कारा लातेहार भेज दिया गया।

मोटरसाइकिल से अवैध कोयला का परिवहन करते चार धरारों

बालूमाथ। बालूमाथ पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मोटरसाइकिल से अवैध कोयला का परिवहन कर रहे चार लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए बालूमाथ थाना प्रभारी विक्रान्त उपाध्याय ने बताया कि सूचना प्राप्त हुई थी कि कुछ लोग मोटरसाइकिल से अवैध कोयला का परिवहन कर रहे हैं। सूचना के बाद अमरवाड़ी पिकेट प्रभारी पवन कुमार द्वारा अवैध कोयला लंदे चार मोटरसाइकिल को मगध कोलवारी के 32 नंबर कांटा के पास पकड़ा गया। जिसमें धीरेंद्र यादव 27 वर्ष पिता जगेश्वर यादव, देवलाल यादव 33 वर्ष पिता रामपनी यादव दोनों ग्राम ओकिंधा थाना बालूमाथ निवासी एवं चेतलाल यादव 26 वर्ष पिता बीरबल यादव ग्राम जीपुआ थाना बालूमाथ निवासी, सुनील साव पिता राजू साव ग्राम मुरपा थाना बालूमाथ निवासी शामिल है। जिसके बाद बालूमाथ थाना में कांड संख्या 40/24 धारा 379, 414 आईपीसी 30 कोल माइन्स एक्ट, 21 एम्पमडीआर एक्ट, 13 जे०एम रूल्स 2017 के तहत मामला दर्ज करते हुए सभी गिरफ्तार लोगों को लातेहार जेल भेज दिया गया। वही छापामारी दल में टिकट प्रभारी एवं पवन कुमार एवं आईआरबी 4 के सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

दरभंगा : गुड फ्राइडे पर ईसाई धर्मावलम्बियों ने निकाली क्रूस यात्रा

दरभंगा। गुड फ्राइडे को लेकर दरभंगा के कैथोलिक समुदाय के ईसाइयों ने शुक्रवार को स्थानीय होली क्रॉस स्कूल के प्रांगण से दोनार रोड स्थित होली रोसरी कैथोलिक चर्च तक चौदह (14) मुकाम (स्थानों) की क्रूस यात्रा निकाली। क्रूस यात्रा में बड़ी संख्या में ईसाई धर्मावलम्बी लोगों ने भाग लिया। इस यात्रा के पूर्व ईसाइयों ने प्रभु यीशु मसीह की कुबानी और बलिदान की चर्चा करते हुए प्रेम, सत्य, शांति, भाईचारे और विश्वास के मार्ग पर चलने का प्रण लिया। गुड फ्राइडे की क्रूस यात्रा को लेकर पूरे ईसाई समाज के लोग शोक में डूब गए।

मोतिहारी में सनकी साधु ने युवक की पीट-पीटकर की हत्या

पूर्वी चंपारण। जिला मुख्यालय मोतिहारी शहर में सनकी साधु ने एक युवक की लाठी-डंडे से पीट पीटकर जान ले ली। युवक की हत्या करने के बाद साधु प्रभाकर पांडेय भागने की जुगत में था। इसी बीच पुलिस ने उसे दबोच लिया। हत्या की घटना मोतिहारी नगर व मुफसिल थाना से महज 100 मीटर की दूरी पर स्थित नरसिंह बाबा आश्रम मठ के समीप की है। मुक्तक रघुनाथपुर ओपी थाना क्षेत्र निवासी राहुल कुमार है। मुक्तक राहुल मूलतः कल्याणपुर का रहने वाला है। उसकी मां तुलसीबाई ने नर्स का काम करती है। लोगों ने बताया कि राहुल हर रोज मठ में आता था लेकिन शुक्रवार को वह जैसे ही मठ में पहुंचा। आरोपी साधु उसे ताबडतोड़ लाठी डंडा से पीटने लगा। स्थानीय लोग जब तक बीचबचक करते तब तक राहुल के नाजुक अंगों पर लगी चोट के कारण उसने दम तोड़ चुका था।

प्रखंड प्रमुख ने विधायक के आरोप को बताया निराधार

खबर मन्त्र संवाददाता

कांडी। प्रखण्ड प्रमुख सह प्रमुख संघ के प्रदेश अध्यक्ष सतेन्द्र कुमार पांडेय उर्फ पिकू पांडेय ने शुक्रवार को अपने आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी द्वारा उनके ऊपर लगाए गए आरोप को निराधार बताया। श्री पांडेय ने कहा कि विधायक द्वारा मेरे विरुद्ध भ्रष्टाचार में लिप्त होने का पत्र डीडीसी को दिया जाना हास्यास्पद है। उन्होंने कहा कि विधायक स्वयं भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए दूसरे के विरुद्ध पत्र लिख रहे हैं। विधायक द्वारा विधायक मद की राशि अपने निजी संस्थान में खर्च



प्रेस कॉन्फ्रेंस करते सतेन्द्र कुमार पांडेय।

की जा रही है और मेरे ऊपर भ्रष्टाचार में लिप्त होने का झूठा आरोप लगाया जा रहा है। प्रमुख ने कहा कि विधायक द्वारा चुनाव के समय से ही मेरे विरुद्ध पंडवंत्र रचा जा रहा है। प्रमुख ने विधायक पर आरोप लगाते हुए कहा कि वे मेरी हत्या कराने की नियत से मेरे विरुद्ध अपराधियों को लगाए थे किंतु वे अपने मंसूबे में

कामयाब नहीं हो सके। उन्हें विकास देखना है तो गढ़वा विधानसभा में जा कर देखें। इनके 20 वर्ष के कार्यकाल पर गढ़वा विधानसभा क्षेत्र का 4 वर्ष भारी है। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रखंड सचिव अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि प्रखंड प्रमुख पिकू पांडेय हर वक्त प्रखंड की जनता के दुख सुख में खड़े रहते हैं। विधायक को प्रमुख की लोकप्रियता नहीं पच रही है यही कारण है कि वे गलत आरोप लगाते हुए अधिकारियों को पत्र लिख रहे हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में झामुमो के प्रखंड अध्यक्ष मुन्ना ठाकुर, प्रखण्ड सचिव अंजनी कुमार सिंह मौजूद थे।

झोला छाप डॉक्टर के इलाज से नवजात शिशु की मौत, महिला अस्पताल में भर्ती

लापरवाही की वजह से 10 घंटे बाद महिला ने मृत बच्चे को जन्म दिया

खबर मन्त्र संवाददाता

कांडी। बाजार स्थित एक महिला चिकित्सक (झोला छाप डॉक्टर) की लापरवाही से नवजात शिशु की मौत हो गई। जबकि महिला गंभीरावस्था में गढ़वा स्थित एक अस्पताल में भर्ती है। जानकारी के अनुसार कांडी प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत मझिगवां के शिवंडी टोला निवासी पंकज यादव ने प्रसव पीड़ा से व्याकुल उसकी पत्नी



अस्पताल में महिला।

पूजा कुमारी को गुरुवार की अहले सुबह कांडी बाजार स्थित महिला चिकित्सक द्वारा झूठा आशवासन देते हुए महिला का इलाज किया जाता रहा। परिजनों के अनुसार 10 घंटे बाद महिला ने मृत बच्चे

को जन्म दिया। साथ ही अधिक रक्तस्राव होने की वजह से महिला की स्थिति काफी नाजुक हो गई। महिला के पूरे परिवार में महिला चिकित्सक के खिलाफ कांडी थाना, रेफरल अस्पताल मझिआंव व सिविल सर्जन गढ़वा को आवेदन देते हुए कड़ी कार्रवाई का आग्रह किया है। गंभीरावस्था में पूजा कुमारी को बेहतर इलाज के लिए गढ़वा में एक अस्पताल में भर्ती कराया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कांडी थाना द्वारा उक्त मामले से संबंधित प्रतिवेदन सिविल सर्जन को भेजा जा रहा है।

हैवान पति ने पत्नी और 3 बेटियों की गला रेत की हत्या

फरार पति पर 15 हजार का इनाम घोषित

पूर्वी चंपारण। बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में हृदय विदारक घटना सामने आई है। जहां एक वधशी पति ने पत्नी समेत 3 बच्चों की गला काटकर हत्या कर दी। घटना पहाड़पुर थाना क्षेत्र के बावरिया गांव की है। बताया जा रहा है कि बीती रात उसने सोते वक्त पत्नी और 3 बच्चों की गला काटकर हत्या को अंजाम देने के बाद आरोपित इट्टु मियां घर छोड़ फरार है। मृतकों में इट्टु की पत्नी अफरीना खातून (40), अबरून खातून (13), तबरून खातून (11) व शहजादी खातून (9) शामिल हैं। चारों की बेरहमी से गला काट हत्या की गई है। घटना के कारणों का अब तक खुलासा नहीं हो सका है। मृतका आरोपित की दूसरी पत्नी थी पहली पत्नी की मौत हो चुकी है। पहली पत्नी से दो पुत्र हैं जो बाहर काम करते हैं। जबकि दूसरी पत्नी मृतका अफरीना से पांच बच्चियां थीं। इनमें एक की शादी हो चुकी है। ग्रामीणों के अनुसार इट्टु साहको है। पांच बच्चियों में एक को पूर्व में यूपी में चलती ट्रेन से फेंक कर मार डाला था। इस मामले में वह जेल भी जा चुका है। कुछ हफ्ते पूर्व ही



वह जेल से छूटने के बाद घर आया था। दूसरी पत्नी मृतका अफरीना का मायका पश्चिम चंपारण जिले के जगदीशपुर का झखरा गांव में है। घटना के बाद अरेराज डीएसपी रंजन कुमार व कई थाना की पुलिस एफएसएल टीम व प्रदीप दस्ता के साथ मामले की छानबीन में जुटी हैं। ग्रामीणों के अनुसार गुरुवार की देर रात किसी बात को लेकर इट्टु और उसकी पत्नी के बीच विवाद हुआ था। जिसके बाद उसने सोते वक्त पत्नी और तीन बच्चों की गला काटकर हत्या कर दी और फिर मौके से फरार हो गया। एक साथ चार लोगों की हत्या से पूरे इलाके में सनसनी फैला हुआ है। पुलिस ने चारों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। डीएसपी रंजन कुमार ने बताया कि मामले की जांच के साथ ही आरोपी पति की तलाश में छापेमारी की जा रही है।

पूर्णिया में कांग्रेस और राजद की फ्रेंडली लड़ाई, पप्पू यादव 4 अप्रैल को कांग्रेस के सिंबल पर करेंगे अपना नामांकन



एजेंसी

पूर्णिया। पूर्व सांसद पप्पू यादव द्वारा अपनी पार्टी जाप का कांग्रेस में विलय करने के बाद से लगातार पूर्णिया संसदीय सीट पर कांग्रेस और राजद के खींचतान के बीच काफी माथा पच्ची होती रही। आज पूर्ण से पप्पू यादव ने प्रेस वार्ता कर स्पष्ट करते हुए घोषणा किया कि मैं चार अग्रलेख को कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन दाखिल करूंगा। मेरा सपना है कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनें और इसके लिए सीमांचल के सभी सीटों के लिए जी जान लगा दूंगा। पूर्णिया मेरी माटी है और पूर्णिया मेरा जीवन इसलिए पूर्णिया से जीत हासिल करके कांग्रेस के हाथ को मजबूत करूंगा। उन्होंने कहा कि लालू यादव मेरे पिता समान है तथा बीमा भारतीय मेरी बेटि का तरह है इसलिए उनके संबंध में मैं कुछ भी नहीं कहूंगा। मेरी इच्छा है कि बिहार की 40 की 40 सीट कांग्रेस की झोली में

जाए और राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनें। इस ऐलान के बाद पप्पू यादव के समर्थक पप्पू यादव जिंदाबाद और कांग्रेस जिंदाबाद का नारा लगा रहे थे। इस घोषणा से पप्पू यादव के समर्थकों में काफी खुशी है। इस घोषणा के बाद पूर्णिया सीट पर राजग गठबंधन के संतोष कुशवाहा तथा राजद से बीमा भारती एवं कांग्रेस से पप्पू यादव की लड़ाई पक्की हो गई है। अंदर खाने यह भी चर्चा की जा रही है कि उदय सिंह उर्फ पप्पू सिंह भी एक-दो दिन में कुछ घोषणा पूर्णिया संसदीय सीट को लेकर कर सकते हैं। इस घोषणा के बाद एनडीए गठबंधन के नेताओं ने कहा कि अब पूर्णिया में पप्पू को पप्पू जिताएंगे। पूर्णिया की जनता को अच्छे और बुरे की पहचान है। पूर्णिया की जनता नृत्य कर लिया है कि एनडीए गठबंधन के संतोष कुशवाहा को जीत हासिल करवा कर मोदी जी तथा नीतीश जी के हाथों को मजबूत करना है जिस देश का विकास और बिहार का विकास हो सके।

जमुई सीट पर राजग और महागठबंधन के नवोदित प्रत्याशी की होगी टक्कर

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 में जमुई (सु) संसदीय सीट पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और महागठबंधन के उम्मीदवारों के बीच चुनावी रणभूमि में टक्कर होगी। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में जमुई (सु) सीट पर राजग में शामिल लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के टिकट पर पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान के पुत्र चिराग पासवान पासवान ने राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (राजोसपा) उम्मीदवार और पूर्व सांसद भूदेव चौधरी को पराजित किया था। इस बार के चुनाव में राजग के घटक दल लोजपा-रामविलास से चिराग पासवान ने जमुई (सु) सीट से अपने जीजा अरुण भारतीय को उम्मीदवार बनाया है। चिराग पासवान ने हाजीपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है। अरुण भारतीय कांग्रेस की पूर्व मंत्री डॉ. ज्योति के पुत्र हैं। डॉक्टर ज्योति बिहार में कांग्रेस की कद्दावर नेता रही हैं। वह बिहार में विधायक, बिहार विधान परिषद् की सदस्य रहने के साथ ही बिहार सरकार में मंत्री रह चुकी हैं।

औरंगाबाद सीट पर सांसद से लोहा लेगा पूर्व विधायक

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 में बिहार के चितौड़गढ़ कहे जाने वाले औरंगाबाद संसदीय सीट पर महागठबंधन के उम्मीदवार और पूर्व विधायक अभय कुशवाहा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) उम्मीदवार और इस सीट पर चार बार जीते सांसद सुशील कुमार सिंह से लोहा लेते नजर आयेंगे। वर्ष 2019 के चुनाव में औरंगाबाद संसदीय सीट पर राजग में शामिल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार पूर्व सांसद स्व. राम नरेश सिंह के पुत्र सुशील कुमार सिंह ने महागठबंधन उम्मीदवार और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) प्रत्याशी उपेन्द्र प्रसाद को पराजित किया था। इससे पूर्व सुशील कुमार सिंह इस सीट पर वर्ष 1998 में समता पार्टी, वर्ष 2009 में जदयू और वर्ष 2014 में भाजपा के टिकट पर जीत हासिल कर चुके हैं। इस तरह सुशील कुमार सिंह औरंगाबाद सीट पर चार बार जीत दर्ज कर चुके हैं।

नवादा सीट से चंदन सिंह चुनवी रेस से बाहर, राजग और महागठबंधन प्रत्याशी पहली बार में आजमायेंगे किस्मत

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 में नवादा संसदीय सीट से जहां लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के सांसद चंदन सिंह चुनावी रेस से बाहर हो गये हैं वहीं राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और महागठबंधन के उम्मीदवार पहली बार इस सीट पर किस्मत आजमायेंगे। नवादा सीट से चंदन सिंह ने वर्ष 2019 के चुनाव में राजग के घटक दल लोजपा के टिकट पर जीत हासिल की थी। चंदन सिंह ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रत्याशी और पूर्व बाहुबली विधायक राजवल्लभ यादव की पत्नी विभा देवी को पराजित किया था। लोजपा में टूट के बाद चंदन सिंह अपने बड़े भाई सूरजभान सिंह के साथ पशुपति पारस के खेमे में शामिल हो गये थे।

रोबिन कश्यप बनें जिला टॉपर

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर पीताम्बर विश्वविद्यालय मेदिनीनगर द्वारा आयोजित स्नातक सेशन 2020-23 की फाइनल परीक्षा का रिजल्ट एनपीयू के ऑफिशियल वेबसाइट पर जारी कर दिया गया। जिसमें श्री सदगुरू जगजीत सिंह नामधारी महाविद्यालय गढ़वा के छात्र रांकी मुहल्ला निवासी गोपाल प्रसाद कश्यप के पुत्र रोबिन कश्यप ने पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। रोबिन पॉलिटेक्निक साइंस के विद्यार्थी हैं। रोबिन कश्यप ने 75.06 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे गढ़वा जिले में प्रथम स्थान प्राप्त और अपने महाविद्यालय तथा जिले को गौरवान्वित करने का कार्य किया। रोबिन शुरू से ही अपने महाविद्यालय में एक सक्रिय छात्र के रूप में पढ़ाई के साथ साथ अन्य क्षेत्रों में भी अपनी रुचि रखते थे। नामधारी महाविद्यालय में संचालित



रोबिन कश्यप।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई में वतीर स्वयंसेवकों अपने दायित्व का निर्वहन कर चुके हैं, जिसमें इन्हें सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक पुरस्कार से सम्मानित भी किया जा चुका है। अपने इस उपलब्धि पर रोबिन ने बताया कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। जैसे हम नदी में उतरे बिना कभी तैरना नहीं सीख सकते वैसे ही बिना संघर्ष और मेहनत किये कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। मेरे इस सफलता के पीछे मेरे शिक्षकों का अहम योगदान है। पत्रकारिता के क्षेत्र में जाना मेरे लिए प्राथमिकता रहा है और उसी को अपना लक्ष्य मान कर

छापामारी अभियान में बियर एवं अंग्रेजी शराब की बोटल जप्त, दो गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

मझिआंव। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर गुरुवार की देर शाम थाना प्रभारी आकाश कुमार ने शस्त्र बल के जवानों के साथ खरसोता गांव के दो अलग-अलग घरों में छापामारी कर 17 बोटल किंगफिशर बियर एवं 48 बोटल अंग्रेजी शराब जप्त किया। इस दौरान इस अवैध कारोबार में शामिल खरसोता गांव निवासी अभिजीत प्रसाद एवं जयशंकर प्रसाद को गिरफ्तार कर थाना लाया गया। शराब कारोबार में संलिप्त दोनों आरोपियों को शुक्रवार को उत्पद अग्रिनियम एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज दिया गया। इस संबंध में थाना प्रभारी आकाश कुमार ने बताया कि पुलिस



जानकारी देते थाना प्रभारी।

अधीक्षक के निर्देशानुसार गुप्त सूचना के आधार पर छापामारी की गई। जिसमें किंगफिशर बियर के अलावे सिगरेट, रॉयल स्टेग, लेंडर प्राइड, ओल्डमांक रम, इंपीरियल ब्लू, 8 पीएम सहित कई कंपनी के अंग्रेजी शराब जप्त किया गया है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार दोनों व्यक्तियों के घरों से कुल 65

बोटल विदेशी शराब जप्त किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी भी परिस्थिति में अवैधकारोबार करने वाले लोगों को बख्शा नहीं जायेगा। छापामारी अभियान में बीडीओ सतीश भगत, एसआई चंदन प्रधान एवं संजय मुंडा, मिथिलेश तिवारी व शस्त्र पुलिस बल के जवान शामिल थे।

हैकर्स का बढ़ता जा रहा है आतंक

पहले प्रशासनिक अधिकारियों का एकाउंट किया हैक, अब हैकर्स के निशाने पर पत्रकार

रामगढ़। इन दिनों हैकर्स ने आतंक मचा रखा है। पहले हैकर्स ने रामगढ़ डीसी चंदन कुमार सहित कई प्रशासनिक अधिकारियों के सोशल मीडिया एकाउंट हैक किया। हैकर्स द्वारा अब पत्रकारों को निशाना बनाया जा रहा है। इस संबंध में मिली जानकारी के मुताबिक रामगढ़ जिले के वरिष्ठ पत्रकार अमित कुमार सिन्हा का फेसबुक एकाउंट हैकरों द्वारा हैक कर लोगों से पैसों की डिमांड की जा रही है। साथ ही लोगों को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजे जा रहे हैं। अपना एकाउंट हैक होने पर वरिष्ठ पत्रकार अमित कुमार सिन्हा ने कहा कि यह एक गंभीर और चिंता जनक विषय है। उन्होंने कहा कि एक विशेष सेल का गठन कर हैकरों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई किए जाने कि जरूरत है तभी इस प्रकार की घटनाओं को रोका जा सकता है। साथ ही उन्होंने कहा है कि हैकरों द्वारा मेरे नाम से

वरिष्ठ पत्रकार अमित कुमार सिन्हा का फेसबुक एकाउंट किया हैक



बनाये गए फर्जी एकाउंट से कोई मैसेज या फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजा जाए तो उस आईडी को ब्लॉक करें और कोई भी रिप्लाई नहीं दें। संबंधित कार्रवाई के बाद फेसबुक द्वारा उक्त आईडी फेक को बंद किए जाने की सूचना है।

पेज एक का शेष

मुख्तार की मौत...

देर रात शव गाजीपुर पहुंचा। शनिवार सुबह काली बाग के कब्रिस्तान में सात गुणा तीन फीट की जमीन मिली है। उनको सुपुर्दे खाक किये जाने के समय उनकी पत्नी अफसा बेगम व पुत्र अब्बास अंसारी विधायक इस अवसर पर मौजूद रहेगे या नहीं इस पर अभी तक संशय है। जेल में बंद माफिया मुख्तार अंसारी की गुरुवार देर रात मेडिकल कॉलेज में मौत हो गयी थी। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। निधन की सूचना के बाद से ही उनके आवास और कब्रिस्तान में भारी संख्या में पुलिस बल तैनात है। मुख्तार अंसारी की मौत के बाद पूरे राज्य में पुलिस हाई अलर्ट पर है। मऊ, बांदा और गाजीपुर में धारा 144 लागू है। गाजीपुर में मुहम्मदबाद में मुख्तार अंसारी के घर के आगे बैरिकेटिंग कर दी गयी है।

कांग्रेस को मिला ...

पार्टी ने यह दावा भी किया कि लोकसभा चुनाव से पहले कर आतंकवाद' (टेक्स टेररिज्म) के जरिये विपक्ष पर हमला किया जा रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक्स पर पोस्ट किया, भाजपा द्वारा 42 करोड़ रुपये जमा करने के लिए 4,600 करोड़ रुपये के जुर्माने की अनदेखी की गयी, जबकि कांग्रेस के विधायकों और सांसदों द्वारा 14 लाख नकद जमा करने के लिए 135 करोड़ रुपये के जुर्माने की मांग की गयी। उन्होंने सवाल किया कि केवल विपक्ष के खिलाफ इस अनुचित तरीके कार्रवाई करने के लिए आयकर विभाग पर कौन दबाव डाल रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष ने दावा किया, मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को परेशान करने के लिए आयकर विभाग को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति क्यों दी जा रही है। लोकतंत्र को नष्ट करने और सौचवान को कमजोर करने के लिए आयकर विभाग, ईटी, सीबीआई जैसी संस्थाओं का दुरुपयोग कर रहे हैं। पार्टी के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने यहां पार्टी मुख्यालय में एक विशेष संवाददाता सम्मेलन में कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार सरकारी संस्थाओं का प्रयोग करके विपक्षी पार्टियों को लगातार कमजोर कर रही है। उन्होंने कहा कि आयकर की जिन धाराओं में कांग्रेस को नोटिस भेजे जा रहे हैं और मांग की जा रही है, , उन्हीं धारा में भाजपा पर 4620 करोड़ की मांग बनती है। इसकी वसूली के लिए बहुत जल्दी उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की जायेगी।

